अर्हम्

मुनिश्री मोहनलालजी जैन ग्रन्थमाला नं. ९

श्री सोमसूरीश्वरविरचित

पर्यन्त आराधना

तथा

नवपद आराधना विधि.

संशोधक,

जैनशिल्पज्योतिषविद्यामहोदधि श्रीमान्

जैनाचार्यश्रीजयसूरीश्वरजी के

शिष्य

प्रतापमुनि

प्रकाशक—श्री पदमसिंह बोहरा

मन्त्री मुनिश्री मोहनलालजी जैनग्रन्थमाला

इन्दौर सिटी (मालवा)

वीर सं २४५६

मूल्य आठ आना

प्रकाशक —श्री पद्मसिंह बोहरा
मन्त्री मुनिश्री मोहनलालजी जैनग्रन्थमाला
मु. इन्दोर सिटी (मालवा)

मुद्रक —लक्ष्मण भाऊराव कोकाटे, हनुमान प्रेस
३०० सदाशिव पेठ, पुना सिटी



विश्ववंद्य परमपूज्य प्रात स्मरणीय

मुनिमहाराज–श्री मोहनलालजी महाराज

चालायान प्रेस, पुणे

अर्हम्

प्रस्तावना.

आ ग्रन्थना मुख्य बे विभाग राखवामा आव्या छे, तेमा प्रथमविभागमां सोमसूरिविरचित पर्यन्त आराधना (अन्त समयनी आराधना) बीजा भागमा नवपद मण्डळ पूजनविधि (नवपद ओळीनी विधि) तेमा प्रथम ग्रन्थ मूळ प्राकृत भाषामा टब्बासहित नी एक हस्त लेखित प्रत न १ जैनशिल्पज्योतिर्विद्यामहोदधि श्रीमान् जैनाचार्य श्री जैनसूरीश्वरनी महाराज श्री ना पासे जोवामा आवी, अने ते लोकोपयोगी होवा थी गुजराती भाषामा शुद्ध संशोधन करी छपाववामा आवी, तेना दशद्वार तथा बावीश अभक्ष्य बत्रिश अनंत काय प्राकृत भाषामा ज छे तेनु यथार्थ संशोधन करवामा आव्यु छे, ते वाचको समक्ष रजुकरवामा आवे छे

संसार सागररूपी महान् भयंकर आटवीमा अथडाता प्राणिओने आ ग्रन्थ पोताना जिंदगीना छेडा सुधि शांति पमाडे तेना उद्देशथी लखि जैन प्राकृत साहित्यमा मोटो प्रचार कर्यो छे वाचको ? जरूर ग्रन्थनु अध्ययन कर्या पछे पोते पोतानी जिंदगीमा करेल पापने हवे पछी पाप नहीं करवानी प्रतिज्ञा अभिग्रह करे छे ग्रन्थना अध्ययन पछे वाचकोने अवश्य ध्यानमा आवशे हू कोण ? मारू शु कर्तव्य ? मारो धर्म क्यो ? मारे शु करवानु शु करू छू इत्यादिक विचारो जरूर तेना आत्मामा स्फुरि आवशे जेथी मळ्यामा थोपोताना समस्त जीवननो सुधारो करी शके तेवा हेतुथी सूरीश्वरे टखेल छे

ध्यानमा राखवु पर्यन्त आराधना–अन्ति आराधना समाधि मरण कोनु थै शके तथा पोतानु समाधि मरण केम–थाय तेना माटे केवोकेवो प्रयत्न करवो ते आ ग्रन्थमाथी जे शाखवानु मळी आवे छे

अढार पापस्थानकनो त्याग, अरिहंतादिक चार शरण नु ग्रहण, आठ अतिचारनी आलोचना, जिन प्रतिमापूजन विधिमां आशातना, पंचेंद्रिय जीवोनो नाश, देवता मनुष्य तिर्यचादि साथे भोगविलास, नवविध परिग्रहना उपरे ममत्व भाव, रात्रि भोजन, बाह्य अभ्यंतर तप, धर्मगुरु, समकितधारीओनी साथे वैरभाव थयेल होय ते, चारित्र अतिचार शुद्ध विचारनी आलोचना, आठ मदनी महत्ता, विशेषमां लागेल पापनी आलोचना, आत्मसाक्षी–गुरुसाक्षी ए रीते प्रकार भावना करे छे तथा अन्तिमसमयमां अरिहंतादिक पंचपरमेष्ठि तथा चार शरणनु ग्रहण करतां पोते पोताना पापवृत्ति थी पाछा हठवा प्रयत्न करे छे – आवी रीते आ ग्रन्थमां अनेक विषयो ना समावेश करवामां आवेल छे – अन्तसमय ना पोताना समस्त जीवनने आराधक बने आ पवित्र आराधना मात्र अन्त समयेज आराधवानु छे एम नहीं परंतु रोज आनु स्मरण करवाथी पोताना भविष्य समयने सुधारी शके छे तथा रोज पापनो पश्चात्ताप करवाथी ते पोताना कर्मोनो नाश करे छे माटे भव्यात्मा ओ निरंतर आनु आराधन करवाथी पोते शुभ गति ने प्राप्त थाय छे

आ ग्रन्थमां बीजो विभाग नवपद ओळीनी विधि ने लगती सम्पूर्ण क्रिया बतावेल छे जो के नवपद ओळीनी विधिना पुस्तको घणी सस्थाओ तरफथी प्रकाशित थयेल छे परंतु आ ग्रन्थमां खास विशेषता नजरे पडशे नवपदनु ध्यान करनार विधिपूर्वक जो क्रिया करे तो ते पण श्रीपाल महाराजना माफक महान भयंकर रोगोनो नाश करावे छेवट रायऋद्धि जेवी सिद्धि पण प्राप्त करी शके छे आजकाल पण तद्रुप विधिपूर्वक शुद्ध मुग्ध क्रिया करनार वांछित सुखने प्राप्त करेल दृष्टिगोचर थाय छे आज काल नवपदनु आराधन करवु नकामे सदंतर थयु छे कारण शास्त्रकारो ए कहेल विधि प्रमाणे विधि अनुक्रमथी थती नथी तेथी फल प्राप्ति मार्गमां बरोबर देखातो नथी प्रथम विधिपूर्वक आराधकोए

आयंबिल केम करवु ? कारणके आयंबिलमा घणाज प्रकारे मोटो फायदो थाय छे आ नवपद आयंबिलमा लोको फक्त विगयादिकनो त्याग करी इन्द्रिय दमे छे, तेम मनुं न दमाय परंतु आत्मिक लाभ नथी कारणके आ दिवसमा तो नवपद आराधक भव्यात्माओ पोताना हृदयने अन्त पौंचाडवा नवपदनो जे जे अर्थ रस होय ते प्रमाणे ते विरस फक्त थानुं आचार करवु उचित छे परंतु आचिनी ओछी आ प्रमाणे न थावी होवाथी लोकोने यथार्थ लाभ जे प्रमाणे मळवो जोईए तेवो मळतो नथी तथा आ तपनी सम्पूर्ण क्रिया गुरु समुख थती नथी माटे ते लाभ सम्पूर्ण मळी शकतो नथी

वीसमा तीर्थंकर मुनिसुव्रत भगवान ना समयमा थयेला मुनि मुख्य सूरीश्वरनाए श्रीपाल महाराजने नवमा पूर्वमांथी उद्धार करेल सिद्धचक्र नवपद यन्त्रना आराधन विधि बताव्या अने ते यन्त्रनी समुख श्रीपाल महाराजनाए क्रिया करी जेथी तेमना मनोरथमना पूर्ण थया तथा सारे मा.. देशविदेशमा विजयने प्राप्त कर्या —

आज नवपदना आराधकोए आ सिद्धचक्र यन्त्रने समुख राखी क्रिया करवी जेथी अवश्य तेमनी अभिलाषा पूर्ण थाशे तथा यन्त्रनी पूजाविधि आवाहन, विसर्जन, पूजन विधि समस्तनो समावेश आमा करवामा आवेल छे भोगसामग्री निवृत्तिनो नाश करनार आजनाल सिद्धचक्र नवपद यन्त्रनी बगैर कोइ वस्तु नथी माटे हमेशा आ यन्त्रनु आराधन करनार पोतपोताना सुखमय जीवन निर्वाहमा विघ्न नहीं उपस्थित थाय माटे भव्यात्माओ ए नवपदनु ध्यान निरन्तर करता रहेवु इति।

वीर २४५६
जेष्ट शु० ५
जुनेर

प्रतापमुनि.

---

१ आ सिद्धचक्र नवपद यन्त्र आ संस्था तरफथी थोडाज दिवसमा छापी तैयार भरपूर थने बहार पड्यो माटे जोइए तेओ लाभ लेवा चूकवुं नहि

अर्हम्

श्रीमज्जैनाचार्य श्रीजयसूरिगुरुभ्योनमः

श्रीसोमसूरिविरचित

पर्यन्त-आराधना



नमिउण भणइ एव भयवं समओचिअ समाइसह ।
ततो वागरइ गुरू पज्जंता-राहणा एव ॥ १ ॥

त्रण लोकना अधिपति परमात्मने नमस्कार करीने समयोचित तत् काल पर्यन्त आराधना गुरुमहाराजे जे प्रमाणे कहेल छे ते प्रमाणे कहुं छुं ॥ १ ॥

आलोइअ सुइयारो पायाइआरे सुहम सुहमेसु ।
वोसिरिसु भावि अप्पा अठारसपावठाणाइ ॥ २ ॥

लिधेला मनोमां लागेल पापनी आलोचना-करी स्थूल सूक्ष्म जीवोने हणवाथी तथा अढार पापस्थानको प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशून्य, रति, अरति, मायामृषावाद व मिथ्यात्व लागेल पापने वोसिराउं छुं ॥ २ ॥

चउसरण दुक्कडगरहणं च सुकडाणुमोअणं कुणसु ।
सुहभावण अणसण पंचनमुक्कारसरण ॥ ३ ॥

चार सरणा, अरिहंत सरण, सिद्धसरण, साधुसरण, केवलि भगवाने कहेल धर्म सरण, आ लोगए पापनी निंदा कर, तथा सुकृत सारा कामनी अनुमोदन करूं, शुभभावना अणसण, तथा पंच परमेष्ठिने नमस्कार पूर्वक सरणुं लउं छुं ॥ ३ ॥

नाणम्मि दंसणम्मिअ चरणम्मि तवम्मि तहय विरियम्मि ।
पंचविहे आयारे अइयारो लागा हुन्तु ॥ ४ ॥

ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार वियाचार, आ पा
प्रकारना आचारने विषे जे कोइ पाप लाग्यु होय तेनी हु आलोचन
करु छु मिच्छामि दुक्कड दउ छु ॥ ४ ॥

काले विणयाइ अट्ठपयारे आयारविरहिय नाण ॥
ज किंचि मए पढिअ मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥ ५ ॥

कालविनयादिक आठ प्रकार जेम काल समयमा ज्ञान भण्य
गण्यो तथा तेनी परावर्तना करी नहीं, तथा काल समयने छोडी
अकाल समयमा भण्यो, विनयथी रहित, बहुमानथी रहित, योग
पधानथी रहित, तथा जेनी पासे भण्यो होय ते गुरुनु नाम लोपी
बीजा गुरुनु नाम कह्यु, देववन्दन, गुरुवन्दन, पडिक्कमण, त
स्वाध्याय करता, भणता, गणता कुड अक्षर कानो मात्र आग
पाछल ओछा वधारे कह्यो भण्यो-तथा गण्या, सूत्र अथ तेन
कुडा कह्या ते सबन्धि तथा आचारथी रहित नान-मति ज्ञान श्रु
ज्ञान अवधि ज्ञान, मनपर्यवज्ञान केवलज्ञान ए पाच प्रकारना ज्ञान
मे जे काइ कर्यु होय विराधन होय तो हु मिच्छामि दुक
दउ छु ॥ ५ ॥

नाणीण ज नदिअ सद्दसामत्थ मिवत्थ असणाइ ।
आविहि अय अन्नया मिच्छामि दुक्कड तस्स ॥ ६ ॥

छती शक्तिए ज्ञानी पुरुषोने वस्त्र अन्न आदि नदीधा तथा न
आज्ञानना अवज्ञा-करी होय तो हु मिच्छामि दुक्कड दउ छु ॥ ६ ॥

ज पचभेय नाणस्स निंदण ज इमस्स उवहासो ।
जोयव ओ ऽथयाउ मिच्छामि दुक्कड तस्स ॥ ७ ॥

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनपर्यवज्ञान अने केवलज्ञान,
पाच प्रकारना ज्ञाननी निंदा करी होय तथा तेनी हासी कीधि हो
तना नादार्यो होय तो हु मिच्छामि दुक्कड दउ छु ॥ ७ ॥

नाणो पगरण भूयाण कवालियाफलय पुत्थपाईण ।
आसायण कयाज मिच्छामि दुक्कड तस्स ॥ ८ ॥

स्रापडा, सापडी दफतर, वही, कागलिया आकणी, पुस्तक आदि नी जे काइ आशातना करी होय ते मिच्छामि दुक्कड दउ छु ॥ ८ ॥

जं सम्मत निस्संकियाइ अठविह गुणसमाउत्त ।
धरियं मए न सम्मं मिच्छामिदुक्कड तस्स ॥ ९ ॥

जे आठ प्रकारना सम्यक्त्वने निदोषपणे नधायाँ होय ते हु मिच्छामि दुक्कड दउ छु ॥ ९ ॥

जं न जाणिआ जिणाण जिणपडिमाण च भावपूआ ।
जं च असत्तिए विहिया मिच्छामि दुक्कड तस्स ॥ १० ॥

जिनेश्वर भगवाननी तथा जिनप्रतिमानी भावपूजा न करी होय, तथा तेमा अशक्ति धणी होय, तो हु मिच्छामि दुक्कड दउ छु ॥ १० ॥

जं विणासो जिणाणो चेइ अदव्वस्स जं जिणागमनो ।
अकोउ उवेक्खिअोम मिच्छामि दुक्कड तस्स ॥ ११ ॥

चैत्य द्रव्यना-तथा तेनी पूजानो विनाश किधो होय, तथा तेमा उपेक्षा बुद्धि धारण करी होय ते हु मिच्छामि दुक्कड दउ छु ॥ ११ ॥

आसायण कुण ता जं कहवि जिणिंद मंदिराइसु ।
सत्तिए न निसिद्धो मिच्छामि दुक्कड तस्स ॥ १२ ॥

जे कोइ पण जिनेश्वर भगवानना मन्दिरनी आशातनाने करता होय तथा तेने आपणी छति शक्तिए निषेध न कर्यो होय तो हु मिच्छामि दुक्कड दउ छु ॥ १२ ॥

जं पचहि समी यहि तिहि गुतिहि समय सयय ।
परिपालिय न चरण मिच्छामि दुक्कड तस्स ॥ १३ ॥

जे पांचसमिती-इर्या समिति भाषासमिति एषणासमिति आदानभंडमत्तनिक्षेपणासमिति, उच्चारपासवणखेलजल्लसिंधाणपारिष्ठापनिका समिति, तथा त्रणगुप्ति; मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति, सहित निरन्तर चारित्र बराबर पाल्यु नहोय ते हु मिच्छामि दुक्कड दउ छु ॥१४॥

पंचिन्दियाण जं रहवि पुढवि जलजलण मारुअ वनरूण ।
नियाण वहो विहिओ मिच्छामि दुक्कड तस्स ॥ १४ ॥

जे काइ एकेन्द्रियादिक जीव, पृथ्वी काय अप् काय, तेउ काय, वायुकाय वनस्पति कायनो वध-नाश कर्यो होय ते हुं मिच्छामि दुक्कड दउं छुं

किमिसंखजलोअ गंडोलयाल सप्पमुहा ।
बे इंद्रियाइ हयाज मिच्छामि दुक्कड तस्स ॥ १५ ॥

कीडा, संख, छीप, पुरा, जलो, गंडोला अलसिया प्रमुख, बे इंद्रिय जीवोने जेहणया होय-चाल्या होय ते हु मिच्छामि दुक्कड दउं छु ॥ १५ ॥

गद्दह कुंथु जुआ मकुण मकोडकीडिया ईया ।
ते इंदियइ हयाज मिच्छामि दुक्कड तस्स ॥ १६ ॥

गदैया कुंथुआ, माकड, मकोडा, कीडाआदि तेंद्रिय जीवोने हण्या होय ते हु मिच्छामि दुक्कड दउं छु ॥ १६ ॥

कोलि अकुंत्ति अनिच्छु मच्छिआ मसलहं छप्पय पमुहा ।
च उरिंदियाइ हयाज मिच्छामि दुक्कड तस्स ॥ १७ ॥

करोलियां, कुंति, कन्सारी, विंछु, माखी, तीड, भमरा, प्रमुख चौरेंद्रिय जीवोने जेहण्या होय ते हु मिच्छामि दुक्कड दउं छु ॥ १७॥

जलयर थलयर खयरा आउंईपमायदप्पकप्पसु ।
पचेंदियाइ हयाज मिच्छामि दुक्कड तस्स ॥ १८ ॥

जलचर, थलचर, खेचर, जीवोने, प्रमादथी दर्पथी पचेंद्रिय जीवोने हण्याहोय ते हु मिच्छामि दुक्कड दउं छु ॥ १८ ॥

ज कोहलोह भयहास परवसेण मए विमूढेण ।
भासि अमसच्चवयण त निंदे तच गरिहामि ॥ १९ ॥

जे क्रोध, लोभ, भय, हास्य, थी तथा अज्ञानताथी, असत्य वचन बोल्या होयते हु निंदु गहुं छु ॥ १९ ॥

जे पयड धावडेण मए परच विउणओवचिय ।
गहि अधण अदिन्न त निंदे तच गरिहामि ॥ २० ॥

जे कपटव्यापरथी, मे थोडूपण दिधेलु धन नदिधु होयते हु निंदु छु गहुं छुं ॥ २० ॥

दिव्व वा माणुस्सं वा तिरिज्जिया सरागहियएणं ।
जं मेहुणं मायरियं तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २१ ॥

देवता मनुष्य तिर्यंचनो रागथी भोग कर्यो होय मैथुनसेव्युं होय तेने हुं निंदु छुं तथा गर्हुं छुं ॥ २१ ॥

जं धण्ण धन्न सुवण्ण प्पमुहम्मि परिग्गहेवि नव विहेवि ।
विहिया सम्मत भावा तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २२ ॥

जे धनधान्य सोनुं, रुपुं प्रमुख नवविध परिग्रह, न निरो ममत्वभाव किधो होय ते हुं मिच्छामि दुक्कडं दउं छुं ॥ २२ ॥

जं राइभोयण विरमणाइ नियमेसु विविह भेयेसु ।
जाम्मि समइक्कंते जाय तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २३ ॥

जे रात्री भोजन विरमण व्रत, नियमेविषे विविध–अनेक प्रकारना जे काइ दोष लाग्या होय ते हुं निंदाकरु छुं तथा गर्हाकरुं छुं

बाहिरमब्भितरय तव दुवालस विह जिणुद्दिट्ठं ।
जं सत्तिए न कयं तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २४ ॥

छ बाह्य, छ अभ्यंतर, तप बारभेदे जे जिनेश्वर भगवाने कहेल छे ते छति शक्तिए न कर्युं–ना तेनी हुं निंदा करु छुं तथा गर्हुं छुं॥२४॥

जोगेसु मुक्ख पहसाहगेसु जं वीरियं न य पउत्तं
मणवाया कायएहिं तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २५ ॥

मोक्षमार्ग साधवाना माटे पोतानी छति शक्तिए मन वचन काया थी उपयोग न कर्या होय तो तेनी हुं निंदाकरु छुं गर्हुं छुं ॥

प्रथम द्वार समाप्त

अथ बीजुं द्वार

पाणाइवाय विरमण पमुहासु मेंदुवाउ सययाइं ।
सम्मं परि भावयंतो भणमं जहा गहिय भंगाइं ॥ २६ ॥

प्राणातिपात विरमण व्रत, स्थूलथी स्थूलमृषावाद, स्थूल अदत्तादान, स्थुल मैथुन, स्थुल परिग्रह, दिग्व्रत, भोगोपभोग व्रत, अनर्थ दण्डव्रत, सामायकव्रत, देशावगाशिकव्रत, पोषधव्रत,

अतिथि संविभागव्रत प्रमुख बारव्रतनी सम्यक् प्रकारे भावना भावता मे जे काइ व्रत भाग्या होय ते संबंधी हु मिच्छामि दुक्कड दउ छु

बीजु द्वार समाप्त

अथ त्रीजु द्वार

खामेमि सव्वसत्ते खमेमि तेसिं पि गय कोवो।
परिहरिय पुव्ववेरो सव्वे मित्ति त्ति चिंतेसु ॥ २७ ॥

समस्त प्राणियोनी साथे मैत्रि भावने करता-विचारतो समस्त जीवो ने खमावुछु तथा वैरभावनो त्याग करी क्रोधरहित थउ छु,

त्रिजु द्वार समाप्त ॥

अथ चोथु द्वार

पाणाइवायमलियं चोरिक्कं मेहुणं दविणमुच्छं ।
कोहं माणं मायं लोहं पिज्जं तहा दोसं ॥ २८ ॥
कलहं अब्भक्खाणं पेसुन्नं रइ अरइ समाउत्तं
परपरिवायं मायामोसं मिच्छत्तसल्लं च ॥ २९ ॥
वोसिरसु इमाइं मुक्खमग्ग संसग्ग विग्घभूयाइं ।
दुग्गइ निबंधणाइं अट्ठारस पावठाणाइं ॥ ३० ॥

प्राणातिपात मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह तथा तनी मूर्छा क्रोध मान, माया, लोभ, राग, द्वेष कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य रति अरति, परपरिवाद माया मृषावाद, मिथ्यात्व शल्य, आ बधा मोक्षमार्गना विषे विघ्न करनारा होवाथी, तथा आ अढार पापस्थानक दुर्गतिना मार्गने पोंचाडनार होवाथी तने हु वोसिरावु छु ॥ २८-२९-३०

चोथु द्वार समाप्त ।

अथ पाचमु द्वार

चउतीस अइसय जुआ अठमहापाडिहेर कयसोहा ।
तित्थयरा गयमोहा झाएअव्वा पयत्तेण ॥ ३१ ॥

चौत्रिस अतिशय वड युक्त तथा अष्टमहाप्रातिहार्यथी शोभायमान रागद्वेषथी रहित एवा तीर्थंकरनु यत्नपूर्वक ध्यान करवु ॥ ३१ ॥

चउतीस अइसयजुआ अठमहापाडिहेरपडि पुन्ना ।
सुरविहिय समवसरणा अरिहंता त मुज्झ सरण ॥ ३२ ॥

चोत्रीस अतिशयथी युक्त, अष्टमहा प्रातिहार्यथी शोभायमान, देवता नु रचेल समवसरणमा बिराजेला एवा अरिहंत भगवानु सरण हो ॥ ३२ ॥

चउविहकसाय चत्ता चउवयणा चउप्पयार धम्मकहा
चउगइदुहनिद्दलणा अरिहंता मुज्झते सरण ॥ ३३ ॥

क्रोध मान, माया, लोभ, ए चारकषायनो त्याग करनार, चार, मुखे चार प्रकारना दान, शील, तप भावना, धर्म ने कहनारा तथा देव, मनुष्य तिर्यच नरक ए चार गतिनो नाशकरनारा एवा अरिहंत भगवाननु सरण हो ॥ ३३ ॥

जे अट्ठकम्म मुक्का वर केवल नाणमुणि अपरमथ्था ।
अठमय ठाण रहिया अरिहंता मुज्झते सरण ॥ ३४ ॥

ज आठ कर्मनो त्याग थी श्रेष्ठ केवल ज्ञानवाला तथा आठ मदनो त्याग करनार एवा अरिहंतनु सरण हो ॥ ३४ ॥

भवखित्ते अरुहंता भावारिप्पहणणेण अरिहंता ।
जे तिजग पूआणिज्जा अरिहंता मुज्झते सरण ॥ ३५ ॥

ससाररूपी क्षेत्रमा अंकुरोत्पत्तिरना (ससारमा आवागमन निवारक) तथा अतरग शत्रु ओने नाशकरनारा त्रण जगतना पूजनिक अरिहंत भगवाननु सरण हो ।

तरिउण भवसमुद्द रउद्ददुहलहरि लक्ख दुल्लंघं ।
जे सिद्धि सुह पत्ता सिद्धा हु तुमे सरण ॥ ३६ ॥

ससाररूपी समुद्रने तरनार, भयकर दुख रुपी लाखो

एकेन्द्रियादि भोक्षे दीन-जे सिद्धि गतिने पाम्या एवा सिद्ध भगवाननु सरण हो ॥ ३६ ॥

जे भांजि उण नय मुग्गरेण निघडाई कम्मनिगमार्ह ।
तपसा मुक्खसुहं ते सिद्धा हुं तुमे सरण ॥ ३७ ॥

जे तपरूपी मुद्गरवडे करी कठिण कर्म जो नाशकरी, मोक्षसुखने पामेला एवा सिद्ध भगवाननु सरण हो ॥ ३७ ॥

झाणानलजोगेणं जाओ निद्दड्ढ सयल कम्म मलो ।
कणगंवजाण अप्पा ते सिद्धा हुं तुमे सरणं ॥ ३८ ॥

ध्यानरूपी तापथी समस्त कर्म मलना नाशकरी कनक सुवर्ण ना जे पो आत्मा कर्यो छे जेणे एवा सिद्ध भगवाननु सरण हो ॥ ३८ ॥

जाण न जम्मो न जरा न वाहिणा न मरण नयावाह ।
नय कोहाइकसाया ते सिद्धा हुं तुमे सरण ॥ ३९ ॥

जेने जन्म नही, वृद्धावस्था नही, व्याधि नही मरण नही कोई प्रकारनी बाधा नही, तथा क्रोध मान माया अने लोभ, ए चार कषाय नही एवा सिद्ध भगवाननु सरण हो ॥ ३९ ॥

काउं मद्दुरवीति ते बायालीसं दोसपरिसुद्धं ।
भुजंति भत्तपाण ते मुणिणो हु तुमे सरणं ॥ ४० ॥

भमरानी माफक वृति ने करता, बेतालीस दोषथी रहित शुद्ध आहार पाणीनी गवेषणा करता, एवा मुनि महाराज नु सरण हो ॥ ३९ ॥

पचंदि अदमणपरा निज्जिअ कंदप्प सरपसरा ।
धरंति बंभचेरं ते मुणिणो हु तुमे सरण ॥ ४० ॥

पाचे इंद्रियोनु दमन करनार, तथा कामदेवरूपी बाणने जितनार, तथा ब्रह्मचर्य व्रतने धारण करनार एवा मुनिमहाराजनुं सरण हो ४०

जे पच समिइ समिआ पचमहव्वय भर दुव्वहा ।
पचमगइ अणुरत्ता ते मुणिणो हु तु मे सरण ॥ ४१ ॥

जे ईर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति, आदाणभंडमत्तनिक्खे पणासमिति, उच्चारपासवणजल्लसिंघाणपारिठावणियासमिति, आ

पाच समितिथी युक्त, तथा प्राणातिपात मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, ए पाच महाव्रतरूपी धूपम समान, अने सिद्धमोक्ष गतिमा जावा तत्पर एवा मुनिमहाराजनुं सरण हो ॥ ४१ ॥

जे चत्तमयरसेधा ममतिण मणिमित्त सतुणो धीरा ।
साहंति मुक्ख मग्गं ते मुणिणो हुं तुमे सरण ॥ ४२ ॥

समस्त संसारना त्याग करनार तृण (घास) मणि मित्र शत्रु ने सम समजनार, तथा मोक्षमार्गने साधनार एवा मुनिराजनु सरणु हो ॥ ४२ ॥

जो केवल नाण दीवायरेहि तित्थकरेहि पन्नतो ।
सव्वजग जीयहिय ओ सो धम्मा होउ मे सरण ॥ ४३ ॥

समस्त जगतना जीवने हित करनार तिर्थंकर भगवाने कहल जे केवल ज्ञानरूपी धर्म तेनु मने सरण हो ॥ ४३ ॥

कल्याण कोडी जणणी जत्थ अणत्थप्प बंधनिद्दलणी ।
वन्नीज्जयी निघद्या सो धम्मो होउ म सरण ॥ ४४ ॥

कल्याण कोटीनी माता अहिंसा तथा अनथ बंधनना नाश करनार अने जीवदयानु मूळ जे अहिंसा ते धर्म मारे सरण हो ॥ ४४ ॥

जे पावभरकंत जीवभीममिम कुगइ कुवमिम ।
धारेइ निवडमाण सो धम्मे होउमे सरण ॥ ४५ ॥

जे पापरूपी भारथी आक्रांत-दबा येल एवा भयंकर कुगतिरूप कुवामा पडता प्राणि ओने बचावकरनार धर्मनु सरण हो ॥ ४ ॥

सग्गापवग्ग पुरमग्गाम्म लोयाण सत्थवाहो जो ।
भव अडवि लघण समत्थो सो धम्मो होउ स्वरण ॥ ४६ ॥

स्वर्ग तथा मोक्षमार्गने विषे तत्पर, तथा लोकमां सार्थवाह समान, जे संसाररूपी अटवी-उल्लंघवामा समर्थ- एवाधर्मनु मने स्वरण हो ॥ ४६ ॥

पाचमु द्वार

अथ छठु द्वार

पयचउण्ह सरण पयओ निविश्वविताभर चारगाओ।
ज दुक्कट त्तिम्मि समयामोमि निन्दामि त नाएग्गे अह तमिण्ह ४८
चार सरणा लेता, संसारमा भमता अरिहन्त-प्रभूनी जे काइ निंदा करी होय ते पापने हमणा हु निंदु छुं-मिच्छामि दुक्कड आपु छु
जं इत्थ मिच्छत्त विमोहिएण मयेभय तेण कुतित्थ।
मणेणवाएकायेण निंदामि त पमपि अह्त मिण्ह ॥ ४९ ॥
जे काइ मिथ्या जुठा माह थी, संसारमा कुतिर्थि अो अन्य लोकोनी साथे मोह कर्यो होय, ते मन वचन कायाए करी हमणा नदु निंदु छू ० ॥
पच्छाइ ओ ज जिणधम्ममग्गो मए कुमग्गा पयडीए आ ज।
अजो अहं जपरपावहेऊ निंदामि त पमपि अह तमिण्ह ॥ ० ॥
जिनेश्वर भगवाननां मार्गने ढांक्यो होय-निंद्यो होय, तथा कुमार्ग बताव्या होय पाप हेतु तूथी बताव्या होय ते सर्वनी हमणा निंदा करू छु ॥ ० ॥
अताणि जं जं कुरुहावहाणि हत उरलामय यंत्राणि।
ज पोसिय पावकडयय च निंदामि त वोसिम अहं तमिण्ह॥ ॥
यन्त्र कमठी प्राणियाने-दु ख दिधु होय तथा हल, उगलधी मैं पापकर्म कर्या होय तथा पापकर्मथी कुटुम्ब पोषण-रक्षा करी होय, ते सर्वनी हमणा हु निंदा करु छु ॥ ॥

छठु द्वार समाप्त ।

अथ सातमु द्वार

जिणबिंब भवण पुत्थय संघस्सरूवाइसत्तखित्ते ।
जं वविय धणबिअ तमह अणुलायसुस्य ॥ ५२ ॥

जिन मन्दिर, जिनेश्वर भगवाननी प्रतिमा पुस्तक साधुसाध्वी श्रावक श्राविका चतुर्विधसंघ रूप ए सात क्षेत्रमें विषे ज धन-लक्ष्मी रूपी धाज वायु होय- अर्थात् आ साते क्षेत्रमा पोतानु

द्रव्य ज खच्यु होय ते सुकृत पुन्यन हुं अनुमोदना करुं छुं-प्रशंसा करुं छुं ॥ ५२ ॥

जं सुद्ध नाण दसण चरणाइ भवण्णवप्पर हाणाइ ।
मम्म मणु यार्गे आइ तमहं अणु मोया सुकय ॥ ' ३ ॥

जे शुद्ध ज्ञान दर्शन चरित्र समारूपी समुद्रमा जहाज समान पाम्या होय तेना सुकृत पुन्यनी हुं अनुमोदन करुं छुं ॥ ५३ ॥

जिण सिद्धसूरि उवज्झाय साहुसाहम्मियप्पवयणसु ।
ज निहि यो बहुमाणा तमहं अणुमोयए सुकय ॥ ४ ॥

जिन सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु, स्वधर्मि, प्रवचन, आगमन ने विषे ज बहुमान विधु होय तनी हुं अनुमोदना करुं छुं ॥ ' ४ ॥

सामान्य यउविसत्थयाइ आवस्सयम्मि छमेएण ।
ज उज्जमिअ मन्न तमहं अणु मोयाए सुकय ॥ ' ॥

सामायक, चोविसत्था- वन्दना, पडिक्कमण काउसग्ग, पच्चखाण ए आवश्यकना छ भेदे न हुं अनुमोदुं छुं ॥ ॥

द्वार सातमु समाप्त ।

अथ द्वार आठमुं

पुन्नयपुन्नपायाणि सुख्खदुख्खाणकारण लोए ।
नय अन्नोकोवि नणो इयमुणिउ कुणसु सुहभावं ॥ ' ॥

आ संसारमा सुखदुख आपनार पूर्व भवना पुन्यपाप सिवाय कोइ पण आपी शकतु नथी माटे आम समजीने शुभ भावना भावो ॥ ५६ ॥

पुव्विंदुच्चिन्नाण कम्माण ब्वइयाण ज मुक्खो ।
पूणो अवइयाण इय मुणिउ कुणसु सुहभावं ॥ ' ७ ॥

पहिला करेला उग्र कर्मो ते भोगव्या विना छुटको नथी, माटे तेम समजीने- शुभ भावना भावो ॥ ५७ ॥

जं तु मए नर नारएण दुक्खति निसिव अतिक्खं ।
तत्ता कित्तियमित्त इयमुणिउ कुणसु सुह भावं ॥ ' ८ ॥

जेमे नरकमा नारकिना नहि सहन करवा योग्य बहुसह्या ते

अपेक्षाए आदु त थोड़ाज छे माटे आम समजीने सुभ भावना भावो ॥ ' ८ ॥

जेण विणा चारित्त सुयंत धदाण सीलमविसव्य ।
फास कुसुम विडल इय मुणिउं कुणसु सुहमायं ॥ ५९ ॥

भाव वगर चारित्र ज्ञान, तप, दान, शीयल-ब्रह्मचर्य, आचयु होय तो आकाशमां जेवीरीतेफुल होय ते समजयु अर्थात् आकाशमां फुल न सम्भवतेवे तेम आचयु भाव वगर निष्फल जाणवु आम समजीने शुभ भावना भावो ॥ ' ९ ॥

इति द्वार आठमु समाप्त

अथ नवमु द्वार

जैघुलिउण बहुहा सुरसेल समूह पञ्जण हिंतो ।
तित्तिय तए न पत्ता तथय सुत्रउन्यिहारं ॥ ६० ॥

मरुपवतना जेटलु भोजन कर्यु तोपण आजीवने तृप्ति न थइ तप चतुर्विध आहारनो त्यागपण न कर्यो आम समजीने चार प्रकारना आहारनो त्याग करवो ॥ ६० ॥

जा सुल्हो जीवाणं सुरनरतिरिनारहाणं च उक्कवि ।
मुणि उ दुल्हं विरइय त चय सुत्रउविहार ॥ ६१ ॥

देव, मनुष्य, तिर्यंच नारकि, आचार सतिमां जीवने आहार सुलभ छे तेम जाणवु, तथा दुल्भ विरतिने समजीने पण चार प्रकारना आहारनो त्याग करवो ॥ ६१ ॥

छज्जीवनिकायवह अकयाये कहवि जाने समयइ ।
भय समण दुहाहार त चय सुत्रउन्यिहाहार ॥ ६२ ॥

पृथ्वी काय, अप् काय तेऊ काय, वायु काय, वनस्पति काय,त्रस काय, एछ जीवनी कायनो हिंसारूपीज आहार जे नरकना योग्य आहार भवभ्रमणादुःखरूपी चार प्रकारना आहारनो त्याग करवो॥६२॥

चत्तोम जाजेम आपण हाइक्कयल गय मुरिदस ।
सिद्धि सुहंपिहु सुल्ह तें चय सुत्रउन्यिहार ॥ ६३ ॥

हाथमा प्राप्तथयु छे इन्द्रपणुजणे पशाजीवो ए आहारनो त्याग करी, सुलभ सिद्धि सुखने प्राप्तकरयावाला ओए चार प्रकारना आहारनो त्याग करयो ॥ ६३ ॥

द्वार नवमु समाप्त

अथ द्वार दशमुं।

नाण विह पावपरायणेवि ज पाविऊण मरणाते।
जीयो लहइ सुरत्त त सरहुमणे नमुक्कारं ॥ ६४ ॥

नाना प्रकारना पाप करयामा तत्पर, एवा प्राणिओ ए अन्तमा नवकार मन्त्रनु स्मरण करता जीव देव पदवीने प्राप्तकरे छे माटे समाधि मरण इच्छता निरन्तर छेयटनासमयमा पण नवकार मन्त्रनु स्मरण करता रहेवु ॥ ६४ ॥

जेणसहायेण गयाण परभवे समन्निवाण।
अणरछि सुखाइ त सरसमण नमुक्कार ॥ ६ ॥

जेनी सहायतायी भवयामा ओो परभवमा सुखी थाय, तेम प्राणिओ मनन वांछित सुखने देनार एवा नवकार मन्त्रनु स्मरण करतारहेवु

सुलहा ओो रमणि आ सुलह रज्ज सुरत्तण सुलह।
इक्कुचिय अणा दुलहो तं सरसुमणे नमुक्कारं ॥ ६६ ॥

सुलभ स्त्रियो, सुलभ राज्य, देवतापणु सुलभ परन्तु आ बधामा दुलभ एकज जे के माणसीने नवकार मन्त्रनु स्मरण करवु तेम दुलभ छे धारी ससारमा बधु सुलभन छ तेथी नवकार मन्त्रनु स्मरण करता रहेवु ॥ ६६ ॥

लब्भमि जमि जीयाण आयए तीवर व भवजलही।
सिवसुहस्सय कारं त सरसुमणे नमुक्कार ॥ ६७ ॥

ससारमा जन्मलइने, ससाररूपी समुद्र तरवाना माटे नवकार मन्त्रनु स्मरण करता रहेवु

दशमु द्वार समाप्त।

पत्त गुरु पइट पञ्जता गहण निसुणि ऊण ।
सो सउसम्वपा‍ेो तहेय आमेश्य पसो ॥ ६८ ॥
आ प्रमाणे गुरुमहाराजना उपदेशार्थी पर्यंत-आराधना-छेल्ली आराधना मॉमळीने सवपापकमनो त्याग करनार-श्री नवकार मंत्र स्मरण करना रहेतु ॥ ६८
पंचपरमिठि समरणं पगयणो पाविऊणपचत्त ।
पत्तो पचम कप्पमि गायसिंहा सुरिदत्त ॥ ६९ ॥
पचपरमेष्ठिना स्मरणथी पचत्वने पामेल, एवा श्री रायसिंहकुमार पाचमा देवलोकने विषेगया ॥ ६९ ॥
तत्थवि ण्यणवइ मंजेड आराहि ऊणतक वे ।
सामाणि अत्तपत्ता ऊ सत्तु आनिरुदस्साने ॥ ७० ॥
तनी स्त्री रत्नवती, नवकार मन्त्रनी आराधना करी तेज देवलोकमा सामानिक इन्द्रपणुपामी, अने त्या थी चवीने मोक्षमा जशे ॥७०॥
सिरि सामसूरि रइय पञ्जता राहण पसमज्जाणण ।
जे अणुसरंति सम्म लहंति ते सासय सुक्ख ॥ ७१ ॥
श्री सामसूरि रचित-बनावेली शांतिने करनारी एवी पर्यंत आराधना-छेल्ला-आराधना ने सारीरीते आदरकरशे ते शाश्वता सुखने पामशे ॥ ७१ ॥

इति पर्यंत आराधना समाप्त ।

बावीस अभक्ष्य

पचु वरवउंबिगइ हिमविस करगेय मट्टमहि ना ।
राय भोयणगंचिय बहुबिअ अणत संधाण ॥ १ ॥

वट, पीपर, उंबर, अजिर, महुडा, ए पांच उंबर तथा चार महाविगइ मध, मास माखण, अने मदिरा-(दारु) तथा बरफ ढडिवर्ते जमेलु पाणि, झेर, पाणिनाकरा-(गार) सर्व जातनी माटी रात्रि भोजन करवाथी घणा जीवानो घात थाय तेथी तेना पण त्याग करवो पापोटा-(कृमिकीट) प्रमुख बहुबिज, अनत काय अथाणु

घोलवडा वायगण, अमुणिय नामाणि पुप्फल्याणि ।
तुच्छफल चलियरस वज्जह वज्जह बावीसं ॥ २ ॥

मचा दहिमा ते करेल दहिवडा, रिंगणा, तथा जेना नामो न जाणता होय तेवा, तथा तुच्छफल, जाबु प्रमुख, चलितरस कोइ पण चिजनो रस जरतो होय-सडी गयला होय, एवा बावीस प्रकारना अभक्ष्य नहीं खावा योग्य चिजोनो त्याग करवा ॥ २ ॥

बाविश अभक्ष्य समाप्त ।

बत्रिश अनन्तकाय

सव्वाउकन्द जाइ सुरण कन्दोय वज्जकन्दोय ।
अल्लहलिद्दाय तहा अद्द तह अल्लकचुरो ॥ १ ॥

सर्व जातिना कन्द अनन्त काय, तथा सुरणकन्द, वज्रकन्द, लीली हलदर, आदु, तथा कचुरी, ते अनन्त काय समजवा ।

सत्तावरी विराली, कुमारी तहथोहरी गिलोई अ ।
लसणवसकरिल्ला, गज्जर तह लुणओ लोढा ॥ २ ॥

शतावरी, लीली बरियाली, कुंआरपाठा, थोहर, गलो, लसण, वासकरेला, गाजर, तथा फालुबिंद, लोढा नामनी वनस्पती-अनन्त काय समजवी ॥ २ ॥

गिरिकन्नि किसलयपत्ता खरि सुआ थेग अल्लमुत्थाय ।
तह लुणा रुक्खच्छल्ली खिल्लोडो अमयवल्लीय ॥ ३ ॥

गिरिकर्णिका, कुंपला, खरसुआ नामना कद, थेगकद, लीली मोथ, तथा लुण, खिलोडा कद तथा अमृतवल्ली अनन्त काय जाणवा ॥ ३ ॥

मूला तहभूमिरुहा विरुहाई ढक्कवत्थुला पढमा ।
सुअरवल्ली अ तहापल्लंको कोमल बलिया ॥ ४ ॥

मूला, भूमिफोड, जे छत्रिना आकार जणायछे, अंकुरासहित धउढो, ढक नामना भाजी, सुवरवाल, पालकशाक, तथा कोमल आमलि प्रमुख अनन्त काय जाणवा ॥ ४ ॥

वल्गु तडित्पिडङ्गु पतितमशाणि उपलं भार ।
बुद्धिपरिणिपपाई परिहरिच्चायपसेण ॥ ५ ॥

गताउ, पिंडउं, आयतिस मनंत पाय जाणीने बुद्धिमान पुरुषे त्याग करवो

अथ श्री आराधना पुण्यप्रकाश स्तवन

दोहा

सकलसिद्धिदायक सदा, चोविशजिनराय । सद्गुरु स्वामिनी सरस्वती प्रेमप्रणमु पाय ॥ १ ॥ त्रिभुवन पतित्रिशला तणो नंदन गुणगंभीर । शासन नायक जगजयो वर्धमान वडवीर ॥ २ ॥ एक दिन वीर जिणंदने चरणेकरी प्रणाम । भविक जीवना हितभणी पुछे श्री गौतमस्वाम ॥ ३ ॥ मुक्तिमार्ग आराधिये कहो किणपरे अरिहंत सुधासरस तवचन रस, भाखे श्री भगवंत ॥ ४ ॥ अतिचार आलोइये, व्रत धरिये गुरुसाख । जीव खमावो सयलजे, योनि चोराशी लाख ॥ ५ ॥ विधिशुं वळी वोसिरावियें पाप स्थानक अढार चार शरणनित्य अनुसरो, निंदो दुरित आचार ॥ ६ ॥ शुभकरणी अनुमोदिये भाव भलो मन आण । अणसण अवसर आदरी नवपद जपो सुजाण ॥ ७ ॥ शुभगति आराधन तणा ए छे दश अधिकार । चित्त आणीने आदरो जेम पामो भवपार ॥ ८ ॥

ढाळ पहेली

ए छिंडी किहा राखी

ज्ञानदर्शन चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार । एहतणा इहभव परभवना आलोइये अतिचारे ॥ १ ॥ प्राणी ज्ञानभणो गुणखाणी वीरवदे एम वाणी रे । प्रा० । ज्ञा० । ए आंकणी । गुरु ओळवीय नहीं गुरु विनये काले धरी बहुमान । सूत्रअर्थ तदुभयकरी सुधा भणिये वही उपधानरे ॥ २ ॥ प्रा० । ज्ञा० । ज्ञानोपकरण पाटी पोथी, ठवणी

मोकरवली । तेह तणी किधि आशातना, ज्ञानभक्ति न साभरीरे ॥ ३ ॥ प्रा० । ज्ञा० । इत्यादिक विपरितपणाथी ज्ञान विराध्यु जेह । आभव परभव वळीय भवोभव मिच्छामि दुक्कड तहरे ॥ ४ ॥ प्रा० । ज्ञा० । समकितरयो शुद्ध जाणी, ए आचर्णा । जिनवचने शंका न किजीऍ नविरम्मत अभिलाष । साधु तणी निंदा परिहरजो फल सन्देह म राखरे ॥ ' ॥ प्रा० । ज्ञा० । मूढपणु छंडो परशामा गुणवतने आदरिये । सामिने धर्मकरी थीरता, भक्तिप्रभावना करियेरे ॥ ६ ॥ प्रा० । ज्ञा० । सघ चैत्य प्रासाद तणोत्र, अवणवाद मन लागा । द्रव्य देव जे जे विण साड्यु, विणसता उवरवीरे ॥ ७ ॥ प्रा० । स० । इत्यादि पविपरीत पणाथी समकित खडयुंजेह । आभव० । मिच्छा० । प्रा० । चारित्रस्यो चित्त आणी । ए आचर्णा ॥ पाच समिति तीन गुप्ति विराधी आठ प्रवचन माय, साधु तण धर्म प्रमादे अशुद्ध वचन मन कायरे ॥ ९ ॥ प्रा० । चा० ॥ श्रावक धम सामायक पो सहमा मनवाली, ज जयणा पूरब ए अठ प्रवचन माय ॥ पालिरे ॥ १० ॥ प्रा० चा० ॥ इत्यादिक विपरित पणाथी चारित्र डोहयु जह । आभव० मि[illegible] ॥ ११ ॥ बारे भेद तप नवि कीधु छत याग निज शक्ते । धर्मे मन धचन काया धीरज नवि फोरे नियो भगते रे ॥ १२ ॥ प्रा० चा० । तप धीरज आचार प्रणी परे, विविध विराध्या जेह । आभव० मिच्छा० ॥ १३ ॥ प्रा० चा० । वलि विशेषे चारित्र करा अतिचार आलोइये वीर जिणे सर वयण मुणीने पाप मल सवि धोइये रे ॥ १४ ॥

ढाल बीजी पामी सुगुरु पसाय एदेशी

पृथ्वी पाणी तेउ, वायु वनस्पति ए पाचे थावर कह्याए, करी करसण आरम जे खेत्र खेडिया । कुवा तलाव खणावियाए ॥१॥ घर आरंभ अनेक टाका भोयरा, मेडी माल चणावियाए । लिंपण धूपण काज, पाणिगर । पृथ्वी काय विराधियाए ॥ २ ॥ धोरण नाहण पाणी जीलण अपकाय, छोती धाती करी दुहव्याए । भाठीगर कुभार, लोह सोवनगरा भाडभुंजा लिहा लागराए ॥ ३ ॥ तापण शेकण

काजे वस्त्र निखारण, रंगण राधण रस वतीए । एणीपरे कर्मादान परे केलवी, तेउ वायु विराधीयाए ॥ ४ ॥ वाडी वन आराम, वावी वनस्पती, पान फुल फल चुंटिया । पोंख पापडी शाक, शेका सुकव्या, छुद्या छेद्या आथीया ए ॥ ५ ॥ अलसीने एरंड घाणी घालीने घणा तिलादिक पीलियाए । घाली कोलुं मांहि पीली शेलडी कंदमूल फल वाचियाए ॥ ६ ॥ एम एकेन्द्रिय जीव हण्याहणाविया हणता जे अनुमोदियाए । आमव परभव जेह वली भवोभव ते मुज मिच्छामि दुक्कड ए० ॥ ७ ॥ कृमी सरमीया कीडा गाडर गडोला इयल पुरा अलसियाए । वाला जलो चुडेल, विचलित रसतणा, वली अथाणा प्रमुखना ए ॥ ८ ॥ एम बेंद्रिय जीव जेमें हण्या ॥ ते मुज० । उद्देही जु लीख मांकड मकोडा चांचड कीडी कुंथु आए ॥ ९ ॥ गद्दहिया घीमेल कान खजूरडा गिंगोडा धनेरिया ए । एम तेंद्रिय जीव जे मे हण्या । ते मुज० ॥ १० ॥ माखी मच्छर डांस, मसा पतंगिया कसारी कोलिया वडाए । ढिंकण विछु तीड भमरा भमरिया कोता बग खड मांकडी ए ॥ ११ ॥ एम चौरिंद्रिय जीव जे में हण्या । ते मुज० । जलमा नाखी जाल, जलचर दुहव्या, वनमा मृग संताविया ए ॥ १२ ॥ पीड्या पंखी जीव पाडी पाशमा पोपट घाल्या पांजरे ए, एम पंचेंद्रिय जीव जेमे दुहव्या । ते मुज० ॥ १३ ॥

ढाल तीजी

प्रथम गोवाला तणे भवे जीए देशी

क्रोध लोभ भय हास्यथीजी बोल्या वचन असत्य । कुडकरी धन पारकाजी लिधा जे अदत्त रे । जिनजी ॥ १ ॥ मिच्छामी दुक्कड आज, तुम साखे महाराजरे ॥ जिनजी ॥ देइ सारु काज रे जिनजी मि० ए आंकणी । देव मनुज तिर्यंचजी, मैथुन सेव्या जेह, विषयरस लंपटपणजी, घणुविटम्यो देहरे । जिनजी० २ मि० परिग्रहनी ममता करी जी, भवभव मेली आथ । जेह जिहांनी ते तिहा

रहीजी कोइ न आवी साथ रे ॥ जि० मि० ३ ॥ रयणी भोजन जे कर्याजी, कीधा भक्ष अभक्ष रसना रसनी लालचेजी, पापकर्या प्रत्यक्षरे ॥ नि० मि० ४ ॥ व्रत लेइ विसार्याजी वली भाग्या पच खाण कपट हेतु क्रियाकरीजी, कीधा आप वखाणरे ॥नि० मि० ५॥ त्रण ढाले आठ दुहजी, आलोइया अतिचार । शिवगति आराधन तणोंनीए पहेलो अधिकाररे ॥ जि० ॥ ६ ॥

ढाल चोथी । माहेलडीनी देशी ॥

पंच महाव्रत आदरो, साहेलडीरे । अथवा ल्यो व्रत बारतो यथा शक्ति व्रत आदरी ॥ सा० पालो निरती चार तो ॥ १ ॥ व्रत लीधा संभारिये । सा० हियडे धरी विचारतो शिवगति आराधन तणो ॥ सा० एवीजो अधिकार तो ॥ २ ॥ योनी चोराशी लाखतो, मन शुद्धे करी खामणा सा० काइशु रोष न राखवो ॥ ३ ॥ सर्वे मित्रकरी चिंतवो ॥ सा० कोइ न जाणो शत्रु तो । रागद्वेष एम परिहरो । सा० कीजे जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ स्वामी संघ खमावियें । सा० जे उपनी अप्रीति तो स्वजन कुटुंब करी खामणा सा० एजिन शासन रीततो ॥ ५ ॥ खमिये अने खमावियें ॥ सा० एहज धर्मनो सारतो शिव गति आराधन तणो सा० एत्रीजो अधिकार तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिंसा चोरी सा० धन मूर्छा मैथुन तो क्रोध मान माया तृष्णा सा० प्रेम द्वेष पैशुन्य तो ॥ ७ ॥ निंदा कलह न कीजिए सा० कुडा न दीजे आलतो रति अरति मिथ्या तजो सा० माया मोस जंजाल तो ॥ ८ ॥ त्रिविध त्रिविध वोसिरावीए सा० पाप स्थान अढारतो शिवगति आराधन तणो सा० ए चोथो अधिकार तो ॥ ९ ॥

ढाल पांचमी हवे निसुणो इहा आविया ए देशी

जन्म जरा मरणे करिए ए संसार असार तो कर्या कर्म सहु अनुभवे ए कोइ न राखण हार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए शरण सिद्ध भगवंतनो, शरण धर्म श्री जिननो ए साधु शरण गुण वंततो

॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरिए चार शरण चित्त धारतो । शिव गति आराधन तणो ए, ए पाचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आभवपर भव जे कर्या ए पापकर्म केइ लाखतो । आतमसाखे ते निंदिये ए पडिक्कमिये गुरु साखतो ॥ ४ ॥ मिथ्या मति वरतावियो ए जे भाख्या उत्सूत्रतो । कुमति कदाग्रहने वशे ए वलीथाप्या उत्सूत्रतो ॥ ५ ॥ घड्या घडाव्या जे घणां घरटी हल हथीयारतो । भव भव मेलि मुकिया ए करता जीवसंहारतो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोषिया ए जनम जनम परिवारतो । जनमांतर पहोता ए कोइए नकीधी सारतो ॥ ७ ॥ आभव परभव जे कर्या ए एम अधिकरण अनेक तो । त्रिविधे त्रिविधे वोसिरावीए आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ दुष्कृतनिंदा एम करिए, पाप कर्या परिहारतो शिवगति आराधन तणो ए ए छठ्ठो अधिकार तो ॥ ९ ॥

ढाल छठी आदि तु जोइने आपणी । ए देशी।

धन धन ते दिन माहरो जिहां कीधो धर्म । दान शील तप आदरी, टाल्या दुष्कर्म ॥ ध० ॥ १ ॥ शत्रुंजयादिक तीथनी, जे कीधी यात्रा । युगते जिनवर पूजिया, वली पोख्या पात्र ध० ॥ २ ॥ पुस्तक ज्ञान लखावियां निणहर जिण चैत्य सघ चतुर्विध साचवया, ए सात क्षेत्र ते ॥ ध० ३ ॥ पडिक्कमणांसुपेरे कर्या अनुकंपा दान, साधु सुरी उवज्झायने दीधा बहुमान ॥ ध० ४ ॥ धर्मकारज अनु मोदिये एम वारवार, शिवगति आराधन तणो ए सातमो अधिकार ॥ ध० ५ ॥ भाव भलो मन आणियें चित्त आणि ठाम । समता भाव भावियें ए आतमराम ॥ ध० ६ ॥ सुख दुःख कारण जीवने कोइ अवर न होय । कर्म आप जे आचर्या भोगवियें सोय ॥ ध० ८ ॥ समता विणने अनुसरे, प्राणी पुन्य काम । छार उपर ते लिंपणु झाखर चित्राम ॥ ध० ॥ ८ ॥ भाव भलीपरे भाविय ए धर्मनो सार । शिवगतिनो आराधन तणो ए आठमो अधिकार ॥ ध० ॥ ९ ॥

ढाल सातमी रेवतगिरि उपरे ए देशी ।

हवे अवसर जाणी, करीयें संलेषणा सार, अणसण आदरियें पचखीं चार आहार । एतुना सविमुरि छांडी ममता मंगए आतम खेले समता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति चारें कीधा, आहार अनंत निःशंक पण तृप्ती न पाम्यो । जीव लालचिया रंक दुल्हो ए वली धर्म अणसणनो परिणाम, जथी पामीजे शिवपद सुरपद ठाम ॥२॥ धन धन्ना शालिभद्र खंधो मेघकुमार, अणसण आराधि पाम्या भवनो पार । शिवमंदिर जासे करी एक अवतार आराधन केरो, ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमें अधिकारे महामंत्र नवकार, मनथी नवी मुका शिव सुखफल सहकार । ए जपता जायें दुर्गती दोष विकार । सुपेरे ए समरो चउदपूर्वनो सार ॥ ४ ॥ जे मांतरें जाता, जो पामे नवकार तो पातक गाली पामे सुर अवतार । ए नवपद सरिखो मंत्र को न संसार इहभवने परभवे सुख संपति दातार ॥ ५ ॥ जु ओ भील्ले भीलडी राणा राणी थाय नवपद हिमाथी राजसिंह महाराय । राणी रत्नवती बेहु पाम्या सुरभोग एक भवथी लेसे सिद्धि वधु संयोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीने ए वली, मंत्र फल्यो ततकाल । फणी धर फीटीन प्रगट थै फुल माल शिवकुमरे योगी सोवन पुरि सोकीध । एम एणे मंत्रे काज घणाना सिद्ध ॥ ७ ॥ ए दश अधिकारे वीर जिणे सर भाख्या, आराधन केरो विधि जणे चित्तमा राख्यो । तेणे पाप पखाली भवभय दूरे नाख्यो । विन विनय करता सुमति अमृत रस चाख्यो ॥ ८ ॥

ढाल आठमी नमो भवि भावसु ए, ए देशी ॥

सिद्धारथ राय कुलतिलोय तिसलामात मल्हारतो । अवनीतले तुमे अवतर्या ए करवा अम उपगारतो ॥ १ ॥ जयोजिनवीर जी ए ए आकर्णी । मे अपराध कया घणा ए कहता न लहुं पारतो तुम चरणे आव्या भणी जो तारे तो तार ॥ २ ॥ ज० आशकरीने आवियो ए

तुम चरणे महाराज तो। आव्या ने उवेखशो ए तो केम रहेशे लाज ॥ ३ ॥ ज० कर्म अलुजण आकरा ए जन्ममरण जंजाल तो हुं छु ए इथी उभग्यो ए छोडाओ देवदयाल तो ॥ ४ ॥ ज० ॥ आज मन रथ मुज फल्या ए नाठा दुःखदंदोल तो ॥ तुठा जिन चोविशमो ॥ प्रगट्यो पुण्य कल्लोल तो ॥ ५ ॥ ज० ॥ भव भव विनय तुमारडो ए, भाव भक्ति तुम पायतो। देवदयाकर दीजिए बोधबीज सुपसायनो ॥ ६ ॥ ॥ ज० इति ॥

कलश

इयतरण तारण सुगतिकारण दुःख निवारण जग जयो। श्री धीरजिनवर चरण थुणता अधिक मन उल्लट थयो ॥ १ ॥ श्रीविजय देव सुरींद पटधर तीरथ जंगम इणि जग। तपगच्छ पति श्री विजय प्रभसुरि सूरितेजे जगमगे ॥ २ ॥ श्रीहीरविजय सूरीं शिष्य वाचक, कीर्ति विजयो, सुरगुरु समा। तस शिष्यवाचक विनय विजये थुण्यो जिन चोविशमो ॥ ३ ॥ सह सत्तर संवत् ओगण त्रिदो रही, रांदेर चोमास ए। विजय दशमी विजय कारण, कियो गुण अभ्यास ए ॥ ४ ॥ नरभव आराधन सिद्धिसाधन सुकृत लील विलासए। निर्जरा हेते स्तवन रचियु नाम पुण्य प्रकाश ए ॥ ॥

इति पुण्य प्रकाश स्तवन समाप्त ।

प्रत्येक बुद्धना रासनी त्रीजी ढाल जननी मन आशाधरी ए ढाल

पद्मावती जीव राशी

राग वेराडी

हव राणी पद्मावती। जीव राशी खमावे। जाण पणु ते जुगनेभलु इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते मुझ मिच्छामि दुक्कड, अरिहंतनी साख। जेमें जीव विराधिया चउराशीलाख ते मुझ० ॥ २ ॥ सात लाख पृथ्वी तणा, साते अपकाय। सात लाख तेउ कायना, सात वली वाय ॥ ते मुझ० ॥ ३ ॥ दश प्रत्येक वनस्पति चोदह साधारण।

निति चउरिंद्रिजीवना वे वे लाख विचार। ते मुज० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी चार चार प्रकाशी। चौदह लाख मनुष्यना ▪ लाख चोराशी ॥ ते मुज० ॥ ॥ इण भवपरभवे सेविया जे पाप अढार। त्रिविध त्रिविध करी परिहरुं दुर्गति दातार ॥ ते मुज० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी बाल्या मृषावाद। दोष अदत्ता दानना मैथुन उन्माद ॥ ते मुज० ॥७॥ परिग्रह मल्यो कारमो, कियो क्रोध विशेष। मान माया लोभमें किया वली रागने द्वेष ॥ ते मुज० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूहव्या दीधा कूडा कलङ्क। निंदा कीधी पारकी रति अरति नि शङ्क ॥ ते मुज० ॥ ९ ॥ चाडी कीधी चोतरे कीधो थापण मोसो। कुगुरु कुधर्मनो भलो आण्यो भरूसा ॥ ते मुज० ॥ १० ॥ खाटकीना भव में किया जीव नानाविध घात। चडीमार भवे चर कला मायादिन रात ॥ ते मुज० ॥ ११ ॥ माछीने भवे माछला जाल्यापल वास। धीवर भील कोली भव मृग पाड्या पास ॥ ते मुज० ॥ १२ ॥ काजी मुलाने भवे पढी मन्त्र कठोर। जीव अनेक मारिया कीधा पाप अघोर ॥ ते मुज० ॥ १३ ॥ कोटवालना भवे में किया आकरा दंड। बंदिवान मरावियाँ, कोरडा छडी दंड ॥ ते मुज० ॥ १४ ॥ परमा धामिने भवे दीधा नारकी दुःख। छेदन भेदन वेदना ताडना अति तिख ॥ ते मुज० ॥ १५ ॥ कुंभारना भवेने किया निभाडा पचाव्या। तेली भवे तिलपीलिया, पाप पेट भराव्या ॥ ते मुज० ॥ १६ ॥ हालीने भवे हल खेडिया फाड्या पृथ्वीना पेट। सूड निदान किया घणा की बलद चपेट ते मुज० ॥ १७ ॥ माली भवे रोपिया नानाविध वृक्ष। मूलपत्र फलफुलना, लाग्यापापते लक्ष। ते मुज० ॥ १८ ॥ अधोवाइयाने भवे भर्या अधिका भार। पोठी उंट कीडा पड्या दया न रही लगार ॥ ते मुज० ॥ १९ ॥ छीपाने भव छेतरी कीधा रंगणपास। अगनि आरंभकिया घणा, धातुर्वाद अभ्यास ॥ ते मुज० ॥ २० ॥ शूरपणे रण जूझता, मार्या माणस वृंद। मदिरा मांस मारण भर्या खाधा मूलने कन्द ॥ ते मुज० ॥ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी पाणि उलेच्या आरंभ किधा अति घणा पोते पापज संच्या ॥ ते मुज० ॥ २२ ॥ अंगारकर्म किया

घरो घरमे दवदीधा । सुख किया पीतगगना पुडा कौसल पीधा । ते मुझ० ॥ २३ ॥ चिड़ी भवे उंदर लाया गिरोली हत्यारी । मूढ गमार तणे भवे मेंजु लीख मारी ॥ ते मुझ० ॥ २४ ॥ भाडभुंजा तणे भवे एकेन्द्रिय जीव । जवार चणा गेहु शेकिया पाडेता रीव ॥ ते मुझ० ॥ २ ॥ खांडण पीसण गारना आरंभ अनेक । रांधण ईंधण अग्निना किया पाप उद्रेक ॥ ते मुझ० ॥ २६ ॥ विकथा चार किधी वली सेव्या पांच प्रमाद । इष्टवियोग पाड्यांकिया रुदन विषवाद । मुझ० ॥ २७ ॥ साधु अनेक श्रमण तणा व्रत लई भाग्या । मूल अने उत्तर तणा मुझ दूषण लाग्या । ते मुझ० ॥ २८ ॥ सापविंछी सिंह चितरा शकराने समला । हिंसक जीव तणे भवे हिंसा कीधी सबली ॥ ते मुझ० ॥ २९ ॥ सुयावडी दूषण घणा, वली गर्भ गलाव्या । जीवाणी ढोल्या घणा शीलव्रत भंजाव्या ॥ ते मुझ० ॥ ३० ॥ भव अनंत भमता थका कीधा कुटुंब सम्बन्ध । त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं तिणशुं प्रतिबन्ध ॥ ते मुझ० ॥ ३१ ॥ भव अनंत भमता थका कीधा परिग्रहसम्बन्ध । त्रिविध त्रिविध करी वोसिरुं तिणशुं प्रतिबन्ध ॥ ते मुझ० ॥३२॥ इणिपरे इण भवे परभवे कीधा पाप अक्षत्र । त्रिविध त्रिविध करी वोसिरु करुं जन्म पवित्र । ते मुझ० ॥ ३३ ॥ राग वे गडी जे सुणे ए तीजी ढाल । समय सुंदर कहे पापथी छुटे तत्‌ काल ॥ ते मुझ० ॥ ३४ ॥

अर्हम्

श्री सिद्धचक्रमण्डल पूजनविधि

प्रथम सुंदर अंगोपांगवाला स्नात्रियाओए मंत्रेला पाणिथी स्नान करवुं—तन्मंत्र—ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भव अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय २ स्वाहा । आ मंत्रथी पाणि मंत्रीने पछे ॐ ह्रीं अमले विमले विमलोद्भवे सर्व तीर्थ जलोपमे पापां वावां अशुचि शुचि भवामि स्वाहा । आ मंत्रथी सातवार मंत्रीने स्नान करवुं, पछे ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः आ मंत्रथी सातवार मंत्रीने वस्त्र शुद्धकरीने पेरवा, तथा

ॐ आ हां मों अर्हते नमः आ मन्त्रथी सातवार केशर मन्त्रिने तिलक करवु पछी ॐ ह्रीं अवतर अवतर, सोमे सोमे कुरु कुरु वग्गु वग्गु सुमणे सोमणस महुमहुरे ॐ कवली क क्षः स्वाहा आ मन्त्रथी नाडा छोडी, मिंढल, मरोडाफली मन्त्रिने हाथ बांधवी, ज्यार मंडपनी चारे तरफ नालमूत्र मिंढल बांधे त्यारपछी आमन्त्रथी मन्त्रिने बांधवु, तथा आ प्रमाणे आपणा शरीरने मुद्राकरि स्नात्रिया गुरु महाराजनी सन्मुख हाथ जोडीने बेसे त्यार गुरुमहाराज अथवा स्नात्रियाओ पण अगरक्षा स्तोत्र भणीने अगरक्षा करे

अथ अगरक्षा स्तोत्र

ॐ परमेष्टी नमस्कार सार नवपदात्मक आत्मरक्षाकर वज्र पंजराभ स्मराम्यहम् ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहन्ताण शिरस्क शिरसि स्थित ॐ नमो सव्वसिद्धाण मुखे मुखपटम्बर ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरियाण अंगरक्षातिशायिनी ॐ नमो उवज्झायाण आयुधं हस्तयोर्दृढम् ॥ ३ ॥ ॐ नमो लोए सव्वसाहूण मोचके पादयोशुभे एसो पंचनमुक्कारो शिलावज्रमयीतले ॥ ४ ॥ सव्व पावप्पणासणो वप्रो वज्रमयो बहि मगलाण च सव्वेसिं खादिरागार खातिका ॥ ५ ॥ स्वाहान्त च पद ज्ञेय पढमं हवइ मगल वप्रोपरिवज्रमय पिधान देह रक्षण ॥ ६ ॥ महाप्रभावा रक्षेय क्षुद्रोपद्रवनाशिनी परमेष्टि पदोद्भूता कथिता पूर्व सूरिभि ॥ ७ ॥ यश्चैव कुरुते रक्षा परमेष्टिपदै सदा तस्य न स्यात् भय व्याधिराधिश्चापि कदाचन ॥ ८ ॥

आ स्तोत्र त्रणवार गणिने आत्मरक्षा करवी, पछ त्रणवार नवकार मन्त्रथी मन्त्रिने चोटलीनी गाठ बांधवी, अने त्रणवार नवकारमन्त्र गणिने सर्वे स्नात्रियाना कानमा तिलकरावनार गुरुमुख आपे आ प्रमाणे विधि शान्तिस्नात्र प्रतिष्ठामा तथा नवपद मडलनी पूजामा करते करवी पछे मन्दिरमा जे अधिष्टायिका देवओ होय ते सर्वना पूजा करे; अष्टद्रव्य चडाव, पछे चवरीना तलमा हिंगलुक अथवा सिंदुर, भेलवीने क्षेत्रपालनी पूजा कर, तथा चांदना वरखथी अग

रचना करे अतर तथा पुष्प धुप दीप नैवेद्य फल विगेरे अष्टद्रव्य
ॐ क्षत्रपालाय नम एमबोली सव द्रव्य चढाय

नवपद मण्डलनी जमणा तरफ दशदिग्पालना पाटलानी स्थापना करवी एकदिग् पालनी पूजा करने सव द्रव्यथी पूजा करे

दशदिग्पाल पूजा

१ ॐ नमो इन्द्राय, सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय, अस्मिन जम्बुद्विप भरतक्षेत्रे अमुक नगर अमुक जिन चैत्य श्रीनवपदमण्डल पूजा महोत्सवे आगच्छ २ बलि पूजा गृह्ण २ शान्ति तुष्टि पुष्टि रिद्धि वृद्धि कुरु २ स्वाहा । ॐ इन्द्राय नम आ प्रमाणे बोलीने इन्द्र आगल पूजा पूव दिशामां जल चदन धूप, दीप, नैवेद्य, आदि अष्टद्रव्य चढाबे २ ॐ नमो अग्नये सायुधाय, सवाहनाय अस्मिन् जम्बूद्विपे भरत क्षेत्र अमुक नगरे अमुक जिन चैत्य श्री नवपद मण्डलपूजा महोत्सवे बलिपूजा गृह्ण २ शान्ति तुष्टि पुष्टि रिद्ध वृद्धि कुरु २ स्वाहा सर्व द्रव्य चढावत्रा ॐ अग्नये नम । ३ ॐ नमो यमाय सायुधाय सवाह नाय सपरिकराय जम्बूद्विप भरतक्षेत्रे अमुकन अमुक जिन नवपद मण्डलपूजा महोत्सवे आगच्छ २ बलि पूजा गृह्ण २ शान्ति तुष्टि पुष्टि रिद्धि वृद्धि कुरुकुरु स्वाहा सव द्रव्य चढावबा, ॐ यमाय नम । ४ ॐ नमो नैऋताय सायु सवा सपरि अ जम्बू भरतक्षेत्र नवपदमण्डल पूजा महोत्सवे आगच्छ २ बलि पूजा गृह्ण २ शान्ति तुष्टि पुष्टि रिद्धि वृद्धि कुरु २ स्वाहा, सर्व द्रव्य चढाववा ॐ नैऋताय नम । ५ ॐ नमो वरुणाय सायु सवा सपरि अ जम्बू भरतक्षेत्र नवपदमण्डल पूजा महोत्सवे आगच्छ २ बलि पूजा गृह्ण २ शान्ति तुष्टि पुष्टि रिद्धि वृद्धि कुरु २ स्वाहा सव द्रव्य चढाववा ॐ वरुणाय नम । ६ ॐ नमो वायवे सायु सवाह सपरि अस्मि जम्बु भरत अमुकन अमुकजि नवपदमण्डलपूजामहोत्सवे आगच्छ २ बलि पूजा गृह्ण २ शान्ति तुष्टि पुष्टि रिद्धि कुरु स्वाहा सव द्रव्य चढाववा ॐ वायवे नमः ७ ॐ नमो कुबेराय, सायु सवाह सपरि अस्मि जम्बू भरत

अमुक्न अमुकजि श्री नवपदमण्डलपूजा महोत्सवे आगच्छ २ यलि पूजा गृह्ण २ शांति पुष्टि तुष्टि रिद्धि वृद्धि कुरु २ स्वाहा, सव द्रव्य चढाववा, ॐ कुबेराय नम । ८ ॐ नमो इशानाय, सायु सवा सपरि अस्मि जम्बू भरत अमुक्न अमुकजि श्रीनवपदमण्डलपूजा महोत्सवे आगच्छ २ यलि पजा गृह्ण शांति तुष्टि पुष्टि रिद्धि वृद्धि कुरु २ स्वाहा, सव द्रव्य चढाववा, ॐ इशानाय नम । ९ ॐ नमो ब्रह्मणे सायु सवा सपरि अस्मि जम्बू भरत अमुक्न अमुकजि श्री नवपदमण्डलपूजामहोत्सवे आगच्छ २ यलि पजा गृह्ण २ शान्ति तुष्टि पुष्टि रिद्धि वृद्धि कुरु २ स्वाहा, सव द्रव्य चढाववा ॐ ब्रह्मणे नम । १० ॐ नमो नागाय, सायु सवा सपरि अस्मि जम्बु भरत अमुक अमुक श्रीनवपदमण्डलपूजामहोत्सवे आगच्छ २ यलि पूजा गृह्ण २ शान्ति तुष्टि पुष्टि रिद्धि वृद्धि कुरु २ स्वाहा, सव द्रव्य चढाववा, ॐ नागाय नम ।

उपरप्रमाणे सव दिशामा अष्टद्रव्य पानसहित चढाववा, गेरुड नाणु पछे उपर पसुरनवाला लाल सूत्रथी बाध, पछ ॐ दशदिक्पालाय नम आ प्रमाणे कही दशदिशामा धृतदीपक फुलवत्ती-उभी वत्तीनो दीवो करे

इति दशदिक्पाल पूजनविधि ।

श्री नवग्रहपूजनविधि ।

भगवाननी डाबी तरफ नवग्रहना पाटलानी स्थापना करवी, १ ॐ नमो आदित्याय सायु सवाह सपरि अस्मि जम्बू भरत अमुक्न अमुकजि श्री नवपदमण्डलपूजामहोत्सवे आगच्छ २ यलि पूजा गृह्ण २ शांति तुष्टि पुष्टि रिद्धि वृद्धि कुरु २ अत्र तिष्ठ २ स्वाहा ॐ सूर्याय नम जल चन्दन पुष्प धूप दीप नैवद्य अक्षत फल यज्ञामहे स्वाहा आमबोली अष्टद्रव्य चढाववा।

२ ॐ नमो चन्द्राय, सायु सवाह सपरि अस्मि जम्बु भरत अमुक्न अमुकजि श्रीनवपदमण्डलपूजामहोत्सवे आगच्छ २ यलि

पूजा गृह्ण शान्ति तुष्टि पुष्टि रिद्धि वृद्धि कुरु २ अत्र तिष्ट २ स्वाहा, ॐ चन्द्राय नम आम वोटीने जल चन्दन द्रव्यथी पजावरे, तथा अष्ट द्रव्य चढावे

३ ॐ नमो भामाय, सायु सवा सप रसिम जम्बू भरत अमुकन अमुकजि श्रीनवपद मण्डलपूजामहोत्सवे आगच्छ २ वलि पूजा गृह २ शान्ति तुष्टि पुष्टि रिद्धि वृद्धि कुरु २ अत्र तिष्ट २ स्वाहा, ॐ भोमाय नम आम कहीने अष्ट द्रव्य चढावे।

४ ॐ नमो बुधाय, सायु सवा सपरि, असिम यम्बू भरत अमुकन अमुकजि श्रीनवपदमण्डलपूजामहोत्सवे आगच्छ २ वलिपूजा गृह २ श्री शान्ति तुष्टि पुष्टि रिद्धि वृद्धि कुरु २ अत्र तिष्ट २ स्वाहा, ॐ बुधाय नम आम वालीने अष्टद्रव्य चढाववा

ॐ नमो बृहस्पतये सायु सवा सपरि असिम जम्बू भरत अमुकन अमुकजि श्रीनवपदमडलपूजामहोत्सवे वलि पुजा गृह्ण २ शान्ति तुष्टि पुष्टि रिद्धि वृद्धि कुरु २ अत्र तिष्ट २ स्वाहा ॐ बृहस्पतये नम , कहीने अष्ट द्रव्य चढावे

६ ॐ नमो शुक्राय, सायु० सवाद० सपरि० असिम० जम्बू भरत० अमुकन अमुकजि श्रीनवपदमडलपुजामहोत्सवे वलि पूजा गृह्ण २ शान्ति पुष्टि पुष्टि रिद्धि वृद्धि कुरु २ अत्र तिष्ट २ स्वाहा, ॐ शुक्राय नम कहीने अष्ट द्रव्य चढावे।

७ ॐ नमो शनिश्चराय, सायु सवा सपरि असिम जम्बू भरत अमुकन अमुकजि श्रीनवपदमण्डलपुजामहोत्सवे आगच्छ २ वलि पूजा गृह्ण २ अत्र तिष्ट २ स्वाहा, ॐ शनिश्चराय नम कहीने अष्ट द्रव्य चढाववा

८ ॐ नमो राहवे सायु सवा सपरि असिम जम्बु भरत अमुकन अमुकजि श्रीनवपदमडलपूजामहोत्सवे आगच्छ २ वलि पूजा गृह्ण २ अत्र तिष्ट २ स्वाहा, ॐ राहव नम , कहीने अष्टद्रव्य चढावया

९ ॐ नमो केतवे सायु सवा सपरि असिम जम्बू भरत अमुकन अमुकजि श्री नवपदमडलपुजामहोत्सवे आगच्छ २ वलि पुजा गृह्ण २

२ अथ निष्ट २ स्वाहा, ॐ केतवे नम आमकहीने अष्ट द्रव्य चढावया

आप्रमाणे नवग्रहनी पूजा करीने पछे नवग्रहानो पाटलो भगवानी डावी पासे राखवो अने तेने कुसुमल धरन तथा सूत्रथी बांधे पछ ॐ नवग्रहाय नम , एम कहीने अष्ट द्रव्य नागरवेलना पान तथा रूपानाणु भेटकरे चार तरफ नव दीपक करे, अथवा एक दीपक करे इति नवग्रह पूजन विधि ॥

अथ देवयन्दनविधि

पछे यथा स्नात्रियाओ आठ वस्तु (थोय) थी देवयदन करे, प्रथम विधिकरावनार गुरु अथवा विधि करनार प्रथम खमासमण० इरियावहि, तस्स उत्तरी, अन्नथ कहिने चार लोगस्सनो का उस्सग करि प्रगट लोगस्स कहे पछे खमासमण० दइने, जमणो ढिंचण निचे राखे, डावो पग उचो राखे, पछे इच्छा कारेण संदिसह भगवन् चैत्यवदन करु इच्छं- चैत्यवदन करे

> ॐ नमो पार्श्वनाथाय विश्वचिंतामणियते ।
> ह्रीं धरणेन्द्र वरोट्या पद्मादेवी युतायते ॥ १ ॥
> शांति तुष्टि महा पुष्टि धृति कीर्ति विधायिने ।
> ह्रीं दिड्व्यालवेताल सर्वाधि व्याधिनाशिने ॥ २ ॥
> जयाजिताख्य विजयाख्या पराजितान्विता ।
> दिशापालैर्ग्रहैर्यक्षैर्विद्यादेवी भिरन्विता ॥ ३ ॥
> ॐ असिआ उसाय नमस्तत्र त्रैलोक्य नाथताम् ।
> चतु षष्टि सुरेन्द्रास्ते भासन्ते छत्रचामरै ॥ ४ ॥
> श्री सङ्खेश्वरमण्डनपार्श्वजिन प्रणतकल्पतरुकल्प ।
> चूरय दुष्ट व्रातमे पुरय वाञ्छित नाथ ॥ ५ ॥

पछे जंकिंचि नमुथुण, अरिहंत चेइयाण करेमि काउसग्ग, वदण, अन्नथ काउसग्ग एक नवकारनो पारीने, नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्य , कहीने थोय कहे

अर्हंस्तनोतु सश्रेय श्रियं यद्ध्यानतो नरैः ।
अप्यैन्द्री सकलाऽत्रैहि रंहसा सह सौच्यत ॥ १ ॥

पछी लोगस्स कहीने सव्वलोए, अरिहंत चेईआणं, करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तियाए, अन्नत्थ कहीने एक नवकारनो काउस्सग्ग करी पछी पारीने बीजी थोय कहे—

ओमिति मन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यदंघ्रिश्च ।
आश्रियते श्रिया ते भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥ २ ॥

पुक्खरवरदी कहेवी, सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तियाए, अन्नत्थ कहीने एक नवकारनो काउस्सग्ग करीने, पारीने त्रीजी थोय कहे

नवतत्त्वयुता त्रिपदीश्रिता रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता ।
वरधर्मकीर्तिविद्यानन्दास्या जैनगीर्जीयात् ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं कहीने श्री शांतिदेव शांतिनाथ आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं वंदण अन्नत्थ, कहीने काउस्सग्ग एक लोगस्सनो सागरवरगंभीरा सुधी करीने पारी नमोऽर्हत् कहीने चोथी थोय कहवी—

श्री शांतिः श्रुतशांतिः प्रशान्तिकोऽसावशान्तिमुपशान्तिम् ।
नयतु सदा यस्य पदाः सुशान्तिदाः सन्तु सन्ति जने ॥ ४ ॥

श्री द्वादशांगी—आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं वंदण अन्नत्थ कहीने काउस्सग्ग एक नवकारनो करीने पारी नमोऽर्हत् कहीने पांचमी थोय कहे—

सकलार्थसिद्धसाधन बीजोपाङ्गा सदा स्फुरदुपाङ्गा ।
भवतादनुपहतमहातमोऽपहा द्वादशाङ्गी वः ॥ ५ ॥

सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ, कहीने नवकारनो काउस्सग्ग करे नमोऽर्हत् कहीने छट्ठी थोय कहे—

वद वदति न वाग्वादिनि भगवति कः श्रुतसरस्वति गमेच्छुः ॥
रङ्गत्तरङ्गमतिवरतरणि स्तुभ्यं नम इतीह ॥ ॥

शासन देवता आराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थ नोकार काउस्सग्ग करी नमोऽर्हत् कहीने सातमी थोय कहे—

उपसर्गवलयविलयननिरता जिनशासनावनैकरता ।
द्रुतमिह समीहितकृते स्युः शासन देवता भवताम् ॥ ७

समस्त वेयावच्चगराण सन्ति करेमिमिक्ता अनत्थ काउस्सग्ग एक नवकारनो करवो पारीने नमोऽर्हत् कही आठमी थोय कहे—

सघऽत्रेये गुरुगुणौघनिधे सुवैयावृत्यादिकरणैकनिबद्धकक्षा ।
ते शान्तये सहभवन्तु सुरा सुरिमि सद्दृष्टयो निखिल विघ्न
विघातदक्षा ॥ ८ ॥

पछे नवकार उभा गणवो पछे बेसीने नमुथुण जावंतिचे खमा जौतम करिसाहू नमोऽर्हत् सिद्धा कहीने स्तवन कहेवु

ॐ मिति नमो भगवओ अरिहंतसिद्धायरिय उवज्झाय ।
वरसव्वसाहू मुणि सघधम्मतित्थपवयणस्स ॥ १ ॥
सप्पणमो तह भगवई सुयदेवयाइ सुहयाए ।
सिवसंति देवयाण सिवपवयण देवयाण च ॥ २ ॥
इन्द्र गणिजमनेरइय वरुणवाउकुबेरईसाणा ।
बभो नागुत्ति दसण्हमवि य सुदिसाण पालाण ॥ ३ ॥
सामयमवरुणवेस्समणवासवाण तहेव पचण्ह ।
तह लोगपालयाण सुराइगहाणय नवण्ह ॥ ४ ॥
साहतस्स समक्ख मज्झमिणं चेव धम्मणु ठाण ।
सिद्धिमविग्घ गच्छउ जिणाइ नवकारओ धणिय ॥ ५ ॥
पछे जयवियराय सम्पूर्ण कहेवा इति देववन्दनविधि पूर्ण

नवपदमण्डल प्रतिष्ठाविधि ।

प्रथम मण्डलनी चारे तरफ लालसूत्र तथाधीना भीगोकरे, दीवो चारपहोर सुधि अखण्ड राखे, पछे सोनाना-या चान्दिना कलशमा पाणि भरिने सोनावाणिकरे, पछे हाथमा कलश लइने सात नवकार गणे ॐ ह्रीँ श्रीँ जीरापल्ली पार्श्वनाथाय रक्षा कुरु २ स्वाहा आम त्रणवार पाणिने मन्त्रे, तथा ते पाणिने मण्डलनी चारे तरफ धारावडी दे तथा उपर जवना पाणिना छाटा नाखीने शुद्धकरे, पछे नवकार लाल सूत्रना साडात्रण आटा मण्डलनी बहार चारे तरफ करे, पहेला कहेल मन्त्रथी मन्त्रिने लाल सूत्र, मिंढल मयेडा फली,

तस्य पुद्गल सिद्धान [illegible] मत्यक्ष्यादिगुणा महान ।
निश्रेयस पद्‌ प्राताम्‌ निदधे मक्तिमि [illegible] ॥ २ ॥
तत्‌ पुर्वपो चरित अजय दुष्ट [illegible] ।
प्रातारगन्‌ सिद्धिमन तत्रेन्द्र सिद्धान्‌ पत्रे [illegible]
[illegible] ॥ ४

श्री ँ सिद्धेभ्यो नम स्वाहा [illegible] सिद्धपद
स्थापनानी पुजा करे, सर्वे द्रव्य [illegible]
पीली ध्वजा, पीलु वस्त्र, पाच गोमेद रत्न [illegible] पुष्प
तथा [illegible] सर्वे हायमा लइने आचार्य पदनी पुजा कर—

स्थापयामि तत्र सूरिन्‌ [illegible] ।
चरन पञ्चधाचारान्‌ [illegible] ॥ ५ ॥
सूरिस्मदाचार्यविचारसारानाचार [illegible] ।
उमोपसम च निवारणार्थम [illegible] ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीसूरिभ्योनम स्वाहा, [illegible]
आचार्यपद स्थापनानी पूजा करे, [illegible]
[illegible] लीला वस्त्र लीली ध्वजा, [illegible] रत्न पचीस
मरकत रत्न पन्ना, लीलामगना [illegible]
हायमा लइने उपाध्याय पदनी पूजा [illegible]—

द्वादशाङ्गश्रुतधारान्‌ [illegible] ।
नियेशयाम्युपाध्यायान्‌ [illegible] ॥ ७ ॥
श्रीधर्मशास्त्रण्यनिशप्रशान्तान्‌ [illegible] ।
अध्यापकास्ता न परान्‌ नयन्ते [illegible] परिपूजयामि ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीँ श्री ँ उपाध्यायेभ्योनम स्वाहा, [illegible] पश्चिम
तरफ उपाध्याय पद स्थापनानि पूजा [illegible] चढावे [illegible]
चीमा, काला रंगना गोला काला [illegible] रत्न, काला [illegible]
लाडवा रानपट, २१ अरिष्ट रत्न [illegible] सर्व हाथमा
साधुपदनी पूजा आप्रमाणे कर

स्याध्यादि [illegible] मानस्य

वैराग्यम तर्वचर्नि प्रसिद्ध सत्य तपोद्वादशधा शरीरे।
येषामुदग्रयगतान सुगुतान् पनिशान् साधून् सदा तान्
पूजयामि ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सर्व साधुभ्यो नम स्वा आप्रमाणे कहीने उतर दिशा तरफ साधुपद स्थापनानी पूजा करे सर्व द्रव्य चढावे, पछे रकेबीमा सफेद गोळा, सफेद वस्त्र, सफेद ध्वजा, ६७ मोती, जल्पुष्प धूप दीपादि हाथमा लईने आप्रमाणे दर्शन पदनी पूजा कहे—

जिने द्रोक्ततमतत्वश्रद्धाल्लक्षणेदर्शने यजे।
मिथ्यात्वम थन शुद्धयस्रमीशाने नदूले ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सम्यक्त्वदर्शनाय नम स्वाहा, आ प्रमाणे कही इशान खुणे दर्शनपदनी स्थापना पूजा करे, पछे रकेबीमा ५१ मोती, सफेद गाळा, ध्वजा, वस्त्र, धूपदीप नैवेद्य सर्व अष्टद्रव्य हाथमा लईने आ प्रमाणे पजा कहे—

अशेषसद्द्रव्यपर्यायमवावभासकम्।
ज्ञानमाग्नेयपत्रस्थ पूजयामि हितावहम् ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं समस्तज्ञानाय नम, स्वाहा आ प्रमाणे कही अग्नि कोणमा ज्ञानपदस्थापनानी पूजा करे, सर्व द्रव्य चढावे, पछे रकेबीमा ७० मोती सफेद गोळा सफेद वस्त्र सफेद ध्वजा जलपुष्प धूपदीपादि हाथमा लईने चारित्र पदनी पूजा कहे—

स सामायिकादिर्भेदैश्चारित्र चारु पचधा।
सस्थापयामि पत्रार्थे पत्रेह नैरुते प्रमात् ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग् चारित्राय नम स्वाहा, आ प्रमाण कहीन नैरुत्य खुणामा चारित्र पद स्थापनानी पूजा करे, पछे रकेबीमा ' ० मोती सफद गोळा सफेद वस्त्र सफेद ध्वजा, तथा जल्पुष्प धूपदीपादि हाथमा लईने तपपदनी पूजा आ प्रमाणे करे—

द्विधाद्वादशधाभिन्न पूतैपत्रतप स्वयम
निधापयामि भक्त्यात्र वायव्या दिशि शर्मदम् ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं समस्त तपसे नम स्वाहा आ प्रमाणे कहीने वायव्य खुणामा तपपदनी स्थापना पूजा करे,

अथ अर्घ्यपूजा

नि स्वेदत्वादिदीव्यातिशयमयतनुं श्रीजिनेंद्रान् सुसिद्धान्
सम्यक्त्वादिप्रधानाष्टकमुख्यवरसारसौख्यसुगीन् ।
शास्त्राणि प्राणि रक्षाप्रवचना सुंदराण्यादि यत्र
तत् सिद्धयै पाठकानां मुनिपतिसहिता नर्चयाम्यघहानै ॥ १४ ॥
इत्थमष्टदलेपद्म पूरयेदर्हदादिभि ।
स्वाहान्ते प्रणवाद्यश्च पदैर्निर्माननिर्वृतये ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं असिआउसा सम्यग् दर्शनज्ञानचारित्र तपसेभ्यो ह्रीं श्रीं अर्हं परमेष्ठिने परमनाथ परमदेवाधिदेवाय परमार्हं परमानन्त चतुष्टय परमात्मने तुभ्य नम । आ प्रमाणे मन्त्रभणीने अर्घ्य आपे ।

इति प्रथम वलय मूलपूजाविधि ।

अथ द्वितीय वलयपूजा

प्रथम वलयमा एकमध्यमा चारदिशा,चारविदिशा, आ प्रमाणे अष्ट दलकमलना आकारे नव कोठा मंडलना मध्यमभागमा होय छे ते नी पुर्वोक्तविधिथी पूजा करे, पछे बीजा वलयमा १६ कोठा होय, जेमा एक कोठाना आतरे आठ कोठामा अवर्गादि आठ वर्ग स्थापना करे, तथा एक एक कोठामा वचमा माटी रहेल कोठामा अनाहत जेम-ॐ ह्रीं नमो अरिहंताण आनु पद स्थापना करे, पछे एक रकेबीमा साकर तथा लविंग तथा एक रकेबीमा मोटी द्राक्ष, लइने उभा रहेतु १ तथा ॐ ह्रीं नमो अरिहंताण कहीने साकर लविंग चढाववे तथा तथा आठवर्गमा द्राक्ष चढावे, अ, आ, इ, ई उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ए, ऐ, ओ औ, अं अः ॐ ह्रीं स्वर वर्गाय नम आठेकाणे १६ सोल द्राक्ष चढावे, २ ॐ ह्रीं नमो अरिहंताण साकर लविंग चढावे, ३॥ क ख, ग, घ ङ, ॐ ह्रीं व्यजन कवर्गाय नम १६ द्राक्ष चढावे ४। ॐ ह्रीं नमो अरिहंताण ७ च छ ज झ ञ, ॐ ह्रीं चवर्गाये नम ६ ॐ ह्रीं नमो अरिहंताण ७ ट ठ ड ढ ण, ॐ ह्रीं टवर्गाये नम ८ ॐ ह्रीं नमो अरिहंताण ९ तथदधन ॐ ह्रीं तवर्गाय नम १० ॐ ह्रीं नमो अरिहंताण ११ पफबभम, ॐ ह्रीं पवर्गाये नम १२ ॐ ह्रीं नमो अरिहंताण १३ यरलव, ॐ ह्रीं यवर्गाये नम १४ ॐ ह्रीं नमो अरिहंताण १५ शषसह ॐ ह्रीं शवर्गाये नम ॥ १६ ॥

पेग मयाथी पशगतुपि दरव वर्गमा भाउ सोल द्वार चढावे तथा वरल्पमा ३२ द्वार चढावे, तथा दासतदमा ३२ द्वार चढाव,
इति द्वितीयवलय पूजा

अथ तृतीयवलयलब्धि पद पूजन विधि ।

तीसायलयमा चारदिशा, चार विदिशा, आठ परमेष्ठि पदनी स्थापनाना आठ कोठारर अने आ आठ काठानी वचमा त्रण त्रण कस्याथारवें त्रण कस्याथारमा २४ स्थाना थाय, एक एक कोठामा बेबे लब्धिपद स्थापन कस्यायी २४ स्थानमा ४८ लब्धिपदनी स्थापना करवी आठ परमेष्टिपदमा ॐ ह्रीं परमेष्ठिने नम स्वाहा आ प्रमाणे आठ वयत कहीने आठ बीजोरा चढावे कारणके तेनो रगबीजोरा जेवाछे पछे लब्धिपदना नामयोगीने ४८ खारके चढावे, मामा ४८ लब्धिनो वर्णी प्रारेक जयो छे

१ ॐ ह्रीं अँर्हणमो अरिहताण
२ ॐ ह्रीं अँर्हणमो ओहिजिणाण
३ ॐ ह्रीं अँर्हणमो परमोहि जिणाण
४ ॐ ह्रीं अँर्हणमो सव्वोहि जिणाण
५ ॐ ह्रीं अँर्हणमो अणतोहि जिणाण
६ ॐ ह्रीं अँर्हणमो कुट्ठबुद्धिण
७ ॐ ह्रीं अँर्हणमो बीयबुद्धिण
८ ॐ ह्रीं अँर्हणमो पयाणुसारिण
९ ॐ ह्रीं अँर्हणमो आसीविसाण
१० ॐ ह्रीं अँर्हणमो दिट्ठीविसाण
११ ॐ ह्रीं अँर्हणमो सभिन्नसोयाण
१२ ॐ ह्रीं अँर्हणमोसयसंबुद्धाण
१३ ॐ ह्रीं अँर्हणमो पत्तेय बुद्धाण
१४ ॐ ह्रीं अँर्हणमो बोहियबुद्धाण
१५ ॐ ह्रीं अँर्हणमो रुज्जुमइण
१६ ॐ ह्रीं अँर्हणमो विउलमइण

१७ ॐ ह्रीं अर्हणमो दसपुव्वीण
१८ ॐ ह्रीं अर्हणमो चउदसपुव्वीण
१९ ॐ ह्रीं अर्हणमो अट्ठांगनिमित्तकुशलाण
२० ॐ ह्रीं अर्हणमो विउव्वण इड्ढिपत्ताण
२१ ॐ ह्रीं अर्हणमो विज्जाहराणा
२२ ॐ ह्रीं अर्हणमोचारण लद्धिण
२३ ॐ ह्रीं अर्हणमो पण्णास मणाण
२४ ॐ ह्रीं अर्हणमो आगास गामिण
२ ॐ ह्रीं अर्हणमो खीरासवीर्ण
२६ ॐ ह्रीं अर्हणमो सप्पिसवयाण
२७ ॐ ह्रीं अर्हणमो महुआसव्याण
२८ ॐ ह्रीं अर्हणमो अमियासव्याण
२९ ॐ ह्रीं अर्हणमो सिद्धायणाण
३० ॐ ह्रीं अर्हणमो भगवयामहद महावीरवद्धमाण
बुद्धरिसिण
३१ ॐ ह्रीं अर्हणमो उग्गतवाण
३२ ॐ ह्रीं अर्हणमो अणिरणमहाणसियाण
३३ ॐ ह्रीं अर्हणमो वद्धमाणाण
३४ ॐ ह्रीं अर्हणमो दित्तवाण
३ ॐ ह्रीं अर्हणमो तत्तवाण
३६ ॐ ह्रीं अर्हणमो महातवाण
३७ ॐ ह्रीं अर्हणमो घोरतवाण
३८ ॐ ह्रीं अर्हणमो घारगुणाण
३९ ॐ ह्रीं अर्हणमो घोरपरिक्कमाण
४० ॐ ह्रीं अर्हणमो घोरगुणबम्भयारिण
४१ ॐ ह्रीं अर्हणमो आमोसहिपत्ताणं
४२ ॐ ह्रीं अर्हणमो खल्लोसहिपत्ताण
४३ ॐ ह्रीं अर्हणमो जल्लोसहिपत्ताण
४४ ॐ ह्रीं अर्हणमो विप्पोसहिपत्ताण

॥ ॐ ह्रीं अर्हणमो सर्वोषधिप्राप्तानं
४॰ ॐ ह्रीं अर्हणमो मणबलीणं
४१ ॐ ह्रीं अर्हणमो वयणबलीणं
४८ ॐ ह्रीं अर्हणमो कायबलीणं

ॐ ह्रीं अर्हं अडयालर्द्धिपदेभ्यो नमः आवीरीते लब्धिपदना नाम बोलीने त्रीजा वलया, अने पाचमा वलयमा, भारक ४८, चढावी, पछे मण्डलना गलाना स्थानमा ह्रीं शब्दना स्थापना करवी, अने त्यांथी त्राढा त्रण वल्य, मंडलनी चार तरफ करवां, अने नीचे क्रौं लखवो छट्ठावल्यमाना आठ दिशामा आठ गुरुपादुकानी स्थापना करवी

१ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हत्पादुकेभ्यो नमः
२ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धपादुकेभ्यो नमः
३ ॐ ह्रीं श्रीं आचार्यपादुकेभ्यो नमः
४ ॐ ह्रीं श्रीं गुरुपादुकेभ्यो नमः
५ ॐ ह्रीं श्रीं परमगुरुपादुकेभ्यो नमः
६ ॐ ह्रीं श्रीं अदृष्टगुरुपादुकेभ्यो नमः
७ ॐ ह्रीं श्रीं अनन्तगुरुपादुकेभ्यो नमः
८ ॐ श्रीं अनन्तानन्तगुरुपादुकेभ्यो नमः

ॐ ह्रीं अष्टगुरुपादुकेभ्यो नमः स्वाहा

आ प्रमाणे बोलीने आठ दाडमः तथा शुरमाना आठ लाडवा चढावया

सातमा वलयमा जयादिदेवीयोनी स्थापना करवी.

१ ॐ ह्रीं जयायै नमः स्वाहा
५ ॐ ह्रीं जयन्त्यै नमः स्वाहा,
२ ॐ ह्रीं जम्भायै नमः स्वाहा
६ ॐ ह्रीं मोहायै नमः स्वाहा,
३ ॐ ह्रीं विजयायै नमः स्वाहा
७ ॐ ह्रीं अपराजितायै नमः स्वाहा
४ ॐ ह्रीं थंभायै नमः स्वाहा
८ ॐ ह्रीं अजायै नमः स्वाहा

आ प्रमाणे आठ नारंगो तथा शुदिना अथवा चणानु लाडु चढावया

आठमा वलयमा सोलविद्यादेवीनी स्थापना करवी

१ ॐ ह्रीं रोहिण्यै नमः
२ ॐ ह्रीं प्रज्ञप्त्यैनमः

३ ॐ ह्रीं वज्रशृंखलायै नम
४ ॐ ह्रीं वज्रांकुशायै नम
५ ॐ ह्रीं चक्रेश्वर्यै नम
६ ॐ ह्रीं पुरुषदत्तायै नम
७ ॐ ह्रीं कालै नम
८ ॐ ह्रीं महाकाल्यै नम
९ ॐ ह्रीं गार्य नम
१० ॐ ह्रीं गधाय नमः
११ ॐ ह्रीं सर्वास्त्र महाज्वालायै नमः
१२ ॐ ह्रीं मानव्यै नम
१३ ॐ ह्रीं वैरूट्यायै नम
१४ ॐ ह्रीं अच्छुप्तायै नम
१५ ॐ ह्रीं मानस्यै नम
१६ ॐ ह्रीं महामानस्यै नम

आ प्रमाणे बोलीने सोल नारंगी, तथा सोल मोतीचूरना लाडवा चढावे

नवमा वलयामा दाग पडशे २४ शासन देवी अेनी स्थापना करवी

१ ॐ चक्रेश्वर्यै नम
२ ॐ अजितबलायै नम
३ ॐ दुरितायै नम
४ ॐ काल्यै नम
५ ॐ महाकाल्यै नम
६ ॐ श्यामाय नम
७ ॐ शान्ताय नम
८ ॐ भृकुट्यै नम
९ ॐ सुतारकायै नम
१० ॐ अशोकायै नम
११ ॐ मानव्यै नम
१२ ॐ चण्डायै नम
१३ ॐ विदितायै नम
१४ ॐ अङ्कुशायै नम
१५ ॐ कन्दर्पायै नम
१६ ॐ निर्वाण्यै नम
१७ ॐ बलायै नम
१८ ॐ धारिण्यै नम
१९ ॐ धरणप्रियायै नम
२० ॐ नरदत्तायै नम
२१ ॐ गान्धार्य नम
२२ ॐ अम्बिकायै नम
२३ ॐ पद्मावत्यै नम
२४ ॐ सिद्धायिकायै नम

पछी दक्षिण दिशा २४ यक्षनी स्थापना करवी

आ प्रमाणे बोलीने घरस लगाडेली २४ सोपारी, चढाववी

१ ॐ गोमुखाय नम
२ ॐ महायक्षाय नम
३ ॐ त्रिमुखाय नम
४ ॐ यक्ष नायकाय नम
५ ॐ तुम्बरवे नम
६ ॐ कुसुमाय नम

७ ॐ मातगाय नम	१६ ॐ गरुडाय नम
८ ॐ विजयाय नम	१७ ॐ गधर्वाय नम
९ ॐ अजितनाय नम	१८ ॐ यक्षराजाय नम
१० ॐ ब्रह्मणे नम	१९ ॐ कुबेराय नम
११ ॐ यक्षराजाय नम	२० ॐ वरुणाय नम
१२ ॐ कुमाराय नम	२१ ॐ भृकुट्यै नम
१३ ॐ षण्मुखाय नम	२२ ॐ गोमेधाय नम
१४ ॐ पातालाय नम	२३ ॐ पार्श्वयक्षाय नम
१५ ॐ किन्नराय नम	२४ ॐ ब्रह्मशान्तये नम

आ प्रमाणे बोलीने २४ सोपारी चढावे

तथाचारे दिशामा चार द्वारपालनी स्थापना करे

पूर्वदिशामा—१ ॐ मुकुन्दाय नम दक्षिण दिशामा २ ॐ अंजनाय नम पश्चिमदिशामा ३ ॐ वामनाय नम उत्तर दिशामा ॐ पुष्पदताय नम आ प्रमाणे बोलीने चारे दिशामा पीला वणाता फाफडा तथा बलिबाकुला चढावना

पछे चार विदिशामा वीरनी स्थापना करवी

१ ॐ मणि भद्राय नम	३ ॐ कपिलाय नम
२ ॐ पूर्ण भद्रायनम	४ ॐ पिंगलाय नम

आ प्रमाणे बोलीने काला बलीबाकुला तथा काला तलना लाडू चढावना त्यारबाद पूर्ण कलशना आकारे करेल, सिद्धचक्रना गट्टाना ठेकाण नव निधाननी स्थापना करवी, तथा सोनु चादि आदि कलशाओमा गोरड माणु घालीने स्थापना करवी

१ ॐ नैसर्पिकायनम	५ ॐ महापद्माय नम
२ ॐ पाण्डुकाय नम	६ ॐ कालाय नम
३ ॐ पिंगलाय नम	७ ॐ महाकालाय नम
४ ॐ सर्वरत्नाय नम	८ ॐ माणवाय नम

९ ॐ शखाय नम

त्यारबाद कोलाफल (कारीफल) हाथमा लइने ॐ ह्रीं वि मलस्वामिने नम एम कहीने चढावबु पाछु बीजीवार कोला फल (कारीफल) हाथमा लइने ॐ ह्रीं क्षेत्रपालाय नम कहीने चढावबु, पछे त्रीजीवार कोलाफल हाथमा लइने ॐ ह्रीं चक्रेश्वर्यै नम कहीने चढावबु, पछे चोथी वार कोलाफल हाथमा लइने ॐ ह्रीं सिद्धायिकाय नम कहीने चढावबु त्यारबाद दशदिशाओमा दशदिग्पालनी स्थापना करवी अने आपणी यथा शक्ति पण प्रमाणे वस्त्र नैवेद्य चढावया अथवा बधाने समान चढावबु

दशदिग्पाल पूजा

१ ॐ इन्द्राय नम कनक वर्ण—पीलुवस्त्र चन्दन केशर, धूप दीप तथा द्राक्ष, पान सोपारी, रोकड नाणु आदि द्रव्य चढाववा, २ अग्निकोणमा ॐ अग्नये नम लाल वस्त्र तथा रोकड नाणु धूप दीप नैवेद्य जल चंदन चढावबु ३ दक्षिण दिशामा ॐ यमाय नम काला रंगनु वस्त्र, तथा रोकड नाणु धूप दीप नैवेद्य जल चंदन चढावबु ४ नैऋत्यकुणमा धुसर वर्णनु वस्त्र तथा रोकड नाणु धुप दीप नैवेद्य जल चंदन चढावबु ५ पश्चिम दिशामा ॐ वरुणाय नम धुसरवर्ण वस्त्र, तथा धुसर वर्णनु नैवेद्य धुप दीप जल चंदन चढावबु ६ वायव्य कुणमा ॐ वायवे नम मधुवर्णनु वस्त्र तथा धुप दीप नैवेद्य जल चंदन चढा वया ७ उत्तर दिशामा ॐ कुबेराय नम सफेद वस्त्र तथा धुप दीप नैवेद्य जल चंदन रोकड नाणु चढाववा ८ इशान कोणमा ॐ ईशानाय नम सफेद वस्त्र, रोकड नाणु धुप दीप नैवेद्य जल चंदन चढावबु ९ अधो दिशि ॐ नागाय नम, सफेद वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चन्दन रोकड नाणु चढावबु १० उर्ध्व दिशामा ॐ ब्रह्मणे नम सफेद वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चंदन रोकड नाणु चढावबु

त्यारबाद निचे पडघी स्थान नवग्रहनी स्थापना करवी

नवग्रह स्थापना

१ ॐ सूर्याय नमः लाल वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चंदन सर्व द्रव्य रोकड नाणु चढाववु २ ॐ सोमाय नमः सफेद वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चदन सर्व द्रव्य रोकड नाणु चढाववु ३ ॐ भोमाय नमः लाल वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चदन नैवेद्य सर्व द्रव्य तथा रोकड नाणु चढाववु ४ ॐ बुधाय नमः लीला रंगनु वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चदन तथा रोकड नाणु चढाववु ५ ॐ बृहस्पतये नमः पीळु वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चदन रोकड नाणु चढाववु ६ ॐ शुक्राय नमः सफेद वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चदन रोकड नाणु चढाववु ७ ॐ शनिश्चराय नमः असमानी रंगनु वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चदन तथा रोकड नाणु चढाववु ८ ॐ राहवे नमः काळा रंगनु वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चदन तथा रोकड नाणु चढाववु ९ ॐ केतवे नमः पचरंगी वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चदन रोकड नाणु चढाववु

आ प्रमाणे पूजा विधि करीने पछे नवपदजीनी पूजाकहे भणावे, तथा नवपदजीना आरती उतारे पछे नवपदजीनु चैत्यवन्दन करे,

उप्पन्न सन्नाण महोमयाणं सप्पाडिहेरासणसंठियाणं ।
सद् सन्नाण दियमाणंदियाणं नमो नमो होउ सया जिणाणं ॥१॥

जो धुरिसिरिअरिहंतमूलदढ पीढपइट्ठिओ सिद्धसूरि उवज्झाय साहुचिहुं साहसाहिओ । दंसण नाण चारित्त तवहि पडसा हे सुंदरु, तत्तक्खर सरवग्ग लद्धिगुरुपयदलडंबरु, दिसिवाल जक्खजक्खिणी पमुहसुर कुसुमेहिं अलंकियओ सो सिद्धचक्क गुरु कप्पतरु अम्ह मनवंछिय फलदियओ ॥ २ ॥ जंकिंचि नमुथुण जावंति० जावन० नमोऽर्हत्० उवसग्गहरं० स्तवन जयवीयराय अरिहंत चे० १ नवकारनो काउसग्ग थोय नवपदनी कहेवी पछे गुरुनी पासे आवीने वासक्षेपथी ज्ञान पूजा करे, रोकड नाणु चढावे, तथा शक्ति प्रमाणे साधर्मिक वात्सल्य करे—अनाथ आश्रितोनु पोषण करे

इति श्री नवपद मंडल पूजन विधि

आ ओळी—नवपदनी तपस्या करे श्रीमत—जैन गृहस्थकरे तो तेणे ■ छ महिने आ मंडलनी पूजा विधि, उपर कहेल प्रमाणे करे तथा तपस्या साढाचार वष करवी, पूण थये उद्यापन नव नव उपकरण, रामघा, यथाशक्ति उद्यापन द्रव्य क्षेत्र भाव थी करे परतु अनाथ श्रावकोनी रक्षाजिर्णोद्धार आवा तप निमिते करता रहेवु

दशदिग्पाल निमर्जन विधि

ॐ नमो इन्द्राय, पुर्वदिग् अधिष्टिाय, ऐरावण वाहनाय सहस्र नेत्राय वज्रायुधाय सपरिवाराय अस्मिन् जम्बूद्विपे अमुक नगरे, अमुकक्षेत्रे अमुक महालये, सर्वोपद्रवाद्रक्ष बलिं पुजा गृह्न २ स्वस्थाने गच्छ २ स्वाहा ॐ इन्द्राय नम , २ आग्नेयुणमा ॐ नमो अग्नि मूतये शक्ति हस्ताय सायु० सवा० सपरि० अस्मि० अमुक० अमुक० सर्वोपद्रवाद् बलिं पूजा गृह्न २ स्वथाने गच्छ २ स्वाहा ॐ अग्नि मूतये नम ३ दक्षिणदिशामा ॐ नमो यमाय, दक्षिणदिग् अधिष्ट काय, महिषवाहनाय, दण्डआयुधाय, कृष्णमूतये सायु० सवा० सपरि० अस्मि० सर्वोपद्रवाद् रक्ष बलि पूजा गृह्न २ स्वस्थाने गच्छ २ स्वाहा ॐ यमाय नम ४ नैरुतखुणमां ॐ नमो नैरुताय, खड्गहस्ताय सायु० सवा० सपरि० अस्मि० अमुक० अमुक० सर्वोपद्रवाद् बलिं पुजा गृह्न २ स्वस्थाने गच्छ २ स्वाहा ॐ नैरुताय नम, ५ पश्चिम दिशामा ॐ नमो वरुणाय पश्चिमदिग् अधिष्टाय मकर वाहनाय, सायु० सवा० सपरि० अस्मि० अमुक० अमुक० सर्वोपद्रवाद्, बलिं पुजा गृह्न २ स्वस्थाने गच्छ २ स्वाहा ॐ वरुणाय नम ६ वायव खुणमा ॐ नमो वायवे वाय वाधिपतये, ध्वजहस्ताय हरिनवाहनाय, सायु० सवा० सपरि० अस्मि० अमुक० अमुक० सर्वोप० बलि पुजा गृह्न २ स्वस्थाने गच्छ २ स्वाहा ॐ वायवे नम, ७ उत्तरदिशामा ॐ नमो धनदाय, उत्तरदिग् अधिष्टायकाय, नरवाहनाय, गदाहस्ताय, सायु०

नवग्रह स्थापना

१ ॐ सूर्याय नमः लाल वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चंदन सर्व द्रव्य रोकड नाणु चढावयु २ ॐ सोमाय नमः सफेद वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चंदन सघळा रोकड नाणु चढावयु ३ ॐ भौमाय नमः लाल वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चंदन नैवेद्य सर्व द्रव्य तथा रोकड नाणु चढावयु ४ ॐ बुधाय नमः लीला रंगनु वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चंदन तथा रोकड नाणु चढावयु ५ ॐ बृहस्पतये नमः पीळु वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चंदन रोकड नाणु चढावयु ६ ॐ शुक्राय नमः सफेद वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चंदन रोकड नाणु चढावयु ७ ॐ शनिश्चराय नमः असमानी रंगनु वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चंदन तथा रोकड नाणु चढावयु ८ ॐ राहवे नमः काळा रंगनु वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चंदन तथा रोकड नाणु चढावयु ९ ॐ केतवे नमः पचरंगी वस्त्र धुप दीप नैवेद्य जल चंदन रोकड नाणु चढावयु

आ प्रमाणे यथा विधि करीने पछे नवपदजीनी पूजाओ-भणावे, तथा नवपदजीनी आरती उतारे पछे नवपदजीनु चैत्यवंदन करे,

उप्पन्न सन्नाण महोमयाणं सप्पाडिहेरासणसंठियाणं ।

सद्देसणाणंदियसज्जणाणं नमो नमो होउ सया जिणाणं ॥१॥

जो धुरिसिरिअरिहंतमूलदढ पेढपइट्ठिओ सिद्धसूरि उवज्झाय साहुचिहुं साहगरिट्ठओ । दंसण नाण चरित्त तवहि पडसाह सुंदरु, तत्तक्खर सरवग्ग लद्धिगुरुपयदलडंबरु, जयस जक्खणी पमुहसुर कुसुमेहिं अलंकियओ सोसिद्धचक्क गुरु कप्पतरु अह्म मनवंछिय दियओ ॥ २ ॥ जंकिंचि नमुथ्थुणं जावंति॰ जावंत॰ नमोऽर्हत्॰ उवसग्गहरं॰ स्तवन जयवीयराय अरिहंत चेइ॰ १ नवकारनोकाउसग्ग थोय नवपदनी कहेवी पछे गुरुनी पासे आवीने वासक्षेपथी ज्ञान पूजा करे, रोकड नाणु चढावे, तथा शक्ति प्रमाणे सार्धर्मिक वात्सल्य करे—अनाथ आश्रितोनु पोषण करे

इति श्री नवपद मंडल पूजन विधि

२ ॥ एम चही प्रभुना जानुए पूजा करीए ॥ गाथा ॥ निम्मलनाणपया-
सकर निम्मल गुण सरस ॥ निम्मल धर्मोपदेशकर, सो परमप्पा धन्न
॥ ३ ॥ ढाल ॥ लोका लोक प्रकाशक नाणी, भविजन तारण
जेहनी वाणी ॥ परमानंद तणी निशाणी, तसु भगते मुज मति
ठहराणी ॥ कुसुमांजलि मेलो नेम जिणंदा ॥ तो० ॥ कु०
॥ ३ ॥ एम चही प्रभुना बे हाथे पूजा करीए ॥ गाथा ॥ जे सिद्धा
सिज्झंति जे सिज्झिस्संति अणंत ॥ जसु आलंबन ठविय मणसो
सेवो अरिहंत ॥ ४ ॥ ढाल ॥ शिवसुख कारण जेह त्रिकाले,
सम परिणामे जगत निहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग देखाडे, इंद्रादिक
जसु चरण पखाले ॥ कुसुमांजलि मेलो पास जिणंदा ॥ तो० ॥ कु०
॥ ४ ॥ एम चही प्रभुना खभाए पूजा करीए ॥ गाथा ॥ सम्मदिट्ठी
देस जय साहु साहुणी सार ॥ आचारिज उवज्झाय मुणि, जो
निम्मल आधार ॥ १ ॥ ढाल ॥ चउविह संघे जे मन धार्युं ॥
मोक्ष तणुं कारण निरधार्युं ॥ विविह कुसुम वर जाति गहेवी,
तस चरणे प्रणमन ठवेवी ॥ कुसुमांजलि मेलो वीर जिणंदा ॥
तो० ॥ ५ ॥ एम चहि प्रभुने मस्तके पूजा करीए ॥ इति
गाथा ॥

छंद ॥ सयल जिनवर सयल जिनवर । नमिय
कल्लाणकविहि संठविय करिस धम्म सुपवित्त ॥
इग सत्तरि तित्थयर, एक समय विहरंति महीयल ॥
इगवीस जिण जन्म समय इगविस ॥ भत्तिय भावे
सुअनीरा ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

सचा० सपरि० असिम० अमु० अमु० सर्वोप० बलि पुजा गृह २ स्वस्थाने गच्छ ३ स्वाहा ॐ चन्द्राय नम ८ ईशान कुणमा ॐ नमो ईशानाय, त्रिशूल हस्ताय ईशानाधिपतये वृषभवाहनाय स यु० सचा० सपरि० असिम० अमु० अमु० सर्वो० बलि पुजा गृह २ स्वस्थाने गच्छ २ स्वाहा ॐ ईशानाय नम ९ उर्ध्व दिशामां ॐ नमो ब्रह्मणे, चतुर्हंसवाहनाय, उर्ध्वलोकाधिष्ठायकाय सायु० सचा० सपरि० असिम० अमुक० अमुक० सर्वो० बलि पुजा गृह २ स्वस्थाने गच्छ २ स्वाहा ॐ नमो ब्रह्मणे १० अधो लोकमां ॐ नमो नागाय पातालनिवासाय, पद्मवाहनाय, सायु० सचा० सपरि० असिम० अमु० अमु० सर्वोप० बलि पुजा गृह २ स्वस्थाने गच्छ २ स्वाहा, ॐ नागाय नम

इति दश दिग्पालविसर्जनविधि

॥ श्री देवचन्द्रजी कृत स्नात्रपूजा प्रारभ्यते ॥

॥ पानडी गाथा ॥ ढाल पहेली ॥

दोहा ॥ चउतिसे अतिशयजुओ वचनातिशय जुत्त ॥ सोपरमेसर देखी भवि, सिंहासन संयुत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिंहासन बेठा जग भाण, देखी भविक जन गुण मणि खाण ॥ जे दीठे तुज निर्मल नाण लहीए परम महोदय ठाण ॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा तोरा चरण कमल सेवा चोसठ इंदा ॥ कु० ॥ १ ॥ चोवीस वैरागी, चावीस सोभागी, जिणंदा ॥ कु० ॥ यम कहीं प्रभुना चरणे पुजा करीए ॥ गाथा ॥ जो नियगुण पज्जव रम्यो, तसु अनुभव एगत ॥ सुद्ध पुग्गल आरोपता, जो तसु रंग निरत्त ॥ २ ॥ ढाल ॥ जो निज आतम गुण आणंदी, पुग्गल संग जेह अफंदी ॥ जे परमेसर निज पद लीन पूजो प्रमाणमा मग्न अदीन ॥ कुसुमांजलि मेलो शांति जिणंदा ॥ ता० ॥ कु० ॥

२॥ एम कही प्रभुना जानुए पूजा करीए ॥ गाथा ॥ निम्मलनाणपयास कर निम्मल गुण संपन्न ॥ निम्मल धम्मोवएसयर, सो परमप्पा धन्न ॥३॥ ढाल ॥ लोका लोक प्रकाशक नाणी, भविजन तारण जेहनी वाणी ॥ परमानंद तणी निशाणी, तसु भगते मुज मति ठहराणी ॥ कुसुमांजलि मेलो नेम जिणंदा ॥ तो० ॥ कु० ॥३॥ एम कही प्रभुना बे हाथे पूजा करीए ॥ गाथा ॥ जे सिद्धा सिज्झंति जे सिज्झिस्संति अणंत ॥ जसु आलंबन ठविय मणसो सेवो अरिहंत ॥४॥ ढाल ॥ शिवसुख कारण जेह त्रिकाले, सम परिणामे जगत नीहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग देखाडे, इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ कुसुमांजलि मेलो पास जिणंदा ॥ तो० ॥ कु० ॥४॥ एम कही प्रभुना खभाए पूजा करीए ॥ गाथा ॥ सम्मदिट्ठी देस जय, साहु साहुणी सार ॥ आचारिज उवज्झाय मुणि, जो निम्मल आधार ॥५॥ ढाल ॥ चउविह संघे जे मन धार्यो ॥ मोक्ष तणुं कारण निरधार्यो ॥ विविध कुसुम वर जाति गहेवी, तसु चरण प्रणमंत ठवेवी ॥ कुसुमांजलि मेलो वीर जिणंदा ॥ तो० ॥ क० ॥५॥ एम कहि प्रभुने मस्तके पूजा करीए ॥ इति पाखडी गाथा ॥

॥ वस्तु छंद ॥ सयल जिनवर सयल जिनवर । नमिय मनरंग, कल्लाणकविहि संठविय, करिस धम्म सुपवित्त ॥ सुंदर सय इग सत्तरि तित्थयर, एक समय विहरति महीयल ॥ चवण समय इगवीस जिण जम्म समय इगवीस ॥ भत्तिय भावे पूजा करो नय सुजगीश ॥१॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ एक दिन अचिरा हुलरावती ॥ ए देशी ॥

॥ भव त्रीजे समकित गुण रम्या, जिनभक्ति प्रमुख गुण परिणम्या तजी इंद्रियसुख आशंसना करी स्थानक वीशनी सेवना ॥१॥ अति राग प्रशस्त प्रभावता मन भावना एहवी भावता ॥ सवि जीव करु शासनरसी, इसी भावदया मन उल्लसी ॥२॥ लही परिणाम एहवुं भलुं, नीपजावी जिनपद निर्मलुं ॥ आयुबंध वचे एक भव करी

श्रद्धा संवेग ते थिर थयो ॥३॥ त्याथी चवीय ल्हे नरभव उदार, भरत तेम ऐरवतेज सार ॥ महाविदेहे विजये वर प्रधान, मध्य खंडे अव तरे जिन निधान ॥ ४ ॥

॥ अथ सुपनानी ढाल त्रीजी ॥

॥ पुण्ये सुपनह देखे, मन माहे हर्ष विशेषे ॥ गजवर उज्ज्वल सुंदर, निर्मल वृषभ मनोहर ॥ १ ॥ निर्भय केसरी सिंह, लक्ष्मी अतिहीं अबीह ॥ अनुपम फूलनी माल, निर्मल शशी सुकुमाल ॥ २॥ तेजे तरणि अति दीपे, इंद्रध्वजा जग व्यापे ॥ पूरण कलश पंडूर, पद्म सरोवर पूर ॥ ३ ॥ अग्यारमे रयणायर, देखे माता गुण सायर॥ बारमे भुवन विमान, तेरमे अनुपम रत्ननिधान ॥ ४ ॥ अग्निशिखा निरधूम, देखे माताजी अनुपम ॥ हर्षी रायने भाखे, राजा अरथ प्रकाशे ॥ ॥ जगपति जिनवर सुखकर, होशे पुत्र मनोहर ॥ इंद्रा दिक जसु नमशे सकल मनोरथ फलशे ॥ ६ ॥ वस्तु छंद ॥ पुण्य उदय २, उपना जिननाह, माता तव रयणी समे, देखे सुपन हरखंती जागीय ॥ सुपन कही निज कतने, सुपन अरथ सांभली सोभागीय । त्रिभुवन तिलक महागुणी, होशे पुत्र निधान । इंद्रादिक जसु पाय नमी, करशे सिद्धि विमान ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ चंद्राउलानी देशीमा ॥

॥ सोहमपति आसन कपीयो ए, देइ अवधि मन आणंदियो ए ॥ निजआतम निर्मल करण काज, भवजलतारण प्रगट्यो जहाज ॥ १ ॥ भवभडनी पातक सयनाह केवल नाणाइय गुण अगाह॥ शिवसाधन गुण अंकुरो जेह, कारण उलट्यो आसाढो मेह ॥ २ ॥ हरख विकसी तव रामराय, वलयादिकमा निज तनु न माय ॥ सिंहासनथी उठ्यो सुरिंद प्रणमतो जिन आनंदकंद ॥ ३ ॥ सग अम पय सामो आवी, त य, करी अंजलि प्रणमीय मत्थ ॥ मुखे भाखे ए क्षण आज सार, तिय लोय पहु दीठो उदार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुरलोय देव, विष यानल तापित तुम सवेव ॥ तसु शांतिकरण जलधर समान मिथ्या विष चूरण गरुडवान ॥ ५ ॥ ते देव सकल तारण समरथ प्रगट्यो

तसु प्रमणी हुवा सनाथ ॥ एम जपी शक्र स्तव करेनि, तव देव देवी हरख सुणेनि ॥ ६ ॥ गावे तव रभा गीत गान, सुरलोक हुवो मगल निघान नरक्षेत्रे आरज वश ठाम जिनराज चवे सुर हर्ष घाम ॥ ७ ॥ पिता माता घरे उत्सव थशेय, जिनशासन मगल अति विशेष ॥ सुरपति देवादिक हर्ष सग, सयमश्री जनने उमग ॥ ८ ॥ शुभ वेला लगने तीर्थनाथ जनम्या इद्रादिक हर्ष साथ ॥ सुख पाम्या त्रिभुन सर्व जीव, वधाइ वधाइ थइ सदीव ॥ ९ ॥

॥ ढाल पाचमी ॥

॥ श्री शाति जिननो कलश कहीशु, प्रेम सागर पूर
॥ ए देशी ॥

॥ श्री तीर्थपतिनु कलश मज्जन, गाइए सुखकार
नरखित्त मडण दुह विहडण भविक मन आधार ॥
तिहा राय राणा हर्ष उत्सव, थयो जग जयकार ॥
दिशिकुमरि अवधि विशेष जाणी लह्यो हर्ष अपार ॥ १ ॥
निय अमर अमरी सग कुमरी गावती गुण छद ॥
जिन जननी पासे आवी पहोती गहगहती आणद ॥
हे माय ! तें जिनराज जायो शुचि वधायो रम्म ॥
अम जन्म निम्मल करण कारण, करीश सूइकम्म ॥ २ ॥
तिहा भूमि शोधन दीप दपण वायजीवण धार ॥
तिहा करीय कदली गेह जिनवर जननी मज्जनकार ॥
वर राखडी जिनपाणि बाधी दीए एम आशीष ॥
जुग कोडा कोडी चिर जीवो, धर्मदायक ईश ॥ ३ ॥
॥ ढाल छठी ॥ एकवीशानी ॥

॥ जगनायकजी, त्रिभुवन जन हितकार ए ॥
परमातजी, चिदानद घन सार ए ॥
॥ ए देशी ॥

॥ ढाल ॥ जिण रयणीमी दश दिशि उज्वलता धर ॥ शुभ लग्ने

जी ज्योतिष चक्र ते संचर ॥ जिन जनस्याजी जेण अवसर माता घर॥ तेणे अवसरनी इद्रासन पण थरहरे ॥ त्रुटक थरहर आसन इद्र चिंत, कोण अवसर ए थया ॥ जिन जन्म उत्सव काल जाणी, अतिहा आनंद उपन्यो ॥ निज सिद्धि संपत्ति हेतु निजवर, जाणी भक्ते उमह्यो ॥ विकस्वित वदन प्रमोद वधते देवनायक गहगह्यो ॥ १ ॥ ढाल ॥ तब सुरपतिजी घंटानाद वजावय ए ॥ सुरलोकेजी घोषण एह दिवराव ए ॥ नरक्षेत्रेजी जिनवर जन्म हुउ अछ ॥ तसु भगतेजी, सुरपति मंदरगिरि गच्छे ॥ त्रुटक ॥ गच्छंते मंदर शिखर उपर भुवन जीवन जिन तणो ॥ जिन जन्म उत्सव करण कारण आवजो सवि सुरगणो तुम शुद्ध समकित थाशे निर्मल, देवाधिदेव निहालता ॥ आपणा पातिक सर्व जाशे नाथ चरण पखालता ॥ २ ॥ ढाल ॥ एम सांभली जी सुरवर कोडी बहु मली ॥ जिनवंदनजी मंदरगिरि सामा चली ॥ सोहमपतिजी, जिन जननी घर आवीया ॥ जिन माताजी, वंदी स्वामी वधावीया ॥ त्रुटक ॥ वधावीया जिन हर्ष बहुले धन्य हुं कृतपुण्य ए ॥ त्रैलोक्यनायक देव दीठो, मुज समो कोण अन्य ए ॥ हे जगतजननी ! पुत्र तुमचो मेरु मज्जन वर करी ! उत्संग तुमचे वलीय थापीश, आतमा पुण्ये भरी ॥ ३ ॥ ढाल ॥ सुरनायकजी जिन निज करकमले ठव्या ॥ पंच रूपेजी अतिशे महिमाए स्तव्या ॥ नाटक विधिजी तव वर्तीया आगल वदे ॥ सुर कोडीनी जिनदर्शने उमहे ॥ त्रुटक ॥ सुरकोडाकोडी नाचती वली नाथ शुचि गुण गावता ॥ अप्सरा कोडी हाथ जोडी, हाव भाव दखावती ॥ जयो जयो तु जिनराज जगगुरु, एम दे आशीष ए ॥ अम त्राण शरण आधार जीवन, एक तु जगदीश ए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ सुरगिरिवरजी पांडुक वनमें चिहु दिशे ॥ गिरि शिल परजी, सिंहासन सासय वसे॥ तिहा आणीनी शक्रे जिन खोले ग्रहा ॥ चौसठेजी, तिहा सुरपति आवी रह्या ॥ त्रुटक ॥ आवीया सुरपति सर्व भक्ते कलश श्रेणी बनाव ए ॥ सिद्धार्थ प्रमुख तीर्थ औषधि, सव वस्तु अणाव ए ॥ अच्युअ पति तिहा हुकम कीनो देव कोडाकोडीने ॥ जिन मज्जनारथ नीर लावो, सर्वे सुर कर जोडीने ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ शांतिने वारणे इंद्र कलशा भरे ॥ ए देशी ॥

॥ आमसाधन रसी देवकोडी हसी उलसीने धसी क्षीरसागर दिशी ॥ पउमदह आदि दह गंग पमुहा नइ, तीर्थजल अमलेवा मणी ते गइ ॥ १ ॥ जाति अड कलशकरी सहस अठोतरा, छत्र चामर सिंहासण शुभतरा ॥ उपकरण पुष्फ चगेरी पमुहा सवे, आगमे भाषीया तेम आणी ठवे ॥ २ ॥ तीर्थजल मर्धय कर कलशा करी देवता, गायता भावता धर्मउन्नतिरता ॥ तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता धन्य अम शक्ति शुचि भक्ति एम भावता ॥ ३ ॥ समकित बीज निज आत्म आरोपता, कलश पाणी मिशे भक्तिजल सिंचता ॥ मेरुसिहरोपरे सर्व आव्या वही शक्र उत्संग जिन देखी मन गहगही ॥ ४ ॥

॥ वस्तु छंद ॥ हहो देवा हमे देवा अणाइ कालंमि, अदिठ पुव्वो तिलोयतारणो तिलोयपहु मिच्छत्तमोह विद्धसणो ॥ अणाइ तिण्हा विणासणो, देवाहिदेवो दिठ बोहिय कामेहिं ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ एम पभणंत वणभवण जोइसरा देव वेमा णिया भक्ति धम्मायरा ॥ केवि कप्पठिया केवि मित्ताणुगा, केवि वर रमणी वयणेण अइ उच्छुगा ॥ ६ ॥

॥ वस्तु छंद ॥ तथा अच्चुय इंद आदेस कर जोडी सवि देवगण, लेय कलस आदेस पामीय ॥ अद्भुत रूप सरूप जुअ, कवण एह उत्तंगे सामिय ॥ इंद कहे जगतारणो, पारग अम परमेस, नायक दायक धम्मनिहि, करीए तसु अभिसेस ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

तीर्थकमलदल उदक भरीने, पुष्करसागर आवे ॥ ए देशी ॥

॥ पूरण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगे नामे ॥ आतम निर्मल भाव करता, वधते शुभ परिणामे ॥ अच्चुतादिक सुरपतिने मज्जन, लोकपाल लोकांत, सामानिक इंद्राणी पमुहा,

१

एम अभिषेक करंत ॥ १ ॥ गाहा ॥ तव ईसाण सुरिंदो, सक्कं पभणेई, करइ सुपसाउ ॥ तुम अंके महुप्पाहो, खणमित्त अम्ह अप्पेह ॥ २ ॥ ता सिरिंदा पभणेइ, साहम्मीव-छलमि बहु लाहो ॥ आणा पवं तेण गिण्हिह-चो उक्याच्यामो ॥ ३ ॥ एम कही मन स्नात्रीया कलश ढाले अने मुखथी नीचे प्रमाणे पाठ कहे ॥

॥ ढाल तेहीज ॥ सोहम सुरपति वृषभ रूप करी, न्हवण करे प्रभु अंग ॥ करीय विलेपण पुष्पमाल ठवी वर आभरण अभंग ॥ तव सुरवर बहु जय जयरव करी, नाचे धरी आणंद ॥ मोक्षमार्ग सारथपति पाम्या, भाजशुं हवे भवफंद ॥ ४ ॥ कोडी बत्रीश सोवन उवारी, वाजत वर नादे ॥ सुरपति संघ अमर श्री प्रभुने, जननीने सुप्रसादे ॥ आणी थापी एम पयपे, अम निस्तरिया आज ॥ पुत्र तुमारे धणी रे हमारा, तारण तरण जहाज ॥ ५ ॥ मात जतन करी राखजो एहने, तुम सुत अम आधार ॥ सुरपति भक्ति सहित नंदीश्वर करे जिनभक्ति उदार ॥ निय निय कप्प गया सवि निर्जर, कहता प्रभु गुणसागर ॥ दीक्षा केवलज्ञान कल्याणक इच्छा चित्त मझार ॥ ६ ॥ खरतरगच्छ जिन आणारागी, राजसागर उवज्झाय ॥ ज्ञान धर्म दीपचंद सुपाठक, सुगुरु तणे सुपसाय ॥ देवचंद्र जिनभक्ते गायो, जन्ममहोत्सव छंद ॥ बोध बीज अंकुरो उगम्यो, संघ सकल आनंद ॥ ७ ॥

॥ कलश ॥ राग धन्याश्री ॥ एम पूजा भक्ति करो, आतमहित काज ॥ तजीय विभाव निज भावमें, रमता शिवराज ॥ एम० ॥ १ ॥ काल अनंत जे प्रभु हुआ होशे जेह जिणंद ॥ संपय सीमंधर प्रभु केवलनाण दिणंद ॥ एम० ॥ २ ॥ जन्ममहोत्सव एणी परे, श्रावक रुचिवंत ॥ विरचे जिनप्रतिमा तणो, अनुमोदन खंत ॥ एम० ॥ ३ ॥ देवचंद्र जिनपूजना, करता भवपार ॥ जिनपडिमा जिनसारखी कही सूत्र मझार ॥ एम० ॥ ४ ॥ इति पंडितप्रवर देवचंद्रजीकृत स्नात्रपूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ ॥

॥ नवपद लघुपूजा ॥

॥ प्रथम अरिहंतपदपूजा ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ परम मंत्र प्रणमी करी; तास धरी उर ध्यान ॥
अरिहंतपद पूजा करो, निज निज शक्ति प्रमाण ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ उप्पन्नसन्नाणमहोमयाणं, सप्पाडिहेरासणसंठियाणं ॥ सद्देसणाणंदियसज्जणाणं नमो नमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥ नमोऽनंतसंतप्रमोदप्रदान,—प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय ॥ थया जेहना ध्यानथी सौख्यभाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपाल राजा ॥ २ ॥ कर्या कर्म दुर्मर्म चकचूर जेणे, भला भव्य नव पद ध्यानेन तेणे ॥ करी पूजना भव्य भावे त्रिकाले, सदा वासीयो आतमा तेणे काले ॥ ३ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदये करीने, दीए देशना भव्यने हित धरीने ॥ सदा आठ महापाडिहारे समेता, सुरेशे नरेशे स्तव्या ब्रह्मपुत्ता ॥ ४ ॥ कर्या घातिया कर्म चारे अलग्गा, भवोपग्रही चार जे छे विलग्गा ॥ जगत् पंच कल्याणक सौख्य पामे, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षकामे ॥ ॥

॥ ढाल ॥

॥ त्रीज भव वरथिक करी, वीश स्थानक तप करीने रे ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधीयु, समकित शुद्ध मन धरीने रे ॥ १ ॥ अरिहंतपद नित वंदीए, करम कठिन जिम छंडीए रे ॥ ए आंकणी ॥ जनम कल्याणकने दिने, नारकी सुखीया थावे रे ॥ मति श्रुत अवधि विराजता, जसु उपम कोइ नावे रे ॥ अ० ॥ २ ॥ दीक्षा लीधी शुभ मने, मन पर्यव आदरीयु रे ॥ तप करी कर्म खपावीने, ततक्षिण केवल वरीयु रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ चउतीस अतिशय

शोभता, वाणी गुण पैंतीशा रे ॥ अढ्दश दोश रहित थइ पूरे मघ जगीशो रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ तन मन वयण लगाने, अरिहंत पद आराते रे ॥ ते नर निश्चयथी सही अरिहंतपदवी साधे रे ॥ अरिहंतपद नितवंदीए ॥ ५ ॥

॥ श्लोक ॥ अथाष्टदलमध्यात्ज—कणिकाया जिनेश्वरान् ॥ अभि भुतलसद्राधा नाभूत स्थापयाम्यहन् ॥ १ ॥ नि शेषदोषधनधूम केतू—नपारम्मारसमुद्रसतून् ॥ यजे समस्तातिशयैकहेतून् श्री मज्जिनान् पुजकणिकायाम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धपदपूजा ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दुजी पूजा सिद्धकी कीजे दिल खुशियाल ॥
कर्म अशुभ दूरे टले, फल मनोरथमाल ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ सिद्ध णमाणसुरम रयाण णमो णमो णंतचउक्कयाणं, समम कम्माक्खयकारयाण अमनरादुक्खदुनिवारयाण ॥ १ ॥ करी आठ कर्म क्षय पार पाम्या जरा जन्म मरणादि भय जेण वाम्या ॥ निरावरण जे आत्मरूपे प्रसिद्धा थया पार [illegible] ॥
त्रिभागोनदेहावगाहातमदेशा [illegible]
मोक्षश्रिता ज्योतिरूपा [illegible] ॥

॥ श्लोक ॥ तस्य पूर्वदले सिद्धान् सम्यक्त्वादिगुणात्मकान् ॥ निःश्रेयसपदं प्राप्तान् विदधे भक्तिनिर्भरः ॥ १ ॥ तत्पूजयन्ते परितः प्रणष्ट—दुष्टाष्टकर्मानधिगम्य शुद्धिम् प्राप्तप्रधान् सिद्धिमनंतयोधान्, सिद्धान्यजे घातिकरालपाणाम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यो नमः ॥ इति ॥ २ ॥

॥ अथ आचार्यपदपूजा ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे आचारज पद तणी पूजा करो निदोष ॥
मोह तिमिर दुरे, हरे सुक्षे भाव अदोष ॥ १ ॥

॥ छन्द ॥ सूरिणदुरीस्यचुग्गहाण, णमो णमो सूरसमप्पहाणं ॥ सद्देसणादाणसमायराण, अखंड छत्तीस गुणायराण ॥ १ ॥ नमु सूरि राजा सदा तत्वताजा, जिनेन्द्रागमे प्रौढ साम्राज्यभाजा ॥ षड्वर्ग वर्गित गुणे शोभमाना, पंचाचारने पालवे सावधाना ॥ भविप्राणीने देशना देश काले सदा अप्रमत्ता यथा सूत्र आले ॥ जिके शास्त्र-नाधार दिग् ति कल्या, जगे ते चिर जीयजो शुद्धजल्पा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ गुण छत्रीसे दीपता, पाले पंच आचारो रे ॥ जिन मारग साचो कहे, युगप्रधान जयकारो रे ॥ आचारजिपद वंदीए ॥ १० ॥ ए आकणी ॥ सारण वारण चोयणा, पडिचोयण वली शिष्या रे ॥ भव्यजीव समजावया, देयाने ते दक्षा रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ जिनवर सूरज आथम्या, प्रगटित दीपक जेहा रे ॥ सकल भाव परगट करे, नामथी जसु देहा रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ विधिशु पूजा साचवे, ध्यावे निज हित जाणी रे ॥ पामे लघुतर कालमां, आचारजपद प्राणी रे ॥ १३ ॥

॥ श्लोक ॥ स्थापयामि ततः सूरीन्, दक्षिणेऽस्मिन् दलेऽमले ॥ चरतः पञ्चधाचारं, षट्त्रिंशत् सद्गुणायुतान् ॥ १ ॥ सूरीन् सदा चाररताश्च, सारणाचार्यंत स्वपरान्यथेष्टम् ॥ उग्रोपसर्गैकनिवा-

रणाय—मभ्यत्वयाग्यक्षतगमपूर्वं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं सूरिभ्यानम ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ उपाध्यायपदपूजा ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुण अनन्त जग जेहना, सुंदर शोभित गात्र ॥
उवज्झायपद अरचीए, अनुभवरसतु पात्र ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ सुत्तत्थवित्थारणतप्पराण, नमो नमो वायगकुंजराण ॥ गणस्स संधारण सायराण, सव्वप्पणावज्जियमच्छराण ॥ १ ॥ नहीं सूरि पण सूरिगणने सहाया, नमु वाचका त्यक्तमदमोहमाया ॥ वली द्वादशांगादि सूत्रार्थदान, जिके सावधाना निरुद्धाभिमाने ॥ धरे पंचने वर्ग वर्गित गुणौघा, प्रवादि द्विपोच्छेदने तुल्य सिंघा ॥ गुणी गच्छसंधारणे स्थंभभूता, उपाध्याय ते वंदीए चित्प्रभूता ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ द्वादशांग वाणी वदे, सूत्र अरथ विस्तारे रे ॥ पच वर्ज गुण जेहना, सुमति गुपति निरधार रे ॥ १४ ॥ श्री उवज्झाय वादए ॥ ए आंकणी ॥ दायक आगम वाचना, भेद भाव युत सारी रे ॥ मूरखने पंडित करे जगतजतु हितकारी रे ॥ १' ॥ श्री० शीतल चंद्र किरण समी, वाणी जेहनी कहीए रे ॥ ते उवज्झाय पनता अचिरे सुखमा लहीए रे ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ श्लोक ॥ द्वादशाङ्गश्रुताधारान् शास्त्राध्ययनतत्परान् ॥ जिनेशास्युपाध्यायान् पवित्र पश्चिमे दले ॥ १ ॥ श्रीधर्मशास्त्रा ण्यनिशं प्रशान्ते पठति येऽन्यानपि पाठयन्ति ॥ अध्यापकास्तान परा जपन्ते, स्थिताता पाभिधा परिपूजयामि ॥ ॐ ह्रीं उपाध्यायेभ्यो नम ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ साधुपदपूजा ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मोक्षमारग साधन भणी सावधान थया जेह ॥
ते मुनिवरपद वंदतां, निर्मल थाये देह ॥ १ ॥

॥ छन्द ॥ साहूण ससाहिअ संजमाणं णमो णमो सुद्धदयाइ माणं ॥ तिगुत्ति गुत्ताण समाहिआणं मुणीण मज्झइ पयहिआण ॥ १ ॥ करे सघला सारे यथा गणिनी, करु वर्णना तेहनी शी मुणिनी ॥ समिता सदा पंच समिति त्रिगुप्ता त्रिगुप्ते नहीं काममें भोग लिप्ता ॥ वली बाह्य अभ्यंतर ग्रंथि टाली होये मुक्तिने योग्य चारित्र पाली ॥ शुभाष्टांग योगे रमे चित्त वाली, नमुं साधुने तेह निज पाप टाली ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ सकल विषय विष वारीने, आतमध्यान रमा रे ॥ उपशम रसमां झीलता निज गुण ज्ञाने माता रे ॥ १७ ॥ हित धरी मुनिपद वंदो ॥ आंकणी ॥ रतनत्रयी आराधना, दशविध यतिधर्म पाले रे ॥ पंचिंद्री जीपे सदा, जिनमारग अजुवाले रे ॥ हित० १८ ॥ गुण सत्तावीस अलंकर्या पंच महाव्रत धारी रे ॥ ज्ञानादिक तप आदरे, चिदानंद सुखकारी रे ॥ हित० ॥ १९ ॥ कर्मेंधन ध्यानाग्नि धर करम महा भट जीत्या रे ॥ पहुंच्या मुनि ... जगत थिरिता रे ॥ हित० ॥ २० ॥

॥ श्लोक ॥ ... रत्यादिकर्म कुर्वाण न शुभ ... ॥ ... नित्यं, स ध्यानदामि सुयतान ॥ १ ॥ ... प्रसिद्ध सत्य तपो ब्रादशधा शरीरे ॥ येषामुदारगुण ... , साधून् सदा ... न परिपूजयामि ॥ ॐ ह्रीं साधुपदाय नमः ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ दर्शनपदपूजा ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जिनवर भाषित शुद्ध नय, तत्त्व तणी परतीत ॥
ते सम्यग्दर्शन सदा आदरीए शुभ रीत ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ जिणुत्ततत्ते रुइलक्खणस्स, नमो नमो निम्मलदंसणस्स मिच्छत्तनासाइसमुग्गमस्स मूलस्स सद्धम्ममहादुमस्स ॥१॥ विपरीत हठवासनारूप मिथ्या, टळे जे अनादि अछे जेह पथ्या ॥ जिनोक्ते हुवे सहजथी श्रद्धानं, कहीए दर्शनं तेह परमं निधानं ॥ विना जेहथी ज्ञान अज्ञानरूपं, चारित्रं विचित्रं भवारण्यकूपं ॥ प्रकृति सात उपशमे क्षय तेह होवे, तिहां आपरूपे सदा आप जोवे ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनी, सद्दहणा चित्त धरीए रे ॥ सात प्रकृतिनो क्षय करी, क्षायिक समकित वरीए रे ॥ २१ ॥ दरसणपद नित वंदीए ॥ ए आंकणी ॥ एण विण ज्ञान निष्फल कह्युं, चारित्र नि फल जाये रे ॥ शिवसुख ए विण ना मिले, बहु संसारी थाय रे ॥ द० ॥ २२ ॥ सडसठी भेद छाजतुं अजरामर पद दाता रे ॥ जे भवि पूजे भावशुं ते पामे सुख शाता रे ॥ दरसणपद० ॥ २३ ॥

॥ श्लोक ॥ जिनेन्द्रागमतत्त्व श्रद्धा लक्षण दर्शनं यजे ॥
मिथ्यात्वमथन शुद्ध सम्यक्त्वमीलनक्षमम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपदपूजा ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सप्तम पद श्री ज्ञाननुं, सिद्धचक्र तप मांहि ॥
आराधीजे शुभ मने, दिन दिन अधिक उच्छाहि ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ अन्नाणसंमोहतमोहरस्स, नमो नमो नाणदिवायरस्स ॥ पंचप्पयारस्सुवगारगस्स, सत्ताण सव्वत्थपयासगस्स ॥ १ ॥ होवे जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोध, यथावर्ण नासे विचित्रावबोध ॥ तेणे

आणीए वस्तु पड्द्रव्य भावा, न हुये वितथ्या (वाद) निजेन्छा स्वभावा ॥ होय पच मत्यादि सुज्ञान भेदे, गुरूपासास्तिथी योग्यता तेह वेदे ॥ वली ज्ञेय हेय उपादेयरूपे, लहे चित्तमां जेम ध्वांत प्रदीपे ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ भक्ष अभक्ष विचारणा पेय अपेय निधारो रे ॥ कृत्य अकृत्यने जाणीए, ज्ञान महा जयकारो ॥ २४ ॥ज्ञान निरंतर वंदीए ॥ ए आंकणी ॥ ज्ञान विना जयणा नहीं जयणा विण नहीं धर्मो रे ॥ धर्म विना शिवसुख नहीं, ते विण न मिटे भर्मो रे ॥ ज्ञाना ॥२५॥ पांच प्रकार छे जेहना, भेद एकावन तासो रे ॥ आणीने पूजे सदा, ते लहे केवल खासो रे ॥ ज्ञान० ॥ २६ ॥

॥ श्लोक ॥ अशेषद्रव्यपर्याय,-रूपमेयावभासकम् ॥
ज्ञानमाख्येयपद्मस्य, पूजयामि हितावहम् ॥ १ ॥

॥ अथ चारित्रपदपूजा ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अष्टम पद चारित्रनु, पूजो धरी उमेद ॥
पूजत अनुभवरस मिले पातक होय उछेद ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ आराहिअखंडीअ सक्किअस्स, नमो नमो संयम वीरिअस्स ॥ सज्झायणा सगानियाद्धियस्स, निव्वण दाण समुज्जयस्स ॥ १ ॥ वली ज्ञानफल चरण धरीए सुरंगे, निराशंसता द्वाररोध प्रसंगे ॥ भवांभोधिसंतारण यान तुल्य, धरु ते चारित्र अप्राप्त मूल्यं ॥ १ ॥ होय जास महिमा थकी रंक राजा, वली द्वादशांगी भणी होय ताजा ॥ वली पापरूपोपि निःपाप थाय, थइ सिद्ध ते कर्मने पार जाय ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ सर्व विरति देशविरतिया, अणगार आगारी रे ॥ जय वंतो थावो सदा, ते चारित्र गुणधारी रे ॥ २७ ॥ चारित्रपद नित वंदीए ॥ ए आंकणी ॥ षट्खंड सुख तृण सम गणे, संयम शीलव्रत धारी रे ॥ सत्तर भेदे जिन कह्यो, ते आदरण भाइ रे ॥ चा० ॥

तत्वरमणा नमु मूल छे, सर्व आश्रवनो त्यागी रे ॥ विरति मेनी पूजन करे, भाव धरी वड भागी रे ॥ चा० ॥ २९ ॥

॥ श्लोक ॥ सामायिकादिभिर्भेदै,-श्चारित्र चारु पञ्चधा ॥
सस्यापयामि पूजार्थं, पत्रे ह्रि नैकंने क्रमात् ॥१॥
ॐ ह्रीं सम्यग् चारित्रायनम ।

॥ अथ तपपदपूजा ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर्मराग प्रतिज्ञालजा, परतिरत जगति समान ॥
ने तपपद पूजो सदा, निर्मल धरी ए ध्यान ॥ १ ॥

॥ छंद ॥ कम्मद्दुमोम्मूलणकुंजरस्स, नमो नमा तिव्वतवोभरस्स ॥ अणेगलद्धीणनिबंधणस्स, दुस्सज्झ अथ्थाण य साहणस्स ॥ १ ॥ त्रिकालिकपणे कर्म कषाय टाले, निकाचितपणे बांधीया, तेह बाले ॥ कह्यु तेह तप बाह्य अंतर दु भेदे, क्षमा युक्त निर्हेतु दुर्ध्यान छेदे ॥ होये जास महिमा थकी लब्धि सिद्धि, अबाछकपणे कर्म आवरण शुद्धि ॥ तजो तेह तप जे महानंद हेते, होय सिद्धि सीमंतिनी जिउ संकेते ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ निज इच्छा परोधीये, सही तप जिन भाख्युं रे । बाह्य अभ्यंतर भेदथी द्वादश भेद दाख्युं रे ॥ ३० ॥ अनुपम तप पद वंदीये ॥ ए आंकणी ॥ तद्भव मोक्षगामीपणुं जाणे पण जिनराय रे ॥ तप करीया अति आकरा कुत्सित परम खपाया रे ॥ अ० ॥३१॥ परम निकाचित क्षय हुवे ते तपने परभावे रे ॥ लब्धि अठ्यावीश उपजे अष्ट महासिद्धि पावे रे ॥ अ० ॥ ३२ ॥ बहु तपपद ध्यावता पूजता चित्त चाहे रे ॥ अर्चय गति निर्मल लहे सहु योगींद सराहे रे अ० ॥ ३३ ॥

॥ श्लोक ॥ द्विधा द्वादशधा भिन्न, पूत पत्रे तपश्चय सस्थापयामि भक्त्यात्र, वाय्या दिशि शामदम ॥ ॐ ह्रीं सम्यक्तपसे नम ॥ इति ॥ ९ ॥

कलश.

इमनवपद ध्यावे परम आनंद पावे । नवमे भवशिव जावे, देव : भवपावे । ज्ञानविमल गुणगावे सिद्धचक्रप्रभावे सहु दुरित शमावे श्व जयकार पावे ॥ १ ॥

अरिहंत सिद्ध आचारज उवज्झाय साधु दंसण नाणए । चारित्र प नवपदमां, रहा सिद्ध चक्र प्रमाणए ॥ २ ॥ आप ह राना सुख राजा, छत्रासिद्ध चक्रध्यानमां भविमा भवो जिनलाभआणी, दिप माणी मानसो ॥ ३ ॥

इय नव पदसिद्धं लद्धिविज्जाणसिद्धं । पयडियसुरवग्ग ह्रीं तिरेहा समग्ग । दिसवइसुरसार खोणिपीढावयार । तिजयविजय चक्क सिद्ध चक्क नमामि ॥ ४ ॥

नि. स्वर्गेत्यादिदिव्यातिशयमयतनुम श्रीजिनेन्द्रमुखान् ।
सम्यक्त्वादिप्रकृष्टाष्ट गुणगणकृदाचार साधश्च सूरीन् ॥
शास्त्राणि प्राणिरक्षा प्रवचन रचना सु रस्याद्विरान—
स्तत् सिद्धे पाठकाना यतिपति सहितानच्चयाम्यर्घदानै ॥ १ ॥

इत्यमष्टदलपद्म पुरये दृंदादिभि ।
स्वाहांते प्रणवाद्यश्च पंद्विमन्दस्यं ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं पचपरमेष्ठिने सम्यग्ज्ञानादि चतुष्टिनेभ्योनम ।

इति श्री नवपद लघु पूजा

अथ नवपद आरति ।

ए नवपद ध्यावो प्राणिनित्य ध्यावा पचम गती सामय सुखपावो । ए आकणी । चुथी अरिहंताद ध्यावने, बिजा ए सिद्ध सुणिज । ए० १ ॥ आचारज नित्य आराधो, शुद्ध मन निजचारित्र साधो । ए० २ ॥ उवज्झाया पचम अणगारा, अप्रमत्ता पाम रघ परा । ए० ३ ॥ दंसण नाण चरण सत्तदीपे, तप तपता कम अरिने जीपे । ए० ४ ॥ ए नवपद प्राणी नित सुणता, जिरुधा सहजे गुणता । ए० ५ ॥ सिद्ध चक्रनी काज सेवा मनवांछित लहिए नितमेवा

ध ए० ६ ॥ अजर अमर सुखदायक साचो रुडे मनसे नितप्रति राचो । ए० ७ ॥

इति नवपद आरति

॥ हवे स्तवना करवाना प्रसंगे प्रथम नव पदना ९
॥ चैत्यवंदन ९, स्तवन ९ थोय कहे छ दरोज करवानु ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीइष्टदेवाय नमः ॥ जय जय श्री अरिहंत भानु, भवि कमल विकाशी ॥ लोकालोक अरूप रूपी, समस्त वस्तु प्रकाशी ॥ १ ॥ समुद्घात शुभ केवले, क्षय कृत मल राशि ॥ शुक्ल चरम शुचि पादसे, भयो वर अविनाशी ॥ २ ॥ अंतरंग रिपुगण हणीए, हुय अप्पा अरिहंत ॥ तसु पदपंकजमें रही, हीर धरम नित संत ॥ ३ ॥ इति अरिहंतपदचैत्यवंदन ॥ ज किंचि० ॥ नमोऽर्हत् ॥

॥ अथ प्रथम पद स्तवन ॥

॥ पूजो मनरंगे, हां हो दादा कुशल सूरींद ॥ पू० ॥ ए देशी ॥ श्री तेरम गुण थानिक वस, कमकु भजे श्री अरिहंत ॥ मन मान ले ॥ अष्ट समयमें समय तीन, सर्व आहार जी हवे हीन ॥ म० ॥ १ ॥ बादर काये मन वच योग, तनु तनुसे पुन दृढ तनु योग ॥ मन० ॥ सुक्षम कायेते मन वच रोक, निज थाये तानुं कर फोक ॥ मन० ॥ २ ॥ सही मानके मन व्यापार, वैइंद्रिने वाक्य प्रचार ॥म० ॥ आदि समय रहीं पणक सुजीव, सुक्षम रहो तिण आग अतीव ॥ मन० ॥ ३ ॥ एवा योगथा समये पर, हीना सख्गुणो पर छेर ॥ म० ॥ समया सबे जोग निरोध, कृत्वा जो रह्यो जोगी सोध ॥ मन० ॥ ४ ॥ पर समना हरता पाय, कुशल कहे ते श्री जिनराय ॥ म० ॥ तेरमें गुणमें गुण सम देव, आपा सा जगकु नितमेव ॥ मन० ॥ ५ ॥ अरिहंतपदस्तवनम् ॥ १ ॥

॥ अथ थुइ ॥ सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक, लोकालोक सरूपीजी ॥ केवलज्ञानकी ज्योति प्रकाशक, अनंत गुणे करी पूरीजी ॥ तीजे भव

थानक आराधी, गोत्र तीर्थंकर नूरोजी ॥ बार गुणाकर पदना अरि-हंत, आराधो गुण भूरोजी ॥ इति अरिहंतपदस्तुति ॥ १ ॥

॥ अथ सिद्धपद चैत्यवंदन ॥ २ ॥

॥ श्री शैलेशी पूर्वप्रान्त, तनु हीन त्रिभागी ॥ पूर्वप्रयोगप्रसंगस, ऊर्द्ध गत जागी ॥ १ ॥ समय एकमें लोकप्रान्त, गये निगुण निरागी ॥ चेतन भूप आतम रूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवल दंसण नाणथी ए, रूपातीत स्वभाव ॥ सिद्ध भये तसु हीर धर्म, वंद धरी शुभ भाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपदचैत्यवंदनम् ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवन ॥ २ ॥

॥ था रे महिला उपर मेह झरोखे वीजली ॥ ए चाल ॥ अष्ट वरस लग मास हीना कोडी पूर्वमें म्हारा लाल ही० ॥ उत्कृष्ट करे वास सयोगी धाममें म्हा० स० ॥ अजोगीके अंत तजे भय भ्यता म्हा० शैलेशी लहे कर्म दल गुणश्रेणिता म्हा० द० ॥१॥ ह्रस्वाक्षर पंच काल रहे ते योगमें म्हा० र० ॥ तेरस प्रकृतिनो अन्त करीने अंतमें म्हा० क० ॥ गमन करे नगरजासे अक्रिय होयने म्हा० ॥ अ० ॥ पुव्वपओग असंग स्वभाव अबंधने म्हा० स्व० ॥ २ ॥ इषु गुण मन परमाण जोजन लक्षे कही म्हा० जा० ॥ यतुल निसरा भारा निरालंबन सही म्हा० नि० ॥ मध्ये जोजन अष्ट घनाकृति अंतमें म्हा० घ० ॥ मक्षी पक्षथी हीन भणी सिद्धांतमे म्हा० भ० ॥ ३ ॥ तनु भारा नाम शिलासे ओयने म्हा० शि० ॥ लघु अंगुल बत्तीस प्रमाण अवगाहना म्हा० प्र० ॥ वृद्धि ग्रहु शत पंच गुणासे हीनता म्हा० गु० ॥ मिलिया एकमें नंत अबाधा ना लही म्हा० अ० ॥ ४ ॥ अष्ट प्राण धरी रत्न सिरीदी जो सही म्हा० सि० ॥ बीजो पद श्रीसिद्ध धरो मन गेहमें म्हा० धरो० ॥ कुशल भये जगजीव मिलाया तेहमें म्हा० मि० ॥ ५ ॥ इति सिद्ध पदस्तवनम् ॥

॥ अथ थुइ ॥ अष्ट करमकु दमन करीने गमन कियो शिववासीजी अव्याबाध सादि अनादि, चिदानंद चिद्रूपराशीजी । परमातम पद

पूरण विलासी, अघ घन दाघ निनाशीजी ॥ अनन्त चतुष्टय शिवपद ध्यावो, केवलज्ञानी भावीजी । इति सिद्धपदस्तुति ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय पद चैत्यवंदन ॥

॥ जिनपदरूल मुखरस अनिल, मितरस गुण धारी ॥ प्रबल मयरधन मोहकी, जिणते चमु हारी ॥१॥ कन्यादिक जिनराज गीत नयनत निस्तारी ॥ भव कूपे पापे पडत जगजन निस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारी जीवमें आचारजपद सार ॥ जिनकू वंदे हीर धर्म, अनोप रसो थार ॥ ३ ॥ इति आचार्यपदचैत्यवंदनम् ॥ ३ ॥

॥ अथ आचार्यपद स्तवन ॥

॥ भणमृत बदिला रे ए चाल ॥ सती सडगर्थी जेणे, हर्षों भोध सुभट सम देणे हो ॥ गणपति गुण पेखी ॥ मान महा गिरि थयरे, अति सोभन मद्दव उयर हो० ॥ ग० ॥ १ ॥ दमरूप विषवेली यर अज्जव कील डेली हो ॥ ग० ॥ मूछा थलर्थी भरीयो लोहसागर मुत्ते तरीयो हो ॥ ग० ॥ २ ॥ मदन माग मदहिना जिण दम दाम जने कीनो हो ॥ ग० ॥ माह महामल्ल ताड्या, पुण वराग मुगेर पाड्या हो ॥ ग० ॥ ३ ॥ दान गयद वस कीना भरा उपशम अकुश लीना हो ॥ ग० ॥ अनरग रिपु भेद्या, सुर घर विम जिण निवेध्या हो ॥ ग० ॥ ४ ॥ रम कूर्ती गुणथा लीनो मय अरथ आगम पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारिजपद पद्मा, घरी जीत कुशललता सेवो हो ॥ ग० ॥ ॥ इति आचार्यपदस्तवनम् ॥ ३ ॥

॥ अथ थुइ ॥ पंचाचार पाले उजवाले, दाप रहित गुणधारीजी । गुण छत्तीस आगमधारी, द्वादश अग विचारीजी । प्रबल मयण घन माह हरणकु अनिल समो गुण वाणीजी । क्षमा सहित जे संयम पाले, आचारज गुणध्यानीजी ॥ इति आचार्यपदस्तुती ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ पद चैत्यवंदन ॥

॥घन घन थी उवझाय राय शठता घन भंजन॥जिजिनवर दिमत दुधारसम, करइन जनरंजन ॥ १ ॥ गुणगण भजण मण गयद, सुय

शाणे क्रिय गजण गुणारम्भ लीय लायण, जतयय सुय भंजण ॥ २ ॥ महा प्राणमें जिन लहो ए, आगममें पद तुर्य ॥ निलंप अहानिश हीर धर्म, नदे पाठकवर्य ॥ ३ ॥ इति उपाध्यायपदचैत्यवंदनम् ॥ ४ ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवन ॥

॥ सावरिया अलगा रहोने ॥ ए चाल ॥ हुयने रे दुर्ग हुयन चतन भाये शठने दुर्ग लोयन । तु मुझ पाम पयु आय ॥दु०॥ तुजन सूण यतलावे हु० आयणां ॥ तो सगे निज पर्यायिनो, रचना चरण मूलाणो ॥ नाणाचरणी सय उपशममे, भाजिम ध्याणो ॥ दु० ॥ १ ॥ हु रे ते परजाते थीना, आति नाम उपदेशे ॥ एय तो गी मुरग गजादिक, विण कर्म उपदेश ॥ दु० ॥ २ ॥ इत्यादिक यह मुजरु शंका, तेरे संग लागी ॥ मीठ वणकी शमना सर्ता, मैं भया तोगुं रागी ॥ हु० ॥ ३ ॥ उप चढिए हणीजो भगियाला, आजिया लाभन भाय ॥ आर्धीना मन पीडा नाम, मायो यम विलाय ॥ दु० ॥ ४ ॥ अधिक्ये स्मरीए घर आगम, मुजमे त उयभाय ॥ तत्सताते हणी शठनाउ, चतन मुशालता पाय ह० ॥ ॥
इति चतुर्थपदस्तवनम् ॥

॥ अथ थुइ ॥ जैन इग्यार चउद पूरव गुण पचवीसना धारीजी । सुत्र अरथधर पाठक यहीए, जोग समाधि विचारीजी ॥ तप गुण सूरा आगम पूरा नय निक्षप तारीजी । मुनि गुणधारी बुध विस्तारी पाठक पूजामि मयिरागीजी ॥ इति उपाध्यायपदस्तुति ॥ ४ ॥

॥ अथ पचम पद चैत्यवदन ॥

॥ दसण नाण चरित्त करी, घर शिवपद गामी ॥ धम शुद्ध शुचि चत्रस, आदिम नय कामी ॥ १ ॥ गुण पमत्त अपमत्तन, भय अंतर जामी ॥ मानम इंद्रिय दमनमूल, शाम दम अभिरामी ॥ २ ॥ चारु ति धन गुण मर्या ए पचम पद मुनिराज ॥ तत्पदपंकज नमत है हीर धर्मके काज ॥ ३ ॥ इति साधुपदचैत्यवंदनम् ॥ ४ ॥

॥ अथ साधुपद स्तवन ॥

॥ माल्न माल्न मनि कह्यो ॥ ए चाल ॥ निरुपाधी जगजन कहे, घारे चउगति यमनमें रोग हो ॥ मुनाइजी ॥ राग द्वेष भय जु करे, साहिबा शिवरमणीस हेत हो ॥ मुनाइजी ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद तर्जी रहे ॥ सा० ॥ छठे पूरव क्रोड हे ॥ मु० ॥ ज्ञान सोगम आगम करे ॥ सा० ॥ पाम क्रम निश्चय हो ॥ मु० ॥ २ ॥ प्रज्वल निद्रामें रही ॥ सा० ॥ परमे गुणनो परस हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ स्थिति रस घात प्रमुख करे ॥ सा० ॥ जा गुण सख्यातीत [illegible] ॥ मु० तो पीण- तिण जगमें रही ॥ सा० ॥ त्रिक त्रिक घन गुणनी स्थान हो ॥ मु० ॥ ४ ॥ रयण त्रयसे शिवपदे ॥ सा० ॥ साधन परवर जीर हो ॥ मु० ॥ साधु हुयइ तसु धर्ममें ॥ सा० ॥ सुदाल भवतु जगतीप हो ॥ मु० ॥ ५ ॥ इति साधुपदस्तवनम् ॥ ५ ॥

अथ थुइ ॥ सुमति गुप्ति कर रुजम पाले, दोष बयालीसा टालेजी ॥ षट्काया गोकुल रखवाले नवविध ब्रह्मव्रत पालेजी ॥ पच महाव्रत सुधा पले, धर्म शुद्ध उजवालेजी ॥ क्षपकश्रेणि करी कर्म खपावे, दमपद गुण उपजावेजी इति साधुपदस्तुति ॥ ॥

॥ अथ दर्शनपद चैत्यवदन ॥

द्रव्य पुग्गल परियट्ट अट्ठ परमित ससार ॥ गण्ठिभेद तप कर लहे, सब गुणना आधार ॥ १ ॥ क्षायक वेदक सास्वी असख, उपशम पण वार ॥ विना जेण चारित्र नाण, नहीं हुवे दिाय दातार ॥ ॥ २ ॥ श्रीसुदेव गुरु धर्मनी ए रुचि लच्छन अभिराम ॥ दरशनकुं गणि हीर धर्म, अहनिश करत प्रणाम ॥ ३ ॥ इति दर्शनपदचैत्य वदनम् ॥ ६ ॥

॥ अथ दर्शनपद स्तवन ॥

॥ रामचद्रके वाग आबो मोह रह्यो री ॥ ए चाल ॥ देव श्री जिन राज, गुरु ते साधु भण्या री ॥ धर्म जिनेश्वर भाषित, बोधि लक्षण तणे री ॥ १ ॥ बाधिलाभके काज, सप्तम नरक मलो री ॥ तेण विना

सुरलोक, तातें अधिक थूरो री ॥ २ ॥ मिथ्या तांप तम, धोधही छाड़ एहै री ॥ उपशम क्षायक भेद, ईश्वर तीन कहे री ॥ ३ ॥ भव सागर है अपार, कुण अस्ताग कहा री ॥ जसु लाभे ते होय, गोस पद मात्र खरो री ॥ ४ ॥ यद्भाव प्रमाण धाण चारित्त भला री ॥ धोर धर्ममें चीर, लामे कुशल करा री ॥ ५ ॥ इति दर्शनपद स्तवनम् ॥ ६ ॥

॥ अथ थुइ ॥ जिनपन्नत तत्त सुधा सरधे, समकित गुण उज्ज वालजी ॥ भेद छेद करी आतम निरखी, पशु टाली सुर पावेजी ॥ प्रत्याख्याने सम तुल्य भाख्या, गणधर अरिहंत शूराजी ॥ ए दर्शन पद नित नित वंदो भवसागरको तीरजी ॥ इति दर्शनपद स्तुति ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ निमादिक रत्न राम चहि, मिल आदिम नाण ॥ भाव मिलापसे जिन जनित, सुध थादा प्रमाण ॥ १ ॥ भवगुण पञ्ज आदि द्वाय, मण लोचन नाण ॥ लोकालोक स्वरूप जाण, एक केवल नाण ॥ २ ॥ नाणावरणी नाशथी ए, चेतन नाण प्रकाश ॥ सप्तम पदमें हाय धम, नित चाहत अवकाश ॥ ४ ॥ इति ज्ञानपदचैत्यवंदनम् ॥ ७ ॥

॥ अथ ज्ञानपद स्तवन ॥

॥ म्हारे अति उछरंग ॥ ए चाल ॥ जिनवर भाषित आगम मणीया, तत्त्व यथास्थिति गमीयाजी ॥ म्हारे जगजनतार, ते उत्तम वर नाण वखाणे । भविजन न्हानीदी चाहेवी ॥ म्हा० ॥१॥ भक्ष्याभक्ष्य कुपथ सुपंथा, पयापय अध्यानी ॥ म्हा० ॥ द्रव्य गुण अहित ज्ञान धारी जाणे जेण निवारीजी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ अने मति श्रुत दाय छे इन्द्रि सार-तेण परोक्ष विचारीजी ॥म्हा०॥ उदि मण केवल ईं चार, जीव प्रत्यक्ष सुधारुजी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ जयपि ज्ञान कु नाग आणे, स्याद्वादिक अनुमानेजी ॥ म्हा० ॥ त्रिभुवन पूजे जाकु प्राणी धारी शुभ अध्यव सायेजी ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ नाणावरणी उपशम क्षयथी, चेतन नाणे

विलासेजी ॥ म्हा० ॥ सप्तम पदमें मतिचन हरखे, निशदिन कुशलता निरखजी ॥ म्हा० ॥ ९ ॥ इति नाणपदस्तवनम् ॥ ६ ॥

॥ अथ थुइ ॥ मति श्रुत आदि जानित कहीए, ग्हीए गुण गभीं रोजी ॥ आतमधारी गणधर विचारी द्वादश अंग विस्तारोजी ॥ अवधि मन पर्यव केवल वली, प्रत्यक्ष रूप अवधारोजी ॥ ए पंच ज्ञानने धरो पूजा, मतिजनन सुखकारोजी ॥ इति ज्ञानपदस्तुति ॥६॥

॥ अथ अष्टम पद चैत्यवदन ॥

॥ जस्स पसाये साहु पाय, जुग जुग समितेंद ॥ नमन करें शुभ भाव लाय, फुण नरपति वृन्द ॥ १ ॥ जपे घणी अरिहंत राय करी कर्म निकंद ॥ सुमति पंच तीन गुप्ति युत, हे सुख अमंद ॥ २ ॥ इषु कृति मान कषायथी ए, रहित लेश शुचिचित ॥ जीव चरित्तह हीर धम, नमन करत नितसत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपदचैत्यवदन

॥ अथ चारित्रपद स्तवन ॥

निर्विकल्प अज निर्गुणी, चिदानंद निरसंग ॥ सुग्यानी साभलो॥ मूर्तिहीन चेतन करे रूपी पुद्गल रंग ॥ सु० ॥ १ ॥ स्पर्द्धक कारण योगणा, कार्य कारण भाव ॥ सु० ॥ हल्या जोग सुधामता, लख्या संग स्वभाव ॥ सु० ॥ २ ॥ पर्याता लघु जोगमें, वृद्धि एह जुगमान ॥ सु० सर्वे वसु समये रहे, अवे द्वौ ते जाण ॥ सु० ॥ ३ ॥ सह भागी प्रशस्त मुणा, कारण रुध धरेण सु० ॥ मातापस प्रमारता, सप्त प्राभृतका तेन ॥ सु० ॥ ४ ॥ तद्रोधन रूपी भलो, चेतन संग मधाम ॥ सु० ॥ पर घन निल पद धर्मांश कुशल भवतु अभिराम ॥ ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति चारित्रपदस्तवनम् ॥ ७

॥ अथ थुइ ॥ कर्म अपचय दूर सवे ते, आतमध्यान लगावेजी ॥ बारे भावना सुधि भावे, संसारपार उतारेजी ॥ षट खंड राजक सर्वीन, चर्ण संजम वरेजी ॥ पवो चारित्रपद नित सदा, आतम गुण हितकारेजी ॥ इति चारित्रपदस्तुति ॥ ० ॥

॥ अथ तपपद चैत्यवंदन ॥

॥ श्री शासनादिक नीथनाथ, तद्भव क्रियमाण ॥ विहि अंतरंग बाह्य मध्य, द्वादश परिणाम ॥ १ ॥ वस्तु पर मित्र आमोसही, आदिक लब्धि निधान। जेणे समता युत विणे शुभ अधन कर्म निमान ॥ २ ॥ नवमों श्री तपपद भणो ए, इच्छारो ध सरूप ॥ मदनसे निन हीर धम, दूर भवतु भवकूप ॥ ३ ॥ इति तपपदचैत्य वंदनम् ॥ ४ ॥

॥ अथ तपपद स्तवन ॥

बारम भेद भण्या जिनराजे, बाह्य मध्य तणा अगराजे रे ॥ शिव पद नाणि ॥ तिण भव सिद्धि तणा वर ध्याना, जिनवर पिण तपना कर्ता रे ॥ शि० ॥ १ ॥ ममता सहित जिनते भारी, भला कर्मवमु पिण हारी रे ॥ शि० ॥ जीव कनपरस कर्म कचोरा, दूरे नर पाप नवा जोरा रे ॥ शि० ॥ २ ॥ तप तरुवरना कुसुम है जाके, स्य मरनी फल ते सिद्धि र ॥ शि० ॥ पाप सरूप है तमनी राशि, तप भानुम आये नासी रे ॥ शि० ॥ ३ ॥ आम्नंपसाय उर्ध्व थाय, लब्धि सघली जगहितकारु रे ॥ शि० ॥ अति सुकुपुन्य साधना हीना, धाम तीत वार कीना रे ॥ शि० ॥ ४ ॥ इच्छारोधनतपरी वहीए, तपपदही चेतन वहीए रे ॥ शिव ॥ ५ ॥ इति श्रीतपपदस्तवनम् ॥

॥ अथ थुइ ॥ इच्छारोधन तपते भारयो, आगम तहना साखीजी ॥ द्रव्य भावन द्वादश दाखी, जा समाधि राखीजी ॥ चतन निज गुण परणित पेखी, तहीज तप गुण दाखीजी ॥ लब्धि सकलना कारण रूपी, इ वर सेमुख भाखीजी ॥ इति तपपदस्तुति ॥ ८ ॥

॥ अथ नवपद ओलीनी पेलादिवसनी विधि ॥

॥ प्रथम आसो सुदि ७ अथवा चैत्र सुदि ७ थी भला शरू करे । कदाच तिथि घटा होय तो ६ थी वधा होय तो आगमथा शरू करे । पण आंबिल ९ पूनिम सुधि करे । तिहा प्रथम सर्व गुरु कने माडलादिकनी विधिकरे पछे बाजाट, उपर नवपद सिद्धचक्र

थाये । त्रिकाल पूजा करे ॥ सवारना राइ पडिक्कमणु करी पीछे वस्त्र पडिलेहे । त्या नवपद सिद्धचक्र यन्त्रनी स्थापना होय त्या आवीने पाच शक्रस्तव देव वादे तथा त्या नवचे यवदन नवपदना यन्त्र पासेकरे पछे नव चैत्ये अथवा नव प्रतिमा आगे नव चैत्यवदन करे अने नव पदनी लघु पूजा करे वासक्षेप आदिथी करे । पाछे केसर चदनथी पूजा करे । पञ्चमध्याह्न समय पाच शक्रस्तवे देव वादे । पछे गुरु पासे आविने राइ आलोवे । अब्भुट्ठिओमि खामिने आयविलनु पच्चक्खाण करे । प्रथम अरिहंतपदना वर्ण सफेद छे तथी आविलमे । चोखा भात अन गरम पाणी थावउ द्रव्य ऐनु खवु आविल पच्चखे । पीछे खमासमणा तथा फेरी नवकरिया माला काउसग्ग आदरवु नवपद सिद्धचक्र यन्त्रनी पास करवु अने न होयतो त्यासरमा करवु अरिहतपद ना बार गुण उपर चित्त धार नमस्कार करे ॥ प्रथम सव ठेकाणे इच्छामि खमा समणो व० इत्यादि कहिने नमस्कार करे ॥

॥ अरिहंतपदना १२ गुण ॥

१ अशोकवृक्षप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहंताय नम
२ पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहंताय नम ॥
३ दिव्यध्वनिप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहताय नम ॥
४ चामरयुगप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहंताय नम ॥
५ स्वर्णसिंहासनप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहंताय नम ॥
६ भामडलप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहंताय नम ॥
७ दुंदुभिप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहंताय नम ॥
८ छत्रत्रयप्रातिहार्यसयुताय श्रीअरिहंताय नम ॥
९ ज्ञानातिशयसयुताय श्रीअरिहंताय नम ॥
१० पूजातिशयसयुताय श्रीअरिहंताय नम ॥
११ वचनातिशयसयुताय श्रीअरिहंताय नम ॥
१२ अपायापगमातिशयसयुताय श्रीअरिहंताय नम ॥

॥ इत्यादि नमस्कार करिने श्री अरिहतपद आराधवा निमित्त काउस्सग्ग करु छु अरिहतपद आराधना करेमि काउस्सग्गं इच्छ वंदण०

[illegible] कहिने [illegible] स्थापना करी [illegible] स्वस्थानक [illegible] कर । [illegible] मंदिर करे. [illegible] चैत्यवंदन करीने [illegible] " [illegible] " [illegible] महिमा [illegible] जेम [illegible] मस्तीना [illegible] पूजा कर । [illegible] प्रभुनु [illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] हजार आर [illegible] स्मरण करे [illegible] ।

॥ अथ [illegible] दिवस विधि ॥

॥ आगीर्य [illegible] लाल वर्ण [illegible] माला सिद्धांत " [illegible] हजार कर । [illegible] गुण छ ते माटे [illegible] ।

॥ [illegible] ८ गुण ॥

१ अनन्त [illegible] नम ॥
२ अनन्त [illegible] नम ॥
३ अ[illegible] नम ॥
४ अनन्त[illegible] नम ॥
५ अक्षय[illegible] नम ॥
६ अरू[illegible] नम ॥
७ अगुरु[illegible] नम ॥
८ अनन्त[illegible] नम ॥
॥ [illegible] नम ॥
[illegible]

कहिने [illegible] ऊंचे [illegible] गुणणो गणे । [illegible] गुण याद [illegible] ॥ नम

ऊससिएण करीने आठ लोगस्सनो काउस्सग्ग करे। एक लोगस्स कहीने पारे। पछे पूर्वोक्त करणी अनुक्रमथी करे ॥ इति द्वितीय दिवस विधि ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय दिवस विधि ॥

॥ पूर्वोक्त विधिथी सघळुं करण्य करे। आचार्यपदनो पीलो वर्ण छे तेथी चणानी दाळनुं आंबिल करे। 'ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं' आ पदनो गुणणो बे हजार करे। आचार्यपदना ३६ गुण याद करीने छत्रीस नमस्कार करे ॥

॥ आचार्य पदना ३६ गुण ॥

१ प्रतिरूपगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२ सूर्यवत्तेजस्विगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
३ युगप्रधानागमसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
४ मधुरवाक्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
५ गांभीर्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
६ धैर्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
७ उपदेशगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
८ अपरिश्राविगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
९ सौम्यप्रकृतिगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१० शीलगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
११ अविग्रहगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१२ अविकथकगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१३ अचपलगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१४ प्रसन्नवदनगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१५ क्षमागुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१६ ऋजुगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१७ मृदुगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१८ सर्वसंगमुक्तिगुणसंयुताय श्री आचार्याय नमः ॥

१९ द्वादशविधतपगुणसयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२० सतदशविधसयमगुणसयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२१ सत्यव्रतगुणसयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२२ शौचगुणसयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२३ अकिंचनगुणसयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२४ ब्रह्मचर्यगुणसयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२५ अनित्य भावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
२६ अशरण भावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
२७ ससारस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
२८ एक त्वस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
२९ अन्यत्वभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
३० अशुचिभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
३१ आश्रवभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
३२ सवरभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
३३ निर्जराभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
३४ लोकस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
३५ बोधिदुर्लभभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
३६ धर्मदुर्लभभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥

॥ छत्तीस नमस्कार करीने खमासमण इत्यादि करीने छत्तीस [३६] लोगस्सनो काउस्सग्ग करे । एक लोगस्स ऊंचे स्वरथी कहे पारे । यथोक्त करणी अनुक्रमथी करे ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि ॥

॥ ' ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ' आ पदना २ हजार गुणणो गणे । छीगा मगनीदालनु आंबिल करे । उपाध्यायपदना २५ गुण याद करीने नमस्कार करे ॥

॥ उपाध्यायपदना २५ गुण ॥

१ श्रीआचारांगसूत्रपठनगुणयुताय श्रीउपाध्याय नमः ॥
२ श्रीसुयगडांगसूत्रपठनगुणयुताय श्रीउपाध्या० ॥

३ श्रीठाणांगसूत्रपठणगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
४ श्रीसमवायांगसूत्रपठणगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
५ श्रीभगवतीसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
६ श्रीज्ञातासूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्याय० ॥
७ श्रीउपासकदशांगसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
८ श्रीअंतगडदशांगसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
९ श्रीअणुत्तरोववाईसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
१० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
११ श्रीविपाकसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
१२ उत्पादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
१३ आग्रयणीपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
१४ वीर्यप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
१५ अस्तिप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
१६ ज्ञानप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
१७ सत्यप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
१८ आत्मप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
१९ कर्मप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
२० प्रत्याख्यानप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
२१ विद्याप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
२२ कल्याणप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
२३ प्राणायामप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
२४ क्रियाविशालपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥
२५ लोकबिंदुसारपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपा० ॥

आवीरीते पचीस नमस्कार करे । उभा थइ श्रमण उवसग्गि
इत्यादि कहिने पचवीस लोगस्सनो काउस्सग्ग करे । एक लोग
कहिने पारे । पछे पूर्वोक्त करणी करे । इति चतुर्थ दिवस विधि

॥ अथ पचम दिवस विधि ॥

"ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं" आ पदनो २ हजार गुणणों ग

साधुपद वाला पर्यनो छे, तथी अठ्ठवनुं आंबिल करे। सर्वं साधुपद सत्तावीस गुण चिंतवीने नमस्कार करे ॥

॥ साधुपदना २७ गुण ॥

१ प्राणातिपातविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
२ मृषावादविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
३ अदत्तादान विरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
४ मैथुनविरमण व्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
५ परिग्रहविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
६ रात्रिभोजनविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
७ पृथ्वीकायरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
८ अप्कायरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
९ तेउकायरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१० वाउकायरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
११ वनस्पतिकायरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१२ त्रसकायरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१३ एकेंद्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१४ बेइंद्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१५ तेइंद्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१६ चौरिंद्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१७ पंचेंद्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१८ लोभादिनिग्रहकारकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१९ क्षमागुणयुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
२० शुभभावनाभावकाय श्रीसाधवे नमः ॥
२१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्रीसाधवे नमः ॥
२२ संयमयोगयुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
२३ मनोगुप्तियुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
२४ वचनगुप्तिकाय श्रीसाधवे नमः ॥
२५ कायगुप्तियुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥

२६ शीतादिद्वाविंशतिपरिषहसहनतत्पराय० श्रीसाधवे नमः ॥
२७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्रीसाधवे नमः ॥

॥ आवीरीते सत्तावीस नमस्कार करे। उभा थईने अन्नत्थ ऊस सिएण इत्यादि कहिने सत्तावीस लोगस्सनो काउस्सग्ग करे। एक लोगस्स कहिने पारे। पछे पूर्वोक्त करणी करे। आ पद परमेष्ठि पदना सर्व गुण मलावाथी १०८ थाय। तेथी नवकारवाळीमाळना दाणा (१०८) थाय छे ॥ इति पंचम दिवस विधि ॥

॥ अथ षष्ठ दिवस विधि ॥

॥ ' ॐ ह्रीँ णमो दंसणस्स ' आ पदनी २ हजार गुणणी गणे दर्शनपद स्फटिक छे तेमाटे भातनुं आंबिल करे। सम्यक्त्वना सडसठ गुण चिंतन नमस्कार करे ॥

॥ सम्यक्त्वना-दर्शनपदना सडसठ भेद ॥

१ परमार्थसंस्तवरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
२ परमार्थज्ञातृसेवनरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
४ कुदर्शनवर्जनरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
५ शुश्रूषारूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
६ धर्मरागरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
७ वैयावृत्त्यरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
८ अर्हद्विनयरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ।
९ सिद्धविनयरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः
१० चैत्यविनयरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
११ श्रुतविनयरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
१२ धर्मविनयरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
१३ साधुवर्गविनयरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ।
१४ आचार्यविनयरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
१५ उपाध्यायविनयरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
१६ प्रवचनविनयरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥

१७ दर्शनविनयरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
१८ संसारे जिनमारामिति चिंतनरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
१९ संसार जिनमतिसारमिति चिंतनरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
२० संसार जिनमतिस्थितस्याद्वादिसारमिति चिंतन रूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
२१ शंकादूषणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नम ॥
२२ कांक्षादूषणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नम ॥
२३ विचिकित्सादूषणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नम ॥
२४ दृष्टिप्रशंसादूषणरहिताय श्रीसद्दर्शनाय नम ॥
२५ मिथ्यात्विपरिचयदूषणरहितायश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
२६ प्रवचनप्रभावकरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
२७ धर्मकथाप्रभावकरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
२८ वादिप्रभावकरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
२९ नैमित्तिकप्रभावकरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
३० तपस्विप्रभावकरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
३१ प्रज्ञप्त्यादिविद्याभृत्प्रभावक रूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
३२ चूर्णांजनादिसिद्धप्रभावकरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
३३ कविप्रभावकरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
३४ जिनशासने कौशल्यभूषणरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
३५ प्रभावनाभूषणरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
३६ तीर्थसेवाभूषणरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
३७ स्थैर्यभूषणरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
३८ जिनशासने भक्तिभूषणरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
३९ उपशमगुणरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
४० संवेगगुणरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
४१ निर्वेदगुणरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
४२ अनुकम्पागुणरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥
४३ आस्तिक्यगुणरूपश्रीसद्दर्शनाय नम ॥

४४ परतीर्थकादिवन्दनवर्जनरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः
४५ परतीर्थकादिनमस्कारवर्जनरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
४६ परतीर्थकादिआलापवर्जनरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
४७ परतीर्थकादिसंलापवर्जनरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
४८ परतीर्थकादि-अशनादिदानवर्जनरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
४९ परतीर्थकादिगन्धपुष्पादिप्रेषणवर्जनरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
५० राजाभियोगाकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
५१ गणाभियोगाकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
५२ बलाभियोगाकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
५३ सुराभियोगाकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
५४ कान्तारवृत्त्याकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
५५ गुरुनिग्रहाकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
५६ सम्यक्त्वं चारित्रधर्मस्य मूलमिति चिं० श्रीस० ॥
५७ सम्यक्त्वं धर्मपुरस्य द्वारमिति चिं० श्रीस० ॥
५८ सम्यक्त्वं धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिं० श्रीस० ॥
५९ सम्यक्त्वं धर्मस्याधारमिति चिं० श्रीस० ॥
६० सम्यक्त्वं धर्मस्य भाजनमिति चिं० श्रीस० ॥
६१ सम्यक्त्वं धर्मस्य निधिसन्निभमिति चिं० श्री० ॥
६२ अस्ति जीव इति श्रद्धानस्थानयुक्तश्री सद्दर्शनाय० ॥
६३ स च जीवो नित्य इति श्रद्धानस्थानयुक्तश्री० ॥
६४ स च जीवः कृतकर्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्थानयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
६५ स च जीवः कृतकर्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्थानयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्थानयुक्त० ॥
६७ अस्ति

इति श्रद्धानस्थानयुक्त० ॥

। उभा थईने अप्रत्य ऊससि
काउस्सग्ग करे। एक लोगस्स
। करे

॥ अथ सप्तम दिवस विधि ॥

॥ 'ॐ ह्रीं नमो नाणस्स' आ पदनो २ हजार गुणणों गणे। ज्ञानपद उज्वल वर्ण छ तथी मातनुं आंबिल करे। एकावन भेद ज्ञानपदना चितविने नमस्कार करे ॥

॥ अथ ज्ञानपदना ५१ भेद ॥

१ स्पर्शनेंद्रियव्यंजनावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
२ रसनेंद्रियव्यंजनावग्रहमतिज्ञानाय नम ॥
३ घ्राणेंद्रियव्यंजनावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
४ श्रोत्रेंद्रियव्यंजनावग्रहमतिज्ञानाय नम ॥
५ स्पर्शनेंद्रियअर्थावग्रहमतिज्ञानाय नम ॥
६ रसनेंद्रियअर्थावग्रहमतिज्ञानाय नम ॥
७ घ्राणेंद्रियअर्थावग्रहमतिज्ञानाय नम ॥
८ चक्षुरिंद्रियअर्थावग्रहमतिज्ञानाय नम ॥
९ श्रोत्रेंद्रियअर्थावग्रहमतिज्ञानाय नम ॥
१० मनोऽर्थावग्रहमतिज्ञानाय नम ॥
११ स्पर्शनेंद्रियईहामतिज्ञानाय नम ॥
१२ रसनेंद्रियईहामतिज्ञानाय नम ॥
१३ घ्राणेंद्रियईहामतिज्ञानाय नम ॥
१४ चक्षुरिंद्रियईहामतिज्ञानाय नम ॥
१५ श्रोत्रेंद्रियईहामतिज्ञानाय नम ॥
१६ मन ईहामतिज्ञानाय नम ॥
१७ स्पर्शनेंद्रियअपायमतिज्ञानाय नम ॥
१८ रसनेंद्रियअपायमतिज्ञानाय नम ॥
१९ घ्राणेंद्रियअपायमतिज्ञानाय नम ॥
२० चक्षुरिंद्रियअपायमतिज्ञानाय नम ॥
२१ श्रोत्रेंद्रियअपायमतिज्ञानाय नम ॥
२२ मनोऽपायमतिज्ञानाय नम ॥
२३ स्पर्शनेंद्रियधारणामतिज्ञानाय नम ॥

२४ रसनेंद्रियधारणामतिज्ञानाय नमः ॥
२५ घ्राणेंद्रियधारणामतिज्ञानाय नमः ॥
२६ चक्षुरिंद्रियधारणामतिज्ञानाय नमः ॥
२७ श्रोत्रेंद्रियधारणामतिज्ञानाय नमः ॥
२८ मनोधारणामतिज्ञानाय नमः ॥
२९ अक्षरश्रुतज्ञानाय नमः ॥
३० अनक्षरश्रुतज्ञानाय नमः ॥
३१ सन्निश्रुतज्ञानाय नमः ॥
३२ असन्निश्रुतज्ञानाय नमः ॥
३३ सम्यक्श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३४ मिथ्याश्रुतज्ञानाय नमः ॥
३५ सादिश्रुतज्ञानाय नमः ॥
३६ अनादिश्रुतज्ञानाय नमः ॥
३७ सपर्यवसितश्रुतज्ञानाय नमः ॥
३८ अपर्यवसितश्रुतज्ञानाय नमः
३९ गमिकश्रुतज्ञानाय नमः ॥
४० अगमिकश्रुतज्ञानाय नमः ॥
४१ अंगप्रविष्टश्रुतज्ञानाय नमः ॥
४२ अनंगप्रविष्टश्रुतज्ञानाय नमः ॥
४३ अनुगामिअवधिज्ञानाय नमः ॥
४४ अननुगामिअवधिज्ञानाय नमः ॥
४५ वर्धमानअवधिज्ञानाय नमः ॥
४६ हीयमानअवधिज्ञानाय नमः ॥
४७ प्रतिपातिअवधिज्ञानाय नमः ॥
४८ अप्रतिपातिअवधिज्ञानाय नमः ॥
४९ ऋजुमतिमनःपर्यवज्ञानाय नमः ॥
५० विपुलमतिमनःपर्यवज्ञानाय नमः ॥
५१ लोकालोकप्रकाशकश्रीकेवलज्ञानाय नमः ॥
आ रीते ५१ नमस्कार करे। उभा थईने अनत्थ उ

इत्यादि कहे । ७१ लोगस्सनो काउस्सग्ग करे प्रगट लोगस्स कहे । पछे मन पूर्वोक्त करणी करे । इति सप्तम दिवस विधि ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम दिवस विधि ॥

॥ ' ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्स ' आ पदनी २ हजार गुणणो गणे । चारित्रपदनो उज्ज्वल वर्ण छे, तेथी मातनु आंबिल करे । सितेरे २ भेद चारित्रपदना, चिंतविने नमस्कार करे ॥

॥ अथ चारित्रपदना ७० भेद ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
२ मृषावादविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
३ अदत्तादानविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
४ मैथुनविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
५ परिग्रहविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
६ क्षमाधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
७ आर्जवधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
८ मृदुताधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
९ मुक्तिधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
१० तपोधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
११ संयमधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
१२ सत्यधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
१३ शौचधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
१४ अकिंचनधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
१५ ब्रह्म धर्मरूपचारित्राय नमः ॥
१६ पृथ्वीरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
१७ उदकरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
१८ तेउरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
१९ वाउरक्षासंयमचारित्रायनमः ॥
२० वनस्पतिरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
२१ बेइंद्रियरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥

२२ तेइंद्रियरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
२३ चौरिंद्रियरक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
२४ पंचेंद्रियरक्षासंयमचारित्राय नमः
२५ अजीवरक्षासंयमचारित्राय नमः
२६ प्रेक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
२७ अनुपेक्षासंयमचारित्राय नमः ॥
२८ अतिरिक्तवस्त्रभक्तादिपरठण धागरूपसंयम० ॥
२९ प्रमार्जनरूपसंयमचारित्राय नमः ॥
३० मनःसंयमचारित्राय नमः ॥
३१ वाक्संयमचारित्राय नमः ॥
३२ कायासंयमचारित्राय नमः ॥
३३ आचार्यवैयावृत्त्यरूपसंयमचारित्राय नमः ॥
३४ उपाध्यायवैयावृत्त्यरूपसंयमचारित्राय नमः ॥
३५ तपस्विवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥
३६ लघुशिष्यादिवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥
३७ ग्लानसाधुवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥
३८ साधुवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥
३९ श्रमणोपासकवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥
४० संघवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥
४१ कुलवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥
४२ गणवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥
४३ पशुपंडगादिरहितवसतिवसनब्रह्मगुप्तिचारित्रा० ॥
४४ स्त्रीहास्यादिविकथावर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय० ॥
४५ स्त्रीआसनवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः ॥
४६ स्त्रीअंगोपांगनिरीक्षणवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय० ॥
४७ कुड्यन्तरस्थितस्त्रीहावभावश्रवणवर्जनब्रह्मगुप्ति० ॥
४८ पूर्वस्त्रीसंभोगचिंतनवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः ॥
४९ अतिसरसआहारवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः ॥
५० अतिआहारकरणवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः ॥

५१ अगाधिभूपायजनग्रहगुप्तिचारित्राय नमः ॥
५२ अनशनतपोरूपचारित्राय नमः ॥
५३ ऊनोदरीतपोरूपचारित्राय नमः ॥
५४ वृत्तिसंक्षेपतपोरूपचारित्राय नमः ॥
५५ रसत्यागतपोरूपचारित्राय नमः ॥
५६ कायक्लेशतपोरूपचारित्राय नमः ॥
५७ सलेपनातपोरूपचारित्राय नमः ॥
५८ प्रायश्चित्ततपोरूपचारित्राय नमः ॥
५९ विनयतपोरूपचारित्राय नमः ॥
६० वैयावच्चतपोरूपचारित्राय नमः ॥
६१ स्वाध्यायतपोरूपचारित्राय नमः ॥
६२ ध्यानतपोरूपचारित्राय नमः ॥
६३ उपसर्गतपोरूपचारित्राय नमः ॥
६४ अनंतज्ञानसंयुक्तचारित्राय नमः ॥
६५ अनंतदर्शनसंयुक्तचारित्राय नमः ॥
६६ अनंतचारित्रसंयुक्तचारित्राय नमः ॥
६७ क्रोधनिग्रहकरणचारित्राय नमः ॥
६८ माननिग्रहकरणचारित्राय नमः ॥
६९ मायानिग्रहकरणचारित्राय नमः ॥
७० लोभनिग्रहकरणचारित्राय नमः ॥

॥ आवि रीते ७० नमस्कार करे । उभा रैने अन्नत्थ ऊससिएणं० इत्यादि कहे । ७० लोगस्सनो काउस्सग्ग करे एक लोगस्स प्रगट कहे । पछे पूर्वोक्त करणी सघी करे । इति अष्टम दिवस विधि ॥

॥ अथ नवम दिवस विधि ॥

॥ ' ॐ ह्रीं नमो तवस्स ' आ पदनो २ हजार गुणणो गणे । तपपदनो उज्ज्वल वर्ण छे तेथी भातनु आंबिल करे । पचास भेद तपपदना चिंतवीने नमस्कार करे ॥

॥ अथ तपपदना ५० भेद ॥

१ यावत्कथिततपसे नम ॥
२ इत्वरतपोभेदतपसे नम ॥
३ बाह्यऊनोदरीतपोभेदतपसे नम ॥
४ अभ्यंतरऊनोदरीतपोभेदतपसे नम ॥
५ द्रव्यतपोवृत्तिसंक्षेपतपोभेदतपसे नम ॥
६ क्षेत्रतपोवृत्तिसंक्षेपतपोभेदतपसे नम ॥
७ कालतपोवृत्तिसंक्षेपतपोभेदतपसे नम ॥
८ भावतपोवृत्तिसंक्षेपतपोभेदतपसे नम ॥
९ कायक्लेशतपोभेदतपसे नम ॥
१० रसत्यागतपोभेदतपसे नम ॥
११ इन्द्रियकषाययोगविषयसंलीनतातपसे नम ॥
१२ स्त्रीपशुपंडकादिवर्जितस्थानआसनस्थितसंलीनता०तपसे नम
१३ आलोयणप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
१४ पडिक्कमणप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
१५ मिश्रप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
१६ विवेकप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
१७ काउस्सग्गप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
१८ तप प्रायश्चित्ततपसे नम ॥
१९ छेदप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
२० मूलप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
२१ अनवस्थितप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
२२ पारंचियप्रायश्चित्ततपसे नम ॥
२३ ज्ञानविनयरूपतपसे नम ॥
२४ दर्शनविनयरूपतपसे नम ॥
२५ चारित्रविनयरूपतपसे नम ॥
२६ गुरुआदिकमनोविनयरूपतपसे नम ॥
२७ वचनविनयरूपतपसे नम ॥
२८ कायविनयरूपतपसे नम ॥

२९ उपचारकविनयरूपतपसे नमः ॥
३० आचार्यवेयावच्चतपसे नमः ॥
३१ उपाध्यायवेयावच्चतपसे नमः ॥
३२ साधुवेयावच्चतपसे नमः ॥
३३ तपस्विवेयावच्चतपसे नमः ॥
३४ लघुशिष्यादिवेयावच्चतपसे नमः ॥
३५ ग्लानसाधुवेयावच्चतपसे नमः ॥
३६ श्रमणोपासकवेयावच्चतपसे नमः ॥
३७ सङ्घवेयावच्चतपसे नमः ॥
३८ कुलवेयावच्चतपसे नमः ॥
३९ गणवेयावच्चतपसे नमः ॥
४० वाचनातपसे नमः ॥
४१ पृच्छनातपसे नमः ॥
४२ परावर्तनातपसे नमः ॥
४३ अनुप्रेक्षातपसे नमः ॥
४४ धर्मकथातपसे नमः ॥
४५ आर्त्तध्याननिवृत्ततपसे नमः ॥
४६ रौद्रध्याननिवृत्ततपसे नमः ॥
४७ धर्मध्यानचिंतनतपसे नमः ॥
४८ शुक्लध्यानचिंतनतपसे नमः ॥
४९ बाह्यउपसर्गतपसे नमः ॥
५० अभ्यंतरउपसर्गतपसे नमः ॥

॥ आवी रीते ५० नमस्कार करे। उभा थैने अन्नत्थ ऊससिएणं० इत्यादि कहे। ५० लोगस्सनो काउस्सग्ग करे प्रगट एक लोगस्स कहे। पछे पूर्वोक्त करणी करे ॥ इति नवम दिवस विधि ॥

नवपदओलीनी विधि

प्रथम आसोशुदी ७ सातम थी अथवा चैत्रशुदी ७ थी शरु करे तीथी तुटेली हायतो छठ थी शरु करे, आंबेल नव पुनम सुधी पूर्ण

करे, पेला सयारना उठीने राय पडिक्कमणु तथा 'वपडा विगेरेनी पडिलेहण करे, पछे भूमि शुद्ध करी बाजोठ उपर " नवपद सिद्ध चक्रयन्त्र ' नी स्थापना करे तेना साम पाच नमुत्थुण थी दयवदन करे, पछे सिद्धचक्रना नव चैत्यवदन, कर, जेनीपासे ' नवपद सिद्ध चक्रयन्त्र न होय तेण नव मदिर अथवा एक मदिरमा नव चैत्य वदन करवा, सिद्ध चक्रयन्त्रनी वास क्षेपथी पूजा करवी, पछे स्नान करीने शुद्ध वस्त्र पहेरी तिगडानी उपर मदिरमा आदिश्वर भगवान् नी प्रतिमा स्थापन करवी तेनी पासे 'नवपद सिद्ध चक्रयन्त्र' मुकीने स्नात्र भणावे, तथा नवपदजीनी लघुपूजा भणावे, करे, पछे जे जे पदना जेटला ग्वमासमणा होय तथा तेटलीज फरी (प्रदक्षिणा) फरे तथा तेटलाज साथिया, तेटलाज फ्र, मुके, पछ ज जे पद होय तने आराधवानिमित्त काउसग्ग जटला लोगस्सनो होय तटलो करे, पछे नवकारवाली पद पदनी वीस वीस रोजगणे जे ज पदनी जया वण होय तथा तेवा वर्णनु आंबिल वे द्रव्य थी अर्थात् एक अनाज नी एक वस्तु, तथा पाणी, आयेवस्तुनु आयल नु पचक्खाणकर, पछ मध्याह्नना देववदन करी ने पछ पचक्खाण पारीने पछे आंबेल करे, अने त्यारबाद आवेल करीने चैत्यवदन करे पछ तिविहारनु पच-क्खाणकर, अथवा चौविहारनु पच्चखाण कर, त्यारबाद तीजापहोरे पडिलेहण करे, तथा साजना देव वादा पछ मदिरमा जइ धूप पूजा आरति मगल, दीवो करे पछे उपाश्रय जइन पडिक्कमणु करे, पहोर रात्रि गया पछे सथारा पोरसी भणाववी अने भूमिशयन-संथारा उपर सुवु

तथा नवमा दिवस विशेष नवपदजीनी मोटी पूजा अने मडलनी पूजा विधि उक्त प्रमाणे करे

नवपदनी ओली पूर्ण थये उद्यापन करवु तेनी विधि विस्तारथी श्रीपाल चरित्र माथी जाणवी, अथवा गुरु मुखे जाणवी, अने यथा शक्ति उजमणु करवु

मंदिर जवानीविधि तथा पूजनविधि

प्रथम श्रावके चार घडी रात बाकी रहे त्यारे उठे, प्रथम मनमा उटताज नवकार मंत्रनुं स्मरण करे हुं कोण ? मारी जाती कोण ? मारं कर्त्तव्य शुं ? मारो धर्म शुं ? इत्यादिक धर्म जागरणथी मनने सावचेत करे, पछे मलमूत्रनी बाधा दूर करी अंग पवित्र करी, सामायक प्रतिक्रमण करीने विधि सहित घरदेरासरनी पूजा करे, पछे यथा शक्ति, सारावला आभूषण पहरी, पोताना परिवार तथा ऋधि साथे पूजा योग्य फल फूल नैवेद्य उत्तम द्रव्य हाथमा लइने भव्य जीवोने मोक्षमार्ग बतावता, तथा जैन शासननी प्रभावना करता जिनमंदिर जाय, जिनमंदिरमा प्रवेश करता दशत्रिक साचवे ते दशत्रिक पहिलुं त्रिक त्रण निस्सहि करवानी, तेमा पेहेलीनिस्सिही जिनमंदिरमा पेसता करे पीछे संसार घर संबंधी काइपण कार्यविचारणा न करे ॥ १ ॥ बीजी निस्सिही प्रदक्षिणा त्रण आपे। जिनमंदीरमा तुटेल फुटेल फुटातुटा ठीक करवानी सार समाल राखेली हती ते पण छोडे। अहिया द्रव्यपूजानी करणी छुटी रही ॥ २ ॥ तीसरी निस्सिही कहिने जिनेश्वर भावपूजा करे, पण द्रव्यपूजा न करे। आ प्रथम निस्सिही त्रिक कह्युं ॥

बीजो त्रिक ज्ञानत्रिकनी आराधना करवाने प्रभुना जमणी तरफथी तीन तीन प्रदक्षिणा आपे। त्रीजुं त्रिक मूलनायकजीना जिनमी सन्मुखे पंचांग भेगा करीन त्रणवार नमस्कार करे ॥ ६ ॥ चौथुं त्रिक। प्रभुनी अंग १ अग्र २ भाव ३ त्रिविध प्रकारनी पूजा करे हवे निस्सिही कथा पछे कृत्य अकृत्य तथा पूजाविधिमाक्षित लखे छे। निस्सिही कह्या पाछे मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति करिने युक्त रहे। पांचों इंद्रियाने वशमा राखे। गमनागमनमें उपयोगी रहे। मानरिगेर अन्यनुं सामली चित्तमा व्याकुलता राखे। कोइपण देव कायने छोडीने अन्य कायनी विचारणा न करे। राजकथादि संपूर्ण विकथा छोडे। जन्म अने कर्मना अनुगत वचन न बोले, अर्थात् कोइना मातापितादिकना करेला खोटा कामने प्रगट न

करे। तथा क्रमानुगत वचन आघलाने आघलो गोलोन गोल इत्यादि वचन न थाय। निस्सिही कया पीछे जिनमंदिरमा धर्म सयुक्त, आत्महितकरी, प्रमाणोपेत वचन बोलवु जोइए अर्था मन, वचन, कायार्थी खोटा व्यापारना निषध आपणी आमाथी कर्यो छे तेना भावथी निस्सिही थाय। वल जेणे दुषणनो त्याग न कर्यो होय तेन केवल शब्द उच्चारण मात्र द्रव्य निस्सिही थाय, तर्था पूजा योग्य उत्तम वस्त्र पहेरीने, आठ पडना उज्वल वस्त्रथी मुखकोश बांधे। धुपादिकर्थी अंग आपणु शुद्ध करे। भावथी बीजी निस्सिही करे मूल गभारामा प्रवेश करें। जयणा संयुक्त पूजा करे। पूजा करता शरीरमा खाज न खणे, खेल श्लेष्मा न करे नि केवल भगवानना स्तवनामा चित्त राखे। प्रथम सुगंध युक्त जल पंचामृतथी स्नान करे। सुकुमार सार, कोमल सुगंध युक्त वस्त्रथी भगवाननु अंग लुहे। कपूर, कस्तूरी मिश्रित शुद्ध केशर चंदननु विलेपन करे। शुभ वर्ण, शुभ गंध युक्त जीवादि रहित निर्दोष गुलाब चंपा, चंपली, केवडा आर मोगरादिक पुष्पथी पूजा करे। अष्टांग धूप अगरबत्ती उखेवे। मंगलदीप करे। अखंड उज्वल अक्षतथी प्रभुना सन्मुख अष्ट मंगलिक लखे। दर्पण १ भद्रासन २ वर्धमान शरावसंपुट ३ श्रीवत्स ४ मत्स्ययुग ५ कलश ६ स्वस्तिक ७ नंद्यावर्त ८ आदि अष्ट मंगलनी रचना करे। पंच वर्ण पुष्पोथी अष्ट मंगलीकनी पूजा करे। सुंदर कुंकुम मिश्रित चंदनथी थापा दे। उत्तम नैवेद्य चढावे। सार स्वाद फल चढावे। इत्यादि पूजानी विधि आरती पर्यंत रायपसेणी, ज्ञाताधर्मकथा जीवाभिगमादि सिद्धांतोथी लखी छे ते मुजब करे जर्थी। पछे अंतरंग भक्तिथी प्रभुना सन्मुख नाटक करे। जेवी रीते देवेंद्र दानवेंद्र, नारद वगेरे तथा उदायी राजानी राणी प्रभावतीये जीवंते नाटक कर्यु। अने रावण प्रमुख केटला जीवोए अष्टापदक उपर नाटक करीने तीर्थंकर गोत्र उपार्जन कर्यु तेवी रीते प्रभुना सन्मुख, शंका रहित थैने उत्तम पुरुष नाटक करे॥

॥ इवे जल चंदन पुष्पादिकथी पूजा करे ते अंग पूजा (१

प्रभुना सन्मुख नैवेद्य प्रमुख चढावे ते अग्रपूजा (२)। प्रभुना सन्मुख शक्रस्तवादी गीत गान नाटकादिक करे ते भावपूजा (३)। आ द्रव्य पूजानो विचार गर्भित चोथु त्रिक कह्यु। हवे पांचमा त्रिक। तीन अवस्था विचारवी। पिंडस्थ १ पदस्थ २, रूपातीत ३। आमा पिंडस्थ अवस्थाना त्रण भेद। जन्मावस्था (१) राज्यावस्था (२) श्रमणावस्था (३)। अने केवली अवस्थाने विचारवी ते पदस्थ अवस्था। निरंजनाकार ने सिद्धावस्था। तेने रूपातीत अवस्था कहे छे। हवे छठ्ठु त्रिक तीन दिशा छोडिने प्रभुनी सामने नजर राखे। ऊर्ध्व १ अधो २, तिरछी ३, डावी जमणी तरफ नजर न करवी। हवे सातमु त्रिक। तीन वार भूमि प्रमार्जिने चैत्यवंदन करे। हवे आठमु त्रिक। वर्णादिक तीन सपदाना अक्षर शुद्ध उच्चारण करे वर्ण शुद्धि (१)। अक्षरोना अर्थ उपर आलंबन राखे ते अर्थशुद्धि (२)। आलंबन एक जिनप्रतिमानु राखे ते मन शुद्धि (३)। हवे नवमु त्रिक। त्रण मुद्रा करवी। जोगमुद्रा (१) जिनमुद्रा (२) मुक्ताशुक्तिमुद्रा (३)। आमा जोगमुद्रा कोनेके छे। पद्मकोशाकारे बन्ने हाथनी परस्पर आंगली मलावनी ए जोगमुद्राए चैत्यस्तवन कहे (१)। काउस्सग्गमुद्रा ते जिनमुद्रा (२)। अने ते बे सीपनु जोडु ते आकारे हाथ राखवो ते मुक्ताशुक्तिमुद्रा (३) आ मुद्राथी प्रणिधान जय वीयराय इत्यादि करे। हवे दशमु त्रिक। प्रणिधान तीन। जिनवंदन प्रणिधान (१) मुनिवंदन प्रणिधान (२) प्रार्थना प्रणिधान (३)। आमा जे "जावंती चेइआइ इह सतो तत्थ सताइ" सुधि जिनवंदन प्रणिधान (१) "जावंत केवि साहू" इत्यादि तिविहेण तिदंडविरयाण इहा सुधी मुनिवंदन प्रणिधान (२) जय वीयरायथी लइने आभवमखंडा सुधी प्रार्थना रूप प्रणिधान (३। आवी रीते दश त्रिकनु पहेलु द्वार कह्यु हवे पांच अभिगम साचववानु बीजु द्वार कहे छे ॥ सचित्त द्रव्य कुसुमादिक आपणी पासे होय तेने अलग मुकवा (१) अने राज चिह्न मुगट, छत्र, खड्ग, चामर, पादुका प्रमुख वस्तु छोडवी। आभूषण प्रमुख पहेरेला राखवा (२) मन एकाग्र करवु (३) एक

पट्ट उत्तरासंग करवु (४) जिनबिंब दर्शनमात्र 'नमो भुवणपहुणो' एवो नमस्कार करवो (५) ए पांचमु द्वार कहयुं ॥ हवे त्रीजु द्वार यो दिशिनु । पुरुष जमणी दिशा बेठा भगवतने वादे स्त्रीयो डावी दिशा बेठा भगवतने वादे । हवे चोथु द्वार तीन अभिग्रह । अभी ग्रह देव वादणामा कहयु छे । जघन्य नव हाथ दूर बैठा देव वादे (१) । मध्यम नव हाथथी उपरात येमनि देव वादे (२) । उत्कृष्ट ६० हाथ दूर बेसीने देव वादे (३) हवे पांचमु द्वार चैत्यवंदनतु । ते जघन्य १ मध्यम २ उत्कृष्ट ३ आवण भेद छे । तिहां णमो अरिहं ताण इत्यादिक कहे या एक कहिने गाथानो नमस्कार ए दान स्तव कहि ए जघन्य चैत्यवंदन (१) । जे देववंदन मा स्थापना हवे चैत्यवंदन नमुत्थुणथी लइने अरिहंतचेइयाण इत्यादिक संपूर्ण कहीं एक स्तुति कहे ते मध्यम चैत्यवंदन । तथ कोइ आचार्य कहे पाच दंडक सहित शी ४ गाथा, ते मध्यम चैत्यवंदन कहे, तथा विधि पूर्वक शक्रस्तवादि करी पांच दंडक जयवीयराय सुधी आठ थोयें देव वांदे तेने उत्कृष्ट चैत्यवंदन कहे छे, अने छठु द्वार पचांगप्रणि पात बे पग बे हाथ, मस्तक, आपचाय मलाविन, भूमिनमा लगाडे तथा सातमुं द्वार जघन्य एक गाथा थी लइने एकसो आठ श्लोक थी प्रभुनी स्तुति-स्तव करे ।

संथारा पोरसी

निसिही निसिही निसिही । नमो खमासमणाण गोयमाइण महा मुणीण (आ पाठ तथा नवकार करेमिभंते सामाइअ त्रणवखत कहेवा)

अणु जाणह जिठ्ठिज्जा छिज्जा । अणु जाणह परमगुरु गुरुगुण रयणेहिं मंडिय सरीरा । बहुपडिपुन्ना पोरसी, राइय संथारए ठामि ॥ १ ॥

अणु जाणह संथार बाहुवहाणेण वामपासेण
कुक्कुडि पायपसारेण अतरत पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥
संकोइ अ संडासा उवट्टत अ कायपडि लेहा ।

दव्वाइ उदर ओग ऊसासनिरु भणालोए ॥ ३ ॥
जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ॥ ३ ॥
आहारमुवहिदेहं सव्व तिविहेण वोसिरिअं ॥ ४ ॥
चतारि मगल, अरिहता मगल सिद्धामगल,
साहु मगल, केवलिपन्नतो धम्मो मगल ॥ ५ ॥
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहता लोगुत्तमा,
सिद्धालोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा,
केवलिपन्नतो धम्मो लोगुत्तमा ॥ ६ ॥
चत्तारि सरण पवज्जामि । अरिहते सरण पवज्जामि ।
सिद्धे सरणं पवज्जामि साहु सरण पवज्जामि ।
केवलिपन्नत धम्म सरण पवज्जामि ॥ ७ ॥
पाणाइ वायमलिअ चोरिक्क मेहुण दविणमुच्छ ।
कोह माण माय लोम पिज्जं तहादोस ॥ ८ ॥
कलह अभक्खाण, पेसुन्न रइ अरइ समाउत
परपरिवाय मायामोस मिच्छत्त सल्ल च ॥ ९ ॥
वोसिरिसु इमाइ मुक्खमग्गससग्गविग्घभूआइ ।
दुग्गइ निबधणाइ, अट्ठारस पावठाणाइ ॥ १० ॥
एगोहं नत्थि मे कोइ नाहमन्नस्स कस्सइ ।
एवं अदीणमणसो अप्पाण मणु सासइ ॥ ११ ॥
एगो मे सासओ अप्पा नाणदसणसजुत्तो ।
सेसा मे बाहिरा भावा सव्वे सजोग लक्खणा ॥ १२ ॥
संजोग मूला जीवेण पत्ता दुक्ख परपरा ।
तम्हा सजोग संबध सव्व तिविहेण वोसिरि अं ॥ १३ ॥
अरिहतो मह देवो जावज्जीव सुसाहुणो गुरुणो ।
जिणपन्नत तत्त इ अ सम्मत, मए गहिअ ॥ १४ ॥
खामि अखमावि अ मइ खमिअ सव्वह जीव निकाय ।
सिद्ध साख आलोयणह मुज्झह वइर न भाव ॥ १५ ॥
सव्वे जीवा कम्मवस चउदह राजभमत ।
तेमे सव्व खमाविआ मुज्झवि तेह खमत ॥ १६ ॥

जे अ मणेण परु अ न्ने वाणण आगिमे पाय
न जे वायण घयं मिच्छामिदुक्कडं तस्स ॥ १७ ॥

' आ रोत्ना भदेया आगाया तगवार अर्थात् स्नाम नवकार वहवा पछ आगल गाथा कहेवी

(आयंबिल्नु पच्चक्खाण)

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साड्ढ पोरिसिं, मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ। उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं, दिसा मोहेणं साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, आयंबिलं पच्चक्खाइ। अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं, गिहत्थसंसट्ठेणं, उक्खित्त विवेगेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरा गारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एगासणं पच्चक्खाइ। तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, सागा रिया गारेणं आउंटणपसारेणं गुरु अब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणिया गारेणं महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तियागारेणं पाणस्स लेवेणवा, अलेवेणवा, अच्छेणवा, बहुलेवेणवा, ससित्थेणवा, असित्थेणवा वोसिरइ ॥

(आयंबील् उपवास् दिवसचरिमं तिविहार नुपच्चक्खाण करवु ते आप्रमाणे)

दिवस चरिमं पच्चक्खाइ। तिविहंपि आहारं असणं खाइमं, साइमं अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तिया गारेणं वोसिरइ ॥

(पाणि सुधाम्या पछे पाणहारनु पच्चक्खाण करवु)

पाणहार दिवस चरिमं पच्चक्खाइ। अन्नत्थणाभोगेणं सहसा-गारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

पारणाना दिवसे एकासणु बेसणु करवु तेनुपच्चक्खाण

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं साड्ढपोरिसिं, मुट्ठिसहिअं, पच्चक्खाइ उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं असणं, पाणं खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं महत्तरा गारेणं, सव्वसमाहिवत्तिया गारेणं। विगइओ

पच्चक्खाइ। अन्नत्थणाभोगेण, सहसागारेण, लेवालेवेण गिहत्थ संसट्ठेण उक्खित्तविवेगेण, पडुच्चमक्खिएण, पारिट्ठावणिया गारेण, महत्तरा गारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेण। एगासण पच्चक्खाइ। तिविहंपि आहार, असण, खाइम, साइम, अन्नत्थणाभोगेण, सहसा गारेण, सागारिआ गारेण, आउंटण पसारेण, गुरुअब्भुट्ठाणेण, पारिट्ठावणियागारेण, महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तिया गारेण, पाणस्स लेवेणवा, अलेवेणवा, अच्छेणवा, बहुलेवेणवा, ससित्थेणवा, असित्थेणवा वोसिरइ।

जो तिविहारनु पच्चक्खाण करवु होय तो 'एकासण' माटे काणे तिविहारनु कहेवु।

सिद्धचक्र चैत्यवंदन

१

सिरिसिद्धचक्क नवपय महंतपय सिद्धराय,
भयजिणइ अतुलिद्धिविय पयपक्य नाह तुज्झ नमो ॥ १ ॥
सिरि रिसहेसर सामिय फल्लाण कप्पतरु,
कप्पकद्दपाउण मज्झमउण देव तुज्झ नमो ॥ २ ॥
सिरि नाभिनाम कुलगर कुलकमलुल्लास परमहंस,
समसम तमतम तमा भर, दुरणिक पत्थ तुज्झ नमो ॥ ३ ॥
सिरिमरुदेव सामिणि उदरदरि दरिय केसरि,
किसोर घोर भूयदंड खंडिय पयड माहस्स तुज्झ नमो ॥ ४ ॥
इक्खागुणगमूसणभाण गय कुसण कुरिय मयगल मइन्,
चंदसमवयणविमिय तिहुल नयण तुज्झ नमो ॥ ५ ॥
कल्लाण कारणु समतत्त कणयकलस सरिस सठाण,
कठिय कलकुंतल निरुपल कालेय तुज्झ नमो ॥ ६ ॥
आइसर जोइसर त्थगय मणलक्ख लंकिय सरुजा,
भवकुव पडिय जंतुतारण जिणनाह तुज्झ नमो ॥ ७ ॥
सिरिसिद्धसेल मंडण दुहखंडण रायर राय मयपाय।
सयलमह सिद्धिदाय जिणनायगढोउ तुज्झ नमो ॥ ८ ॥

तुम नमो तुम नमो तुम नमो देव तुम चेव नमो ।
पणय सुर रयण सेहर रइरंजिय पाय तुम नमो ॥ ९ ॥

२

निर्यंत रगारि गण सुयाणे, मम्पाडि हैयाइ सयणगहाण ।
संदेह संदोहरय हरेतो झाए, निच्चपि जिण रहंतो ॥ १ ॥
दुट्ट पम्मायरणपमुक्के, अणंत नाणाइ सिरिय्पउत्ते ।
समगग लताग्ग पयय्पमिड, झायह निच्चपि मकम्मगामिद्ध ॥ २ ॥
न ते सुहं मादि पीया न माया, जइति जीवाहि सूरी मसाया ।
तमाहु ते उय सया भजेह जं मुक्ख सुक्खाइ लहुंलहह ॥ ३ ॥
सुत्तत्य संवेगमयं सुयणं संनीर नीरामय विसुद्धं ।
पीनंति जे ते उव झायराय झायह निच्च कयप्पसाए ॥ ४ ॥
खंतय दंतेय सुगुत्तिगुत्ता, मुत्तय संतो गुण जोगजुत्ता ।
गयप्पमाए गयमोह माए, झाएह निच्चं मुणिराय पाये ॥ ५ ॥
जं दव्य ब्ब कायेसु महरहाणं, तं दंसण सव्व गुणप्पहाणं ।
कुग्गाही वाही उवयंति जेण, जहाविरोण रसायणेणं ॥ ६ ॥
नाणप्पहाण नयचक्कसिद्धं, तत्तावबोहिक्क मयं पसिद्धं ।
घरेह चित्तावसंहं फुरतं, माणिक्कदीवव्य तमो हरंत ॥ ७ ॥
सुसंवर मोहनिरोह सारं, पंचप्पयारं विगयाइयारं ।
मूलोत्तराणेग गुणं पवित्तं पालेह निच्चंपि हु सच्चरित्तं ॥ ८ ॥
बज्झं तहा भितर भेयमेयं कयाय दुब्भेय कुकम्मभेयं ।
दुक्खक्खयत्थं कयपावनासं, तवं तवह आगममं निरासं ॥ ९ ॥
एयाइ जे केवि नवप्पयाइं, आराहयंतिट्ठफलप्पयाइं ।
लहंति ते सुक्खपरंपराणं सिरि सिरीपाल नरेसरुव्वं ॥ १० ॥

स्तवन

१

केशर वरणाहो के काढकसुंबा महारा लाल पदेशी
गोयमनाणी हो, के कहे सुणो प्राणी महाराजलाल । जिनवर वाणी
हो, के हियडे आणी । मा० । आसो मासे हो के गुरुने पास मा० ।

नवपद ध्यास हो, के मन उल्लासे मा० ॥ १ ॥ आंबिल कीजे हो, के जिन पूजीजे मा० जापजपीजे हो, के देववांदीजे मा० । भाव नामावो हो, के सिद्धचक्र ध्यावो मा० जिनगुणगायो हो, के शीघसुखपावो मा० ॥ २ ॥ आ श्रीपाले हो, के मयणा वाले मा० । ध्यान रसाले हो, के धनज टाल, मा० ॥ सिद्धचक्र ध्यायो हो, के रोग गमायो मा० मन भावपसोहो, के नवपद पायो मा० ॥ ३ ॥ आमनी ओली हो, के पद्दी पटोली, मा० सहोय टोली हो, के कुंकुमघोली मा० । थालकवाली हो, के जिनवरखोली मा० ॥ ४ ॥ पूजी प्रणमीहो, के चित्र आनी मा० धैर्ये आमो हो के मनज उल्लासे, मा० नवपद ध्याहो, के शीवसुख पासे मा० । उत्तम सागर हो, के पंडितराया मा० सयककातेहो, के बहुसुखपाया मा० ॥ ५ ॥

७

अहो भवि प्राणीरे सेवो, सिद्ध चक्रध्यान समो नही मेवो अहो० ज कार सिद्ध चक्र ने आराधे, तेहनो जगमांहि जश वाधे । अहो० ॥ १ ॥ पहेले पदे अरिहंत, बीजे सिद्धपुद ध्यानमहंत । त्रीजे पदे रे सूरीश, चोथे उवज्झाय ने पांचमे मुनीश । अहो० ॥ २ ॥ छठे दर्शन कीजे, सातमे ज्ञानथी शिवसुखलीजे । आठमे चारित्र पालो, नवमे तपथी मुक्ति भाल्यो । अहो ॥ ३ ॥ आंबेल ओलि रे कीजे, नोकारवाली वीशगणीजी । त्रणे टंकनारे देवो, पडिलेहण पडिक्कमणुं सेवो ॥ अहो० ॥ ४ ॥ गुरुमुख क्रियारे कीजे, देवगुरु भक्ति चित्तमां धरीजे । एम कहे रामनारे शिश्यो एही उपनिय वगीयो ॥ अहो ॥ ५ ॥

सिद्धचक्र स्तुति

वीर जिनेश्वर अति अलवेसर, गौतमगुणना दरियाजी ।
एक दिन आणा वीरनी लेइने राजगृहीसे संचरियाजी ॥
श्रेणिक राजा वन्दन आव्या, उलटमनमा आणिजी ।
पर्षदा आगेल वार विराजे, हवे सुणो भविप्राणिजी ॥ १ ॥
मानव भव तुमे हवे पाम्या, श्रीसिद्ध चक्र आराधोजी ।

अरिहंत सिद्ध सूरी उवज्झाया, साधुदर्शी गुणखाणीजी ॥
दरसण नाण चारित्र तप कीजे, नवपद ध्यान धरीजे ।
धुर आसोथी करवा आंबिल सुखसंपदा पामीजेजी ॥ २
श्रेणिक राय गौतमने पुछे, स्वामी ए तप केणे कि धोजी ।
नव आंबिल तप विधिशुं करतां, वांछित सुख केणे लिधोजी ॥
मधुरि ध्वनि बोल्या श्री गौतम, सांभलो श्रेणिक राय वयणाजी ।
रोग गयोने संपदा पाम्या श्रीपाल ने मयणाजी ॥ ३ ॥
रुमझुम करती पाये नेउर दीसे देवी रुपालीजी ।
नाम चक्केसरी नेसिद्धाइ, आदिजिनवर रखवालीजी ॥
विघनकोड हर सहुसंघना, जे सेवे एना पायजी ।
भाणविजय कवि सेवक नय कहे, सानिध करजो मायजी ॥ ४ ॥

२

अर्हन्मूल प्रकाण्डो तनुनिकरधरः सूरिशाखाग्रशाखः ।
गुल्म सद्भावचैत्यो दलितातिपरिधि साधवो मञ्जरीचित् ॥
पुष्पाद्यद्दर्शन ख्याभिमतपरिमलश्चारु चारित्ररूप ।
शस्त शस्य तपश्यामलतरुविभव सिद्धचक्र पुनातु ॥ १ ॥
आप्ता सिद्धा मुनीन्द्रा प्रवरमुनिवरा साधवो ज्ञानपात्रं ।
येता रक्ताश्च पीता द्युमणमहरिता कज्जलाभा जिनेशा ॥
चञ्चत्तुल्याभ्रपा छविकनककरजवण पेलवधारा ।
गीर्वाणा गाढयेच्छ मनकमनि तन पावन सद्ददतु ॥ २ ॥
सर्वांना गूढनेत्रा द्विघनवपरिमिता कर्मानिमूलकाना
माचार्याणा रमानिव नवमुनि यो वाचकाना मुनीनाम् ॥
त्रिंश ३१ सतयुक्ता मुनिहृति सप्तिता नेत्रसंख्या चतुर्णां ।
षष्टि रष्टि खसतीगगन शरमिता सद्गुणौघा जयन्ति ॥ ३ ॥
देवेन्द्रा अष्टवर्गो गरुडगणसमहिता गोमुखाद्या परेऽपि ।
चक्रेश्वर्यादि देव्योऽपि च कुशलकरा सिद्धचक्रस्य भक्ता ॥
श्री श्रीपालादिकानामिव सुभमभृता प्राणिना भक्तिभाजा ।
ते स्वर्वृक्ष ददतु प्रशमसुखफल मुक्तिसौभाग्यवीचम् ॥ ४ ॥

आंबिल तपनी सज्झाय

समरी श्रुतदेवी शारदा, सरसवचनवर आपे सदा ॥ आंबिल तपनो महिमा घणो भविजन भावथकी ते सुणो ॥ १ ॥ विगय सघलनी जिहां परिहार, अशनमांहि घणो भेद विचार ॥ विदल सर तिल तूयर विना अलसी फाद्रव कागनी मना ॥ २ ॥ खड्धान पाके दुरुट फर सव, धाणेव आंबिलपरमा ॥ ओसामण परे जो जलभल तो आंबिल थविर रसटल ॥ ३ ॥ बिल्वण सुंठ मरीच न सुधा, मेथी संवल रामड जुआ ॥ भजमादिक मेला रधाय, तो आंबिलमा लेवाय ॥ ४ ॥ जिरु मले त जेवडा थहीं, ते सुज पण जीर नही ॥ गौमूत्र विना छ अणाहार त नवि लेवानो व्यवहार ॥ ५ ॥ सात जाति ते तदुल तणों ते सुजती आंबिलमा भणी ॥ सेके ते धान अपक्की दाल, मांडा खाखरा रवा दाल ॥ ६ ॥ हन्दूर लविंग पीपर पीपली, हरडे संचर पत्तणजली ॥ खादिम स्वादिमजे कहेवाय, ते आंबिलमा नवि लेवाय ॥ ७ ॥ उत्कृष्ट विधि उष्ण जल-नीर, जघन्यविधे मन जीनु नीर ॥ इम निर दूषण आंबिल कर, मुख धोवण दातण नवि करे ॥ ८ ॥ जे निर्दूषण लिए आहार, ओदननो तेहने व्यवहार ॥ आटा लिगट पाणीवतु, तपण-आंबिलमा सुमतु ॥ ९ ॥ भशठ गीतारथ भणमन्दरी, जे जे ज निति याल ते करी ॥ लाभा लाभनि चारे जड, विधि गीतारथ कहिए तेह ॥ १० ॥ आंबिल तप उत्कृष्ट कर्यो, विघन निवारण कारण लह्यो ॥ वाचकनीति विजय सुपसाय, भाखे विनयविनय उवझाय ॥ ११ ॥

इति सज्झाय सम्पूर्ण

समाप्त